

ॐ कर्मभूमि ॐ

वर्ष १९ अंक ३०

मई २०२६



हिंदी को सम्मान दो, अपने दिलों में स्थान दो

पच्चीसवें हिन्दी महोत्सव के अवसर पर

“हिन्दी और हिन्दी यू.एस.ए. विशेषांक”

हिंदी यू.एस.ए. को २५ वर्षों की सफल, समर्पित एवं
प्रेरणादायक हिंदी शिक्षण सेवा पूर्ण करने पर
हार्दिक बधाई



भाषा, संस्कृति और भारतीय मूल्यों को नई पीढ़ी तक पहुँचाने
का जो अद्भुत कार्य किया है, वह अत्यंत सराहनीय है।
हिंदी यू.एस.ए. निरंतर प्रगति करता रहे और नई ऊँचाइयों को प्राप्त करे।

आगामी वर्षों के लिए हमारी शुभकामनाएँ

सप्रेम

माणक, सरोज, आदित्य और आकाश काबरा



“कर्मभूमि” पत्रिका

हमारे कार्यों और प्रयासों का संगम

विद्यार्थियों के लिए संदेश

नमस्ते, हिंदी यू.एस.ए. के विद्यार्थियों!

हिंदी यू.एस.ए. की २५वीं वर्षगाँठ के इस विशेष अवसर पर, क्या आपने कभी इस बात पर विचार किया है कि हमारी वार्षिक पत्रिका का नाम "कर्मभूमि" ही क्यों है?

"कर्मभूमि" का वास्तविक अर्थ

"कर्मभूमि" शब्द दो शक्तिशाली शब्दों से बना है:

"कर्म" (कार्य/काम) और "भूमि" (जगह/स्थान)।

इसका सीधा अर्थ है 'वह पवित्र स्थान जहाँ सार्थक कार्य किया जाता है' या 'कार्यक्षेत्र'। हमारे संदर्भ में, हिंदी यू.एस.ए. की कक्षाएँ, सांस्कृतिक कार्यक्रम, और यहाँ तक कि घर पर हिंदी का अभ्यास - ये सब हमारी कर्मभूमि हैं। ये वे स्थान हैं जहाँ हम सिर्फ अक्षर, भाषा या व्याकरण ज्ञान ही नहीं, बल्कि नैतिक मूल्य, साहस, और परिश्रम जैसे जीवन के पाठ भी सीखते हैं।

पच्चीस वर्षों का गौरवशाली इतिहास

पिछले दो से अधिक दशकों में, हमारी पत्रिका ने रामायण, महाभारत, भारतीय संस्कृति, पर्व और त्योहार, हिन्दू ग्रंथ जैसे कई महत्वपूर्ण विषयों को समर्पित अंक प्रकाशित किए हैं। इन विशेष अंकों पर लेख लिखने से विद्यार्थियों को केवल भाषा कौशल ही नहीं मिला, बल्कि उन्हें इन महत्वपूर्ण विषयों पर शोध (research) करने और हमारी भारतीय संस्कृति तथा विरासत (legacy) से जुड़ने का भी प्रोत्साहन मिला है।

पत्रिका क्यों महत्वपूर्ण है: परीक्षा से परे

"कर्मभूमि" पत्रिका केवल हमारा व्याकरण और वर्तनी को जाँचने का साधन नहीं है; यह इससे कहीं बढ़कर है:

- ♦ **सृजनात्मकता का मंच** (Platform for Creativity): यह हमें रचनात्मक बनने का अवसर देती है। आप अपनी कल्पना की उड़ान भरते हुए कविताएँ, कहानियाँ, या निबंध लिख सकते हैं, जो केवल कक्षाओं तक सीमित नहीं रहते।
- ♦ **आत्म-अभिव्यक्ति** (Self-Expression): यह वह जगह है जहाँ आप खुल कर अपने विचार, अनुभव और राय व्यक्त करते हैं। यह हमें एक लेखक या पत्रकार की तरह सोचने के लिए प्रेरित करता है।
- ♦ **यात्रा का दस्तावेज़** (Documenting the Journey): जब आप लेख लिखते हैं कि आपने एक मुहावरा या एक कठिन व्याकरण का प्रयोग कैसे सीखा, तो यह आपकी पूरी हिंदी यात्रा का एक स्थायी रिकॉर्ड बन जाता है। यह पत्रिका हिन्दी यू.एस.ए. की पिछली पीढ़ी के लिए एक दर्पण और आने वाली पीढ़ी के लिए एक प्रेरणास्रोत बनती है।

आइए, अपनी कर्मभूमि को सफल बनाएँ

इसलिए, अगली बार जब आप इस पत्रिका को देखें, तो याद रखें कि यह केवल कागज़ का एक टुकड़ा नहीं है, बल्कि हमारी हिंदी कर्मभूमि का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है - वह स्थान जहाँ हमारे काम और प्रयास एक साथ आते हैं। हम आपको भी अपनी कलम उठाने के लिए प्रेरित करते हैं। इस पत्रिका के माध्यम से, आप अपनी कड़ी मेहनत को प्रदर्शित करें और भविष्य के छात्रों को बताएँ कि हिंदी सीखना कितना आनंददायक और सार्थक हो सकता है।

www.hindiusa.org


1-877-HINDIUSA

स्थापना: नवंबर २००१ संस्थापक: देवेन्द्र सिंह

हिन्दी यू.एस.ए. के किसी भी सदस्य ने कोई पद नहीं लिया है, किन्तु विभिन्न कार्यभार वहन करने के अनुसार उनका परिचय इस प्रकार है:

निदेशक मंडल के सदस्य

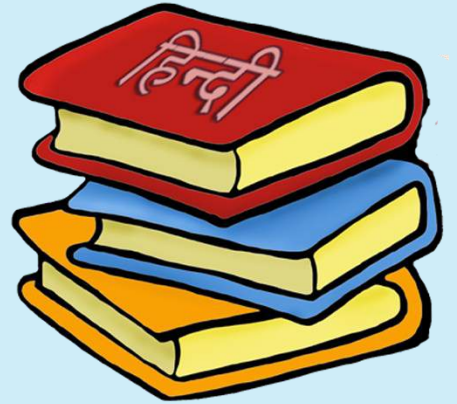
देवेन्द्र सिंह (मुख्य संयोजक)	- 856-625-4335
रचिता सिंह (शिक्षण संयोजिका)	- 609-248-5966
राज मित्तल (धनराशि संयोजक)	- 732-423-4619
माणक काबरा (प्रबंध संयोजक)	- 718-414-5429
सुशील अग्रवाल ('कर्मभूमि' संयोजक)	- 908-361-0220

कार्यकारी संचालक

मधु एवं राजीव राजपाल
रीना सिंह
इंदु एवं राजीव श्रीवास्तव
योगिता एवं संजय मोदी

शिक्षण समिति

क्षमा सोनी	- कनिष्ठा-१ स्तर
रंजनी रामनाथन, हेमांगी शिंदे, बबीता भारद्वाज	- कनिष्ठा-२ स्तर
मोनिका गुप्ता, सपना शर्मा	- प्रथमा-१ स्तर
सरिता नेमानी, सन्जोत ताटके, राजलक्ष्मी हरिदास	- प्रथमा-२ स्तर
इंदु श्रीवास्तव, अदिति महेश्वरी, चेतना मल्लारपु	- मध्यमा-१ स्तर
ऋचा खरे, गरिमा अग्रवाल	- मध्यमा-२ स्तर
ऋतु जग्गी, राजीव महाजन, एंजेला चंद्रा	- मध्यमा-३ स्तर
सुशील अग्रवाल, हंसा सिंह, प्रशांत अवधिया	- उच्चस्तर-१
कविता प्रसाद, मीनाक्षी सिंह	- उच्चस्तर-२


अन्य समितियाँ

अमित खरे	- वेब साइट, वीडियो
योगिता मोदी	- बुक स्टाल प्रबंधन
वेणुगोपाल वर्मा	- शिक्षण प्रबंधन और ऑनलाइन पंजीकरण
कविता प्रसाद	- सजावट



हमको सारी भाषाओं में हिन्दी प्यारी लगती है, नारी के मस्तक पर जैसे कुमकुम बिंदी सजती है।

www.hindiusa.org


1-877-HINDIUSA

स्थापना: नवंबर २००१ संस्थापक: देवेन्द्र सिंह

हिन्दी यू.एस.ए. के किसी भी सदस्य ने कोई पद नहीं लिया है, किन्तु विभिन्न कार्यभार वहन करने के अनुसार उनका परिचय इस प्रकार है:

पाठशाला संचालक/संचालिकाएँ

अटलांटा (GA): रंजन पठानिया (203-993-9631)	पिस्कैटवे (NJ): सौरभ उदेशी (848-205-1535),
ईस्ट ब्रंस्विक (NJ): स्वागता माने (646-415-4072),	स्वाति सिंघानिया (609-819-3305)
मायनो मुर्मू (732-763-2337)	प्लेंसबोरो (NJ): गुलशन मिर्ग (609-451-0126)
एडिसन (NJ): माणक काबरा (718-414-5429),	फ्रेडरिक (MD): अनुराग गुप्ता (678-654-8128)
सुनील दुबे (848-248-6500)	बस्किंग रिज (NJ): धनंजय मराठे (716-361-4681)
एलिकाट सिटी (MD): मुरली तुल्लियान (201-892-7898)	मॉन्टगोमरी (NJ): रीना सिंह (908-499-1555)
एवॉन (CT): बसवराज गरग (732-201-3779)	मोनरो (NJ): सुनीता गुलाटी (732-656-1962)
एशबर्न (VA): अदिति राजावत (321-244-1445)	लॉरेंसविल (NJ): संजय भयाना (732-447-3935)
ऑनलाइन: राजीव श्रीवास्तव (732-429-8612)	विल्टन (CT): अमित अग्रवाल (630-401-0690)
चैरी हिल (NJ): वेणुगोपाल वर्मा (609-598-4038)	वुडब्रिज (NJ): शिव आर्य (908-812-1253)
चैस्टरफील्ड (NJ): मधु राजपाल (732-331-5835)	शेर्लोर्ट (NC): कीर्ति वालिया (214-998-5760)
जर्सी सिटी (NJ): मनोज सिंह (201-233-5835)	साऊथ ब्रंस्विक (NJ): उमेश महाजन (732-274-2733)
टेमेकुला (CA): वेद प्रकाश भार्गव (408-832-7360)	सेंट लुइस (MO): मयंक जैन (636-575-9348)
ट्रम्बुल (CT): रुचि शर्मा (203-570-1261)	स्टैमफर्ड (CT): मनीष महेश्वरी (203-522-8888)
नीधम (MA): विक्रम कौल (203-919-1394),	होमडेल (NJ): रंजना गुप्ता (908-380-8697)
दीप अग्नानी (267-226-0698)	
नॉर्थ बोरो (MA): संजीव झा (781-559-4200)	
नॉर्थ ब्रंस्विक (NJ): योगिता मोदी (609-785-1604)	

हमको सारी भाषाओं में हिन्दी प्यारी लगती है, नारी के मस्तक पर जैसे कुमकुम बिंदी सजती है।

कर्मभूमि

- १० - संदेश एवं शुभकामनाएँ
- १४ - हिन्दी यू.एस.ए. के वर्ष भर के कार्य तथा कार्यक्रम
- १६ - मेरी आत्म-कथा जो एक इतिहास बनी
- २० - पाठशालाओं के विकास का विस्तृत विश्लेषण
- २६ - हिन्दी यू.एस.ए. के नेतृत्व सूत्रधार
- ३० - हिन्दी यू.एस.ए. निदेशक मंडल से एक साक्षात्कार
- ३८ - हिन्दी यू.एस.ए. समितियाँ
- ४१ - हिन्दी यू.एस.ए. में स्वयंसेवक क्यों बनें?
- ४२ - हिन्दी यू.एस.ए. की प्रतियोगिताएँ
- ४७ - भारत यात्रा - एक अद्भुत अनुभव की कहानी
- ४८ - हिन्दी यू.एस.ए. भारत-यात्रा
- ६० - नींव से शिखर तक
- ८४ - युवा स्वयंसेवक अभिनंदन समारोह - २०२६
- ८६ - २० वर्षों का भावनात्मक रिश्ता
- ८८ - जन-जन की भाषा हिंदी
- ८९ - २५ वर्षों से भाषा और संस्कृति की साधना
- ९० - हिन्दी यू.एस.ए. के २५ वर्ष, सफलता के २५ वर्ष
- ९२ - परदेश में अपनी माटी की गूँज
- ९४ - हिन्दी का दीप, जीवन की सीख और हमारे अनुभव
- ९९ - हिन्दी यू.एस.ए. का विस्तार
- १०० - भविष्य का हिन्दी यू.एस.ए.
- १०१ - कविता: उच्चस्तर-२ की झलकियाँ
- १०२ - हिन्दी - स्वर और संस्कृति का संगम
- १०४ - मुहावरों और कहावतों का सार, जीवन का आधार
- १०९ - हिन्दी यू.एस.ए. के साथ मेरी अविस्मरणीय यात्रा

संरक्षक

देवेन्द्र सिंह

रूपरेखा एवं रचना

सुशील अग्रवाल

सम्पादकीय मंडल

रचिता सिंह

माणक काबरा

राज मित्तल

अपनी प्रतिक्रियाएँ एवं सुझाव हमें अवश्य भेजें
हमें विपत्र निम्न पते पर लिखें

karmbhoomi@hindiusa.org

या डाक द्वारा निम्न पते पर भेजें:

HindiUSA

70 Homestead Drive

Pemberton, NJ 08068

मुखपृष्ठ

आद्या वार्षीय

मध्यमा-२, साऊथ ब्रंस्विक पाठशाला

११० - गुरु-संवाद: समर्पण, सेवा और...

११२ - हिन्दी के विविध रंग - उच्चस्तर-१

११८ - हिन्दी भाषा मेरा भविष्य कैसे बदलेगी

१२१ - हिन्दी सीखने के लाभ

१२२ - हिन्दी महोत्सव के अनुभव

१२४ - हमारी हिन्दी यात्रा - मध्यमा-३

१३० - हिन्दी यू.एस.ए. के २५ वर्ष

१३२ - हिन्दी यू.एस.ए. में स्वयंसेवा क्यों ज़रूरी है?

१३४ - दो दशक: हिन्दी, स्नेह और संस्कार

१३६ - सीखने का उल्लास - मध्यमा-१



हिन्दी यू.एस.ए. की पाठशालाओं के संचालक/संचालिकाएँ

हिन्दी यू.एस.ए. उत्तरी अमेरिका की सबसे बड़ी स्वयंसेवी संस्था है जो निरंतर २५ वर्षों से हिन्दी के प्रचार और प्रसार में कार्यरत है। हिन्दी यू.एस.ए. संस्था ने मोती समान स्वयंसेवियों को एक धागे में पिरोकर अति सुंदर माला का रूप दिया है। इस चित्र में आप संस्था के मजबूत स्तम्भ—स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं—को देख सकते हैं। हिन्दी यू.एस.ए. की २९ पाठशालाएँ चलती हैं। किसी भी संस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए नियमावलियों व अनुशासन के धागे में पिरोना अति आवश्यक है। पाठशाला संचालकों पर ही अपनी-अपनी पाठशाला को सुचारु रूप से नियमानुसार चलाने का कार्यभार रहता है। संस्था के सभी नियम व निर्णय सभी कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में मासिक सभा में लिए जाते हैं। पाठशालाओं में बच्चों का पंजीकरण अप्रैल माह से ही आरम्भ हो जाता है। हिन्दी की कक्षाएँ ९ विभिन्न स्तरों में चलती हैं। नया सत्र सितम्बर माह के दूसरे सप्ताह से आरम्भ होकर जून माह के दूसरे सप्ताह तक चलता है।

न्यूजर्सी से बाहर अमेरिका के विभिन्न राज्यों में भी हिन्दी यू.एस.ए. के विद्यालय हैं। हिन्दी यू.एस.ए. के कार्यकर्ता बहुत ही तीव्र गति से अपने उद्देश्य की ओर अग्रसर होते हुए अपना सहयोग दे रहे हैं। हमारी यह २५ वर्षों की गौरवशाली यात्रा केवल एक संस्था की सफलता नहीं, बल्कि हमारी सामूहिक प्रतिबद्धता और अपनी संस्कृति के प्रति अटूट विश्वास का प्रमाण है। हम केवल शब्द और व्याकरण ही नहीं सिखा रहे, बल्कि आने वाली पीढ़ी के भीतर अपनी जड़ों के प्रति गौरव का संचार कर रहे हैं। यदि आप भी अपनी भाषा और संस्कृति को संजोए रखने में सहभागी बनना चाहते हैं, तो हमसे संपर्क करें और हिन्दी यू.एस.ए. परिवार का हिस्सा बनें। आइए, मिलकर हिंदी के इस दीप को विश्व पटल पर और भी प्रज्वलित करें।

[संपादकीय]

आज से ठीक २५ वर्ष पूर्व, जब उत्तरी अमेरिका की इस धरती पर 'हिन्दी यू.एस.ए.' का बीजारोपण किया गया था, तब हमारे पास केवल एक निस्वार्थ उद्देश्य और अटूट संकल्प था। उद्देश्य था—अपनी आने वाली पीढ़ी को उनकी जड़ों से जोड़ना, और संकल्प था—हिन्दी को केवल एक भाषा नहीं, बल्कि एक पहचान और संस्कार के रूप में स्थापित करना। आज 'कर्मभूमि' के इस ऐतिहासिक रजत जयंती अंक को आपके हाथों में सौंपते हुए हमारा हृदय कृतज्ञता और गर्व के मिश्रित भावों से भर उठा है। वह छोटा सा बीज आज एक विशाल वटवृक्ष बन चुका है, जिसकी २९ शाखाएँ (पाठशालाएँ) पूरे अमेरिका में भारतीय संस्कृति और भाषा की खुशबू फैला रही हैं।

हमारी आत्म-कथा: शून्य से शिखर तक का सफर
संस्था के इस २५ वर्षों के सफर को गहराई से समझने के लिए इस अंक में शामिल 'मेरी आत्म-कथा जो एक इतिहास बनी' लेख अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह लेख 'हिन्दी यू.एस.ए.' की अपनी जुबानी है, जो २००१ के उन शुरुआती दिनों के संघर्षों को याद दिलाती है जब मुट्ठी भर लोग एक बड़े सपने के साथ एकत्र हुए थे। यह कहानी है—किराए के छोटे कमरों से शुरू होकर उत्तरी अमेरिका की सबसे बड़ी स्वयंसेवी संस्था बनने की। इसी के साथ, 'हिन्दी यू.एस.ए. पाठशालाओं के विकास का विस्तृत विश्लेषण' हमें उन तकनीकी और शैक्षणिक बदलावों की जानकारी देता है, जिनके माध्यम से हमने अपनी शिक्षण पद्धतियों को आधुनिक बनाया और हर स्तर के छात्र के लिए हिन्दी को रोचक और सुलभ बनाया।

सामूहिक नेतृत्व और संगठनात्मक शक्ति

किसी भी बड़े संगठन की सफलता के पीछे एक स्पष्ट विजन और मजबूत कार्यप्रणाली होती है। इस अंक में प्रस्तुत 'हिन्दी यू.एस.ए. निदेशक मंडल से एक साक्षात्कार' हमारे पाठकों को उन वैचारिक बुनियादों से परिचित कराएगा, जिन पर यह संस्था खड़ी है। नेतृत्व की यह पारदर्शिता ही हमारा सबसे बड़ा बल है। वहीं, 'हिन्दी यू.एस.ए. समितियाँ' लेख उन समर्पित स्वयंसेवकों के निस्वार्थ योगदान पर प्रकाश डालता है, जो बिना किसी प्रचार के, पर्दे के पीछे रहकर पाठ्यक्रम निर्माण, परीक्षा संचालन और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करते हैं। यह ढाई दशकों का इतिहास वास्तव में इन 'मौन साधकों' की तपस्या का परिणाम है।

भारत-यात्रा २०२५: जड़ों की ओर एक जीवंत कदम

इस वर्ष की पत्रिका का मुख्य विषय— "हिन्दी और हिन्दी यू.एस.ए." —हमारे इसी अटूट रिश्ते को समर्पित है। इस रिश्ते की सबसे सुंदर झलक हमें 'हिन्दी यू.एस.ए. भारत -यात्रा २०२५' में देखने को मिली। १४ विद्यार्थियों और २ स्वयंसेवकों का वह १५ दिवसीय प्रवास केवल एक पर्यटन नहीं, बल्कि 'नवीन भारत' की आधुनिक प्रगति और 'प्राचीन भारत' की आध्यात्मिक गरिमा को अपनी आँखों से जीने का अवसर था। विद्यार्थियों द्वारा लिखे गए १० पन्नों के विस्तृत वृत्तांत में आप अनुभव करेंगे कि कैसे हमारी युवा पीढ़ी अब भारत को केवल एक 'छुट्टी बिताने की जगह' नहीं, बल्कि अपनी बौद्धिक और सांस्कृतिक विरासत के रूप में देख रही है।

अभिव्यक्ति का नया क्षितिज: विद्यार्थियों की लेखनी

हमारी इस यात्रा की असली सार्थकता विद्यार्थियों की मौलिक लेखनी में स्पष्ट झलकती है। एडिसन, साउथ ब्रंसविक और स्टैमफोर्ड जैसी विभिन्न पाठशालाओं के विद्यार्थियों ने अपने 'अद्भुत और प्रेरणादायक' अनुभवों

को जिस संजीदगी से लिखा है, वह हमें चकित करता है। जहाँ एक ओर छात्र कक्षा के बाहर हिन्दी के व्यावहारिक प्रयोग पर अपने मौलिक विचार रख रहे हैं, वहीं दूसरी ओर 'कनिष्ठा से उच्चस्तर' तक के उनके संस्मरण यह दर्शाते हैं कि 'हिन्दी यू.एस.ए.' अब उनके जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुका है। ऑनलाइन पाठशालाओं की सफलता ने यह भी सिद्ध कर दिया है कि हिन्दी सीखने की ललक के आगे भौगोलिक दूरियाँ अब कोई मायने नहीं रखतीं। विद्यार्थियों द्वारा लिखे लेख और कविताएँ इस बात का प्रमाण हैं कि हिन्दी अब हमारे विद्यार्थियों के लिए अभिव्यक्ति का सबसे प्रिय और सहज माध्यम बन रही है।

भविष्य का संकल्प: अगले २५ वर्ष

रजत जयंती का यह पड़ाव हमारे लिए केवल उत्सव मनाने का समय नहीं, बल्कि भविष्य की ओर एक दृढ़ कदम बढ़ाने का भी अवसर है। पिछले २५ वर्षों में हमने

'सेवा और समर्पण' की जो नींव रखी है, उस पर अब हमें एक ऐसी आधुनिक मीनार खड़ी करनी है जहाँ ए.आई. (AI) और डिजिटल लर्निंग जैसी तकनीक के साथ-साथ हमारी प्राचीन गुरु-शिष्य परम्परा का अद्भुत मेल हो। हमारा विजन स्पष्ट है—आने वाले समय में हर विद्यार्थी न केवल शुद्ध हिन्दी बोले, बल्कि वह अपनी संस्कृति का 'ग्लोबल एम्बेसेडर' बनकर विश्व के जिस भी कोने में जाए, अपनी भारतीयता की महक साथ लेकर जाए। अंत में, हम उन सभी शिक्षकों, समर्पित कार्यकर्ताओं, अभिभावकों और विशेषकर उन विद्यार्थियों का आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने इस २५ साल की यात्रा में हमें अपना अटूट सहयोग दिया। 'कर्मभूमि' का यह गौरवशाली अंक आपकी उसी निष्ठा और 'हिन्दी प्रेम' को समर्पित है। हिन्दी बढ़ेगी, तो हम बढ़ेंगे।

धन्यवाद



Learn Hindi

In-Person and Online(Virtual)

Join Hindi Classes in New Jersey and other states

- ✓ Classes taught in 9 levels by experienced teachers for children between 5 and 15 years of age
- ✓ Structured syllabus tailored for each Hindi level Books written by HindiUSA teachers to match learning goals of defined syllabus
- ✓ Reliable organization backed by 18 years of practical experience in teaching
- ✓ Adult Hindi classes are also available in certain schools
- ✓ Required books are included in registration fee.
- ✓ Hindi Poetry Competitions, annual Hindi Mahotsava and many other activities organized throughout the year for the growth of children
- ✓ Mid-term/final written and oral exams are conducted

School sessions run between
September and June

**Classes Held On Fridays between
7:00 PM and 8:30 PM**

* A few school have different timing, please contact the respective School Coordinator for the school timing.

All in-person classes will operate in the regular school buildings. Online (virtual) school is available for the students who reside outside of the in-person school areas.

No geographical limitations for the online school. Virtual school classes will be held on Fridays between 7:30 PM and 8:30 PM: (U.S. Eastern Standard Time)

Register online at www.hindiusa.org

For more information and Registration, Contact Rachita Singh: 609-353-8411 or HINDI USA @1-877-HINDI-USA (1-877-446-3487), www.hindiusa.org

सन् २००१ से हिन्दी तथा भारतीय संस्कृति की सेवा में कार्यरत एक समर्पित संस्था...
पूर्वजों की विरासत हिन्दी भाषा नयी पीढ़ी को सौंपने का एक अभियान



Binaya S. Pradhan

Consul General of India
New York

7 अप्रैल 2026

संदेश

हिंदी यू.एस.ए. की स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण करने के इस विशेष अवसर पर मैं सभी संस्थापकों, शिक्षकों, विद्यार्थियों और स्वयंसेवकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

सन् 2001 में आरम्भ की गई यह यात्रा आज एक विशाल परिवार के रूप में विकसित हो चुकी है, जो अमेरिका में हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति के संवाहक के रूप में कार्य कर रहा है। संस्था भारतीय परंपराओं, संस्कारों और विविधता से परिपूर्ण संस्कृति को नई पीढ़ियों तक पहुँचाने का माध्यम भी बनी है। हिंदी यू.एस.ए. ने जिस समर्पण, निष्ठा, निरंतर प्रयत्न और संगठनात्मक दक्षता के साथ इस प्रयास को आगे बढ़ाया है, वह अत्यंत सराहनीय है।

इस वर्ष आयोजित हिंदी महोत्सव, हिंदी भाषा के प्रति समर्पण, जीवंतता और उत्सवधर्मिता का प्रतीक है। मुझे विश्वास है कि यह आयोजन भारत और अमेरिका के मध्य सांस्कृतिक सेतु को और अधिक सुदृढ़ करेगा एवं उन सभी को प्रेरणा देगा जो अपनी जड़ों से जुड़े रहते हुए विश्व नागरिकता की भावना को साकार कर रहे हैं।

मैं हिंदी यू.एस.ए. परिवार को अपनी रजत जयंती वर्षगाँठ पर हार्दिक बधाई देता हूँ और भविष्य में और अधिक सफलता और विस्तार की कामना करता हूँ।

सादर,


(बिनय श्रीकांत प्रधान)

Consulate General of India

3 East 64th Street, New York, N.Y. 10065 (USA)

Tel: CG Office (212) 774-0622/0621

E-mail: cg.newyork@mea.gov.in; cgoffice.newyork@mea.gov.in

Website: www.india.newyork.gov.in



ॐ३५

पतंजलि योगपीठ (ट्रस्ट) Patanjali Yogpeeth (Trust)

क्रमांक

S.No. :

दिनांक 15.04.2026

Dated :

शुभकामना संदेश

विश्व की सबसे प्राचीन, समृद्ध और सरल भाषा होने के साथ-साथ हिन्दी हमारी 'राष्ट्रभाषा' भी है। हिन्दी से हमें पूरी दुनिया में सम्मान मिला है। यह हमारे सम्मान, स्वाभिमान और गर्व की भाषा है। पूरे विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली तीसरी भाषा हिन्दी ही है। हमारी भाषा हमारे देश की संस्कृति और संस्कारों का दर्पण है। काल के प्रभाव में अंग्रेजी ने भारत में अपने पैर पसार लिए और हम अपने ही देश में अंग्रेजी के गुलाम बनकर रह गए। इससे हिन्दी भाषा को उचित मान-सम्मान नहीं मिल पा रहा है।

हम स्वयं, पतंजलि परिवार के सदस्यगण व हमारे लाखों कार्यकर्ता राष्ट्रभाषा हिन्दी का सम्मान करते हैं तथा हिन्दी को हर क्षेत्र में प्रचारित-प्रसारित करने के लिए पूर्ण प्रतिबद्ध हैं।

यह सुनकर अत्यंत हर्ष अनुभव हुआ कि हिंदी यू.एस.ए., न्यू जर्सी इस वर्ष अपनी स्थापना की रजत जयंती मनाने के अवसर पर हिंदी भाषा, साहित्य और भारतीय संस्कृति के विविध आयामों के उत्सव के रूप में एक विशेष कार्यक्रम 'हिंदी महोत्सव' आयोजित कर रहा है। हिंदी यू.एस.ए. अमेरिका द्वारा हिन्दी के प्रचार-प्रसार का कार्य अत्यंत प्रशंसनीय है। संस्थान द्वारा पूर्व में आयोजित 'हिंदी महोत्सव' में सम्मिलित होने का मुझे एक बार अवसर मिला था, जिसकी स्मृतियाँ मेरे हृदय में आज भी जीवन्त हैं।

आशा है हिंदी यू.एस.ए. अमेरिका सहित पूरे विश्व में हिन्दी को प्रचारित करने का कार्य निरंतर करता रहेगा जिसका लाभ विद्यार्थियों, शिक्षकगणों, शोधार्थियों और समस्त हिंदी-प्रेमी समुदाय को मिलता रहेगा।

शुभं भवतु,

(स्वामी रामदेव)

अध्यक्ष



वात्सल्य ग्राम

दीदी माँ
साध्वी ऋतम्भरा जी
अधिष्ठात्री

पी.एस.पी./071/2026-27

दिनांक: 20/04/2026

प्रति,
श्री देवेन्द्र सिंह जी
अध्यक्ष- “हिन्दी यू.एस.ए.”

सर्वप्रथम “हिन्दी यू.एस.ए.” की स्थापना के रजत जयंती वर्ष पर आप सभी हिन्दी प्रेमी विद्वजनों को अनन्त शुभकामनाएँ। भारत से इतनी दूर रहकर भी हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में आपके योगदान के ये पच्चीस वर्ष अभिनन्दनीय हैं। अपनी आर्थिक समृद्धि के साथ-साथ आप लोगों ने अपनी भाषा हिन्दी को समृद्ध रखने के जो प्रयत्न अपनी संस्था के माध्यम से किये, वो अनुकरणीय हैं। मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता और संतोष है कि आप “हिन्दी यू.एस.ए.” के माध्यम से सम्पूर्ण अमेरिका में पाँच हजार विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। हिन्दी भाषा और साहित्य की इससे बड़ी सेवा कोई और हो नहीं सकती।

“हिन्दी यू.एस.ए.” रजत जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में आगामी 16 एवं 17 मई 2026 को आपकी संस्था द्वारा न्यूजर्सी के साउथ रिवर हाई स्कूल में आयोजित “हिन्दी महोत्सव” अपने उद्देश्यों में सफल सिद्ध हो सके, इसके लिए मैं आप सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ प्रदान करती हूँ।

(दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा)
परमशक्ति पीठ

२, युन्दायन - 281003, उ. प्र. मोबाइल नंबर : 9999971714, 9999971716

मुख्य कार्यालय- लव-102-103, अखलेन आवास, 66 इन्द्रप्रस्थ विस्तार, दिल्ली. 110092

दूरभाष : 011- 22238751 | E-mail : info@vatsalyagram.org | Web : vatsalyagram.org

Dr. Rajkumar Acharya
Vice-Chancellor

डॉ. राजकुमार आचार्य
कुलगुरु



JIWAJI UNIVERSITY, GWALIOR (M.P.)
जीवाजी विश्वविद्यालय, गुवालीय (म.प्र.)

Phone : (O) 0091-751-2442701, 2341348

E-mail : vcjiwaji@gmail.com

Website : www.jiwaji.edu

शुभकामना-संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि अमेरिका-न्यूजर्सी में Non-Profit accredited by WASC-USA संस्था विगत 25 वर्षों से अमेरिका में पले-बढ़े भारतीय मूल के बच्चों को भारतीय संस्कृति और हिन्दी भाषा से जोड़े रखने की एक मजबूत कड़ी के रूप में कार्यरत है। यह हम समस्त भारतवासियों के लिये गौरव की बात है।

इस संस्था द्वारा अपने स्थापना के रजत जयंती वर्ष के अवसर पर वार्षिक पत्रिका “कर्मभूमि” का प्रकाशन होने जा रहा रहा है। यह पत्रिका निश्चित ही अमेरिका में बसे भारतीयों, उनके बच्चों और सभी स्वयंसेवकों के लिये प्रेरणादायी होगी तथा इसमें प्रकाशित आलेखों से सभी लाभान्वित होंगे, ऐसी आशा है।

मैं इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

(डॉ. राजकुमार आचार्य)
कुलगुरु

हिन्दी यू.एस.ए. के वर्ष भर के कार्य तथा कार्यक्रम

सत्र २०२५-२६

हिन्दी यू.एस.ए. एक ऐसी स्वयंसेवी संस्था है जो पूरे वर्ष सक्रिय रहती है। इसके हिन्दी शिक्षण का सत्र सितंबर माह से जून माह तक चलता है। इन दस महीनों में संस्था की सभी पाठशालाओं में हिन्दी कक्षाएँ तो प्रति शुक्रवार अनवरत चलती ही हैं, साथ ही नीचे दिए गए कार्य और कार्यक्रम भी वर्ष भर चलते रहते हैं। हिन्दी यू.एस.ए. जिस नियमितता तथा गंभीरता से कार्य करती है उसे देखते हुए भारत के एक उच्च पद पर आसीन हिन्दी विभाग के अधिकारी ने कहा था कि “यह संस्था नहीं संस्थान है और इस पर शोध होना चाहिए”। तो आइए जानते हैं हिन्दी यू.एस.ए. के वर्ष भर के कार्य।

१. पंजीकरण – पिछले १२ वर्षों से संस्था ऑन लाइन रजिस्ट्रेशन (www.hindiusa.org) कर रही है जिससे अभिभावकों और संचालकों का कार्य सुलभ हो गया है।

२. पुस्तक मुद्रण तथा वितरण – हिन्दी यू.एस.ए. ने अपनी स्वयं की पुस्तकें तथा पाठ्यक्रम ९ स्तरों में तैयार किया है जो विदेशों में जन्मे तथा पले-बढ़े विद्यार्थियों को ध्यान में रख कर बनाया गया है। प्रत्येक स्तर में ४-४ पुस्तकें तथा फ्लैश कार्ड का एक सेट सम्मिलित है। छोटे स्तरों में हिन्दी के मोबाइल ऐप का भी उपयोग किया जाता है। इन पुस्तकों के लिए ३ भंडार गृह हैं। ४००० विद्यार्थियों में इन पुस्तकों का सही वितरण पाठशाला संचालकों के लिए एक बड़ी चुनौती होता है।

३. प्रचार एवं प्रसार – ग्रीष्मकालीन अवकाश तथा पंजीकरण के समय संस्था दूरदर्शन, रेडियो तथा पुस्तक-स्टॉल के माध्यम से हिन्दी तथा हिन्दी कक्षाओं का प्रचार करती है।

४. त्योहार का परिचय – प्रवासी विद्यार्थियों को भारतीय त्योहार तथा संस्कृति का परिचय देने के लिए संस्था प्रतिवर्ष न्यू जर्सी में आयोजित दशहरे के

आयोजन में सक्रिय रूप से भाग लेती है तथा दीपावली के समय प्रत्येक पाठशाला में दीपावली उत्सव का आयोजन धूम-धाम से किया जाता है। होली, मकर संक्रांति, लोहड़ी, बैसाखी, मातृ-पितृ पूजन दिवस, गणतंत्र दिवस आदि त्योहार जो सत्र के दौरान आते हैं उन्हें कक्षाओं में मनाया जाता है।

५. अर्धवार्षिक परीक्षा – दिसंबर माह में छुट्टियों के पहले लिखित तथा मौखिक अर्धवार्षिक परीक्षा का आयोजन किया जाता है जिसके लिए प्रतिवर्ष नए परीक्षा-पत्र बनाए जाते हैं।

६. शिक्षक अभिनंदन समारोह – हिन्दी यू.एस.ए. प्रतिवर्ष दिसंबर माह के प्रथम सप्ताह में अपने सभी ४५० स्वयंसेवकों का अभिनंदन तथा धन्यवाद करने के लिए प्रीतिभोज तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करता है। इस समारोह में सभी स्वयंसेवकों के जीवनसाथी भी आमंत्रित किए जाते हैं तथा कुछ चुने स्वयंसेवकों को प्रतिवर्ष उनकी विशेष सेवाओं के लिए पुरस्कृत किया जाता है तथा बाकी सभी स्वयंसेवकों को भी हिन्दी यू.एस.ए. उपहार प्रदान करता है।

७. विद्यार्थियों की भारत यात्रा – छात्रों को प्रोत्साहित करने और उनमें देशभक्ति की भावना जागृत करने तथा भारत से सम्बंध बने रहने के लिए हिंदी यू.एस.ए. उन्हें भारत यात्रा पर भी भेजता है, जिससे वे अपने संस्कारों की जन्मभूमि से जुड़ें रहें और भाषा एवं संस्कृति की ऊर्जा की उन्हें कभी कमी महसूस न हो। यह यात्रा हर २-३ वर्ष में एक बार होती है। इस वर्ष की भारत यात्रा का विवरण पेज ३६ से आगे देखें।

८. पाठशाला स्तर पर कविता पाठ का आयोजन – प्रत्येक हिन्दी पाठशाला जनवरी माह में अपनी-अपनी पाठशाला में कविता-पाठ का आयोजन करती है जिसमें

उस पाठशाला के सभी विद्यार्थियों को भाग लेने का अवसर मिलता है।

९. कर्मभूमि की तैयारी – जनवरी और फरवरी माह में सभी स्तरों के शिक्षक कर्मभूमि में भेजने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रोजेक्ट विद्यार्थियों को देते हैं, जिनके माध्यम से विद्यार्थी हिन्दी के साथ-साथ भारतीय संस्कृति तथा इतिहास का ज्ञान भी प्राप्त करते हैं।

१०. अन्तर्शालेय कविता पाठ – इस प्रतियोगिता का आयोजन प्रति वर्ष फरवरी माह के अंत में किया जाता है। इस कविता पाठ में हिन्दी यू.एस.ए. की पाठशालाओं के विजेता विद्यार्थी स्तरानुसार प्रतियोगिता में भाग लेते हैं। यह प्रतियोगिता २ दिन चलती है तथा इसमें लगभग ४५० विद्यार्थी ९ स्तरों में भाग लेते हैं। बड़े स्तरों से १०-१० सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थियों को चुन कर महोत्सव में होने वाले अंतिम चरण की प्रतियोगिता के लिए भेजा जाता है।

११. युवा कार्यकर्ताओं का अभिनंदन – इसका विस्तृत विवरण पेज १२ पर देखें।

१२. खेल दिवस – इस वर्ष हमने अपना पहला खेल दिवस आयोजित किया। विद्यार्थियों और अभिभावकों, दोनों के उत्साह से प्रोत्साहित होकर, हम इसे हर वर्ष अप्रैल में आयोजित होने वाली एक वार्षिक परंपरा बनाने के लिए उत्सुक हैं।

१३. महोत्सव तथा परीक्षा की तैयारी – मार्च और अप्रैल माह में सभी पाठशालाओं के विभिन्न स्तरों में महोत्सव की प्रतियोगिताओं की तैयारी तथा परीक्षा के लिए पाठ्यक्रम का दोहराव प्रारम्भ हो जाता है।

१४. मौखिक परीक्षा – मार्च के अंतिम सप्ताह से लेकर अप्रैल के अंतिम सप्ताह तक सभी पाठशालाओं में मौखिक परीक्षा का आयोजन होता है, जिसके माध्यम से विद्यार्थियों की हिन्दी समझने, बोलने तथा पढ़ने की क्षमता को जाना जाता है। यह व्यक्तिगत परीक्षा होती है।

१५. हिन्दी महोत्सव – यह एक ऐसा सांस्कृतिक कार्यक्रम और मेला है जिसमें हिन्दी और हिंदुस्तान को

प्यार करने वाले मिलते हैं तथा विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थी अपने हिन्दी ज्ञान तथा अन्य कलाओं जैसे नृत्य, अभिनय, वेषभूषा, संगीत आदि का प्रदर्शन करते हुए अपने आपको भारत से जोड़ते हैं। महोत्सव में विभिन्न सामूहिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है, जैसे लोक नृत्य प्रतियोगिता, विभिन्न त्योहार पर नृत्य, अभिनय गीत प्रतियोगिता, देशभक्ति गीत प्रतियोगिता, भजन प्रतियोगिता, नाटक प्रतियोगिता, हिन्दी ज्ञान तथा व्याकरण प्रतियोगिता तथा फ़ाइनल कविता पाठ प्रतियोगिता। इसी दिन हिन्दी यू.एस.ए. से स्नातक होने वाले विद्यार्थियों का दीक्षांत समारोह भी होता है। इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए भारत से विशेष अतिथि भी आते रहते हैं।

१६. वार्षिक परीक्षा – जून के प्रथम सप्ताह में लिखित वार्षिक परीक्षा का आयोजन सभी पाठशालाओं में किया जाता है तथा जून के मध्य में सभी विद्यार्थियों के प्रगति-पत्र तथा प्रमाण-पत्र देकर सत्र का अंत किया जाता है।

१७. वार्षिक पिकनिक – जून के अंत में पिकनिक का आयोजन किया जाता है जिसमें सभी शिक्षक शिक्षिकाएँ, पाठशाला संचालक और परिवार सम्मिलित होते हैं। अब तो आप जान ही गए होंगे कि यदि किसी ने हिन्दी यू.एस.ए. को संस्थान कहा तो गलत नहीं कहा। हिन्दी यू.एस.ए. अपने सभी कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त करता है तथा उन्हें कोटिश: धन्यवाद देता है। उनके अथक प्रयास से जो हिन्दी की पवित्र धारा न्यू जर्सी और अन्य राज्यों में बह रही है वह प्रशंसनीय है।

क्या आप भी अपने बच्चों को भारतीय बनाना चाहते हैं? क्या आप भी अपने बच्चों को हिन्दी सिखाना चाहते हैं? क्या आप भी हिन्दी की सेवा कर आत्म संतोष चाहते हैं?

यदि हाँ तो हमारी वेबसाइट www.hindiusa.org पर जाएँ या हमें **1-877-HINDIUSA** पर फोन करें।

मेरी आत्म-कथा जो एक इतिहास बनी

रचिता सिंह

आज महोत्सव का प्रथम दिवस है और मैं आज बहुत ही भावुक और प्रसन्न हूँ क्योंकि आज मैं अपने बच्चों को २५वाँ हिन्दी महोत्सव मनाते देख रही हूँ। आज चारों ओर उत्साह और उमंग हिलोरे ले रहा है। मेरी दृष्टि मंच की सजावट और अपने रजत जयंती की घोषणा करते हुए विशाल बैनर से मानों अविचल टिक गई है, जो मुझे कहीं पीछे बीते हुए वर्षों की ओर खींच रही है। मेरे पटल पर प्रथम महोत्सव से २४वें महोत्सव की अनगिनत स्मृतियाँ कौंध गई हैं। किन्तु कार्यकर्ताओं की क्रियाशीलता और विद्यार्थियों का कोलाहल मानों मुझे बार-बार महोत्सव के कक्ष में लौटने के लिए कह रहा है। अपने कर्मनिष्ठ कार्यकर्ताओं को मैं पिछले २५ वर्षों से दौड़-दौड़ कर काम करते देख रही हूँ। आज मेरे नेत्रों में खुशी और गर्व के आँसू हैं और मेरा हृदय अपने स्वयंसेवकों के लिए ममत्व और ढेर सारे आशीर्वादों से भर गया है। ओह! क्षमा चाहती हूँ मैं अपने २५वें जन्मदिन के उत्सव में इतनी खो गई कि आपको ये बताना ही भूल गई कि **"मैं कौन हूँ?"** लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि आप मुझे पहचान गए होंगे, जी हाँ बिल्कुल सही पहचाना - **मैं आप सबकी प्यारी और सम्मानित संस्था "हिन्दी यू.एस.ए. ही हूँ।"**

मेरी २५ वर्षों की गाथा अनगिनत उतार-चढ़ाव, चुनौतियों, सम्मानों और अपमानों से भरी हुई है और इस पर यदि कई पुस्तकें भी लिखी जाएँ तो कम होंगी। लेकिन आज मैं आपको अति संक्षेप में अपनी कहानी सुनाने का प्रयास कर रही हूँ। मैं आज जिन ऊँचाइयों पर बैठी हूँ सदा से यहाँ नहीं थी। मैंने अपने जीवन में कई

असफल और सफल प्रयोग किए हैं, कई अपमान के घूँटों को पिया है, मैं कई बार चलते-चलते डगमगाई हूँ। मैंने कई घातों और धोखों को भी अपने सीने पर झेला है। पिछले २५ वर्षों में, मैं अनुभवहीन से अनुभवी और आत्मविश्वासी बनी हूँ। मैंने समाज का विश्वास प्राप्त कर अमेरिका और भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में एक सम्मानित संस्था का स्थान प्राप्त किया है। यदि एक वाक्य में कहूँ कि मैं इन २५ वर्षों में **"ज़ीरो से हीरो"** बनी हूँ तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। मेरे स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं की कठिन परिश्रम का परिणाम है कि आज मेरे पास वह सब है जिसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। अपने सेवकों के त्याग से जो आज मैं इतनी समृद्ध हूँ, आइए कुछ मुख्य संपत्ति जो मैंने जोड़ी है आपसे साझा करती हूँ।

मेरी यह यात्रा चंद विद्यार्थियों से आरंभ होकर आज ५,००० विद्यार्थियों तक पहुँच गई है। मेरे रूप का विस्तार तीन स्तरों से प्रारंभ होकर आज ९ स्तरों में स्थिर है। मेरी पुस्तकों का खजाना शून्य से २६ पुस्तकों तक पहुँच गया है। मेरे भंडार में आज सभी स्तरों की शिक्षण-सामग्री तथा शिक्षण ऐप भी उपलब्ध है। मेरे पास सभी विषयों पर हिन्दी भाषा की पुस्तकों का खजाना है जो "पुस्तक स्टॉल" के रूप में दिखाई देता है। हिन्दी भाषा, भारत देश की जानकारी और भारतीय संस्कृति संबंधित खेलों और पुरस्कारों को भी मैंने अपने भंडार में समाया है। धर्म और नीति की शिक्षा मेरे विद्यार्थियों को विनम्रता तो सिखाती ही है साथ ही उनमें सही समय पर सही निर्णय लेने की क्षमता को भी बढ़ाती है। मेरा सदा से यही

प्रयास रहा है कि मैं अपने विद्यार्थियों को हिन्दी सिखाने के साथ उनका सर्वांगीण विकास भी कर पाऊँ। इसके लिए मैं अपने मंच पर बहुत सारी प्रतियोगिताओं का आयोजन करती हूँ जिनमें कविता-पाठ प्रतियोगिता, नाटक प्रतियोगिता, शब्द-ज्ञान, व्याकरण जैपडी, लोक नृत्य, धार्मिक नृत्य, त्यौहारों पर आधारित नृत्य, पाठ्यक्रम पर आधारित प्रतियोगिताएँ प्रमुख हैं। जहाँ एक ओर ये सभी स्पर्धाएँ छात्रों के हिन्दी बोलने का विकास करती हैं वहीं मेरी वार्षिक पत्रिका **“कर्मभूमि”** छात्रों के लेखन और सोचने की क्षमता को पंख लगाती है। मेरी पत्रिका की लोकप्रियता समय के साथ इतनी बढ़ी कि मुझे अपने नन्हें विद्यार्थियों के लिए जो अभी लेखन नहीं कर पाते हैं एक अन्य ऑनलाइन पत्रिका **“इंद्रधनुष”** का विमोचन करना पड़ा।

मेरे बारे में इतना सब जानने के बाद आपको ये उत्सुकता तो अवश्य हो रही होगी कि मेरा जन्म कब कहाँ और कैसे हुआ साथ ही मेरा बचपन कैसे बीता? तो सुनिए मेरा जन्म सन २००१ में मेरे बहुत ही कर्मठ कार्यकर्ताओं राज और सुमन मित्तल के घर पर आयोजित एक सभा में हुआ था। देवेन्द्र और रचिता मेरे दो ऐसे बच्चे थे जो हिन्दी को घर-घर में पहुँचाना चाहते थे और मेरा जन्म उन्हीं के सपनों का साकार रूप था। जन्म के समय मेरा नाम **“हिन्दी एन.जे.” (HindiNJ)** रखा गया और “यथा नाम तथा गुण” के अनुसार मेरा कार्यक्षेत्र केवल न्यूजर्सी राज्य में ही सीमित था। मेरा जन्म तो हो गया था लेकिन मेरे जन्म की सूचना सब तक पहुँचाने के लिए कमेटी में “भव्य हिन्दी महोत्सव” करने का प्रस्ताव रखा गया। जिसे आयोजित करने के लिए संस्था के सामने धन, बल और विद्यार्थियों की समस्या थी। संस्था का उस समय कोई नाम नहीं था, न ही संस्था ने अभी तक कोई काम किया था ऐसे में धनराशि और कार्यकर्ता दोनों का मिलना टेढ़ी खीर था। लेकिन मेरे मुट्ठी भर कार्यकर्ता, पाठशालाएँ खोलने नए कार्यकर्ता तैयार करने तथा

धनराशि एकत्र करने में तन-मन-धन से जुट गए। इस यज्ञ में देवेन्द्र सिंह की कविताओं ने आग में घी का काम किया और समाज ने इस प्रथम यज्ञ में दिल खोलकर समय, सहयोग और आहुति दी। आने वाली पीढ़ी के लिए हिन्दी पढ़ाने की योजना ने लोगों को अत्यधिक प्रभावित किया और प्रथम महोत्सव ने अपार सफलता और ख्याति प्राप्त की उस रात कवि सम्मेलन रात्रि २ बजे तक चलता रहा। इस महोत्सव को सफल बनाने में मेरे सेवकों ने जो पापड़ बेले उन्हें मैं कभी भी भूल नहीं सकती। कुछ ऐसे दिव्य अनुभव भी हुए जिनसे लगा ईश्वर स्वयं रूप बदलकर हमारी सहायता करने आए थे जिन्हें याद करके मैं आज भी रोमांचित हो जाती हूँ। मैंने इस सफलता को ईश्वर का आशीर्वाद और संकेत माना और हिन्दी शिक्षण की कठिन राह पर अपने कदम बढ़ा दिए।

प्रथम महोत्सव सफल होने के बाद भी हमारी आगे की डगर सरल नहीं हुई थी आगे आने वाले ४ हिन्दी महोत्सव अत्यधिक कठिन रहे किन्तु अपने हिम्मती कार्यकर्ताओं के बल पर मैं भी अपने उद्देश्य पर अड़ी रही और फिर मेरी राह में एडिसन हिन्दी पाठशाला नाम का एक ऐसा मील का पत्थर आया जिसने मेरे अंदर एक नई ऊर्जा भर दी। इस पाठशाला के खुलते ही मेरा काम और नाम दोनों दूर-दूर गूँजने लगे।

उस समय की पाठशालाओं में एडिसन सबसे बड़ी पाठशाला थी जिसके साथ हमने पाँचवाँ और शानदार महोत्सव मनाया। अभी तक सभी महोत्सवों में भारत की प्रसिद्ध हस्तियाँ मुख्य अतिथि बनकर आ चुकी थीं जैसे महाभारत में कृष्ण की भूमिका निभाने वाले नितिश भारद्वाज जी, तुलसीदास जी का आश्रम संभालने वाले डॉ. रामकमलदास वेदांती जी महाराज, योग गुरु बाबा राम देव जी, आदरणीय किरण बेदी जी और पूजनीया दीदी माँ ऋतम्भरा जी। इन सबके आशीर्वाद और एडिसन स्कूल के साथ ने मेरी ख्याति को न्यूजर्सी के बाहर पहुँचा दिया और बहुत सारे लोगों ने दूसरे राज्यों में पाठशाला

खोलने की इच्छा प्रकट की। समय की माँग को देखते हुए अब मेरा पुनः नामकरण हुआ और मैं हिन्दी एन.जे. से हिन्दी यू.एस.ए. (**HindiUSA**) बन गई। इस नाम को पाकर मैं खुशी से नाचने लगी। अब मैं पूरे अमेरिका की उड़ान भर सकती थी। छठवें वर्ष से प्रति वर्ष २ से ३ पाठशालाएँ खुलने का क्रम चलता रहा जो आज भी जारी है। आज मेरी २९ पाठशालाएँ हैं जो न्यूजर्सी के अतिरिक्त कनेक्टिकट, मेरीलैंड, वर्जीनिया, मैसाचुसेट्स, नॉर्थ कैरोलिना, अटलांटा, सेंट लुइस और कैलिफ़ोर्निया राज्यों में फैली हुई हैं। मेरी ये सभी बेटियाँ हिन्दी और भारतीय संस्कृति के प्रचार में लगी हुई हैं। इनके अतिरिक्त मेरी कुछ गोद ली बेटियाँ भी हैं जिन्हें लोग मेरी संलग्न पाठशालाओं के नाम से जानते हैं। ये पाठशालाएँ मंदिरों, तथा अन्य सांस्कृतिक या धार्मिक संस्थाओं द्वारा चलाई जा रही हैं ये मेरी पुस्तकों, प्रशिक्षण और परीक्षा का उपयोग कर अपने कार्य को सरल बना रही हैं। मेरी सभी पाठशालाओं के नाम आप मेरी वेबसाइट www.hindiusa.org पर जाकर देख सकते हैं। इन २९ वर्षों में, मैं बहुत स्वावलंबी बनी हूँ मैंने हिन्दी शिक्षण और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अतिरिक्त अनेक कार्यक्रमों को अपने से जोड़ा है। जिसमें कुछ चुने हुए विद्यार्थियों को १५ दिन के **"भारत भ्रमण"** पर ले जाना और उन्हें भारत और भारतीय संस्कृति, प्रसिद्ध स्थानों, ऐतिहासिक स्थलों, धार्मिक स्थलों, प्रसिद्ध नेताओं तथा ज्ञानी पुरुषों और महिलाओं से मिलवाना और दर्शन करवाकर उनके ज्ञान और भारत के प्रति उनके प्रेम को बढ़ाने का मैंने एक सफल प्रयास किया है। इस प्रयास में मेरे विद्यार्थियों ने भी मेरा गौरव बहुत बढ़ाया है। अपने विद्यार्थियों में सेवा और दान देने की प्रवृत्ति को बढ़ाने के लिए प्रति वर्ष ज़रूरतमंदों को भोजन, कपड़े, जूते-चप्पल तथा कोट आदि देकर संस्था ने त्योहारों का सही अर्थ सिखाने का प्रयास किया है। मैंने समय के साथ ४५० शिक्षक तो तैयार किए ही हैं लगभग २०० युवा स्वयंसेवक

भी तैयार किए हैं जो शिक्षकों की सहायता तो करते ही हैं साथ ही संस्था के अन्य कार्यों में भी सहायक होते हैं। समय की माँग को देखते हुए मैंने ऑनलाइन पाठशाला की स्थापना भी की। जिसकी गिनती मेरी बड़ी पाठशालाओं में होती है इसमें लगभग ३००+ विद्यार्थी पूरे अमेरिका से पढ़ने आते हैं। मेरी सभी प्रतियोगिताओं में से "कविता पाठ प्रतियोगिता" मेरी संस्था का एक हस्ताक्षरित कार्यक्रम बन गया है। अभिभावकों और विद्यार्थियों में इसकी लोकप्रियता असीम है। मेरे विद्यार्थियों ने अपने शुद्ध उच्चारण और पठन शैली से न केवल अमेरिका और भारत में अपना झंडा गाड़ा है बल्कि पूरे विश्व में मुझे प्रसिद्धि दिलाई है। मेरे स्वयंसेवक भी कुछ कम नहीं उनका जीवन मेरी सेवा में अनवरत समर्पित रहता है। वे बिना किसी पद और पुरस्कार की लालसा के मुझे आगे बढ़ाने और विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति और हिन्दी भाषा सिखाने के नए-नए प्रयोग करते रहते हैं। वे पूरे वर्ष भर शिक्षक-प्रशिक्षण, दिवाली मेला, पुस्तक स्टॉल, पुस्तकों का वितरण, कविता पाठ प्रतियोगिता, अर्धवार्षिक परीक्षा, हिन्दी महोत्सव, दीक्षांत समारोह, वार्षिक परीक्षा और वर्ष के अंत में पिकनिक का आयोजन करने में व्यस्त रहते हैं। मेरे २९वें जन्मदिवस पर मेरे सेवकों ने मुझे एक बहुत ही महत्वपूर्ण और अनुपम उपहार प्रदान किया है जिसने मेरा कद बहुत ऊँचा कर दिया है। वह उपहार यह है कि अब मैं साधारण संस्था से एक "प्रमाणिक संस्था" बन कर असाधारण संस्था की श्रेणी में सम्मिलित हो गई हूँ। जिस दिन मुझे और मेरे सेवकों, संस्था के विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों को "प्रमाणिक" होने का प्रमाण-पत्र मिला सब खुशी से झूम गए क्योंकि अब शिक्षकों की मेहनत का मूल्य बढ़ गया था और अब विद्यार्थियों को उनकी पाठशालाओं में "हिन्दी भाषा" के भी "२ क्रेडिट्स" मिलेंगे। इस उपहार ने मेरी और मेरे से जुड़े हर नए और

पुराने सदस्यों की ऊर्जा को सातवें आसमान पर पहुँचा दिया है। इस उपहार के बाद मुझे प्रति वर्ष एक नए उपहार की प्रतीक्षा रहेगी। इस उपहार के साथ-साथ मुझे इस वर्ष २ अन्य बड़े पुरस्कार भी मिले हैं जो मेरी सफलता और दृढ़ता की अनकही कहानी हैं।

प्रथम पुरस्कार है मेरे २ विद्यार्थियों का शिक्षकों के रूप में हिन्दी यू. एस. ए. से जुड़ना जो मेरा एक सपना तो था ही किन्तु मेरे उद्देश्यों में से भी एक था और दूसरा पुरस्कार मेरी पीढ़ियों की कहानी को साकार करने वाला है।

इस वर्ष हमारे सबसे दीर्घ अवधि से जुड़े एक कार्यकर्ता की पोती अर्थात् तीसरी पीढ़ी की विद्यार्थी ने मेरे प्रांगण में अपने नन्हें कदम रख दिए हैं। इस प्रकार ही विभिन्न

पीढ़ियाँ एक शिक्षक बनकर और एक विद्यार्थी बनकर मेरे साथ केवल जुड़ी ही नहीं बल्कि मुझे ये बता रही हैं कि मेरा आने वाला भविष्य बहुत उज्ज्वल है। वैसे जिस संस्था में २५ वर्षों से जुड़े हैं जिस संस्था में ४५० शिक्षक शिक्षिकाएँ, ५० स्वयंसेवक, २०० युवा स्वयंसेवक, २९ पाठशालाएँ, ३० संलग्न पाठशालाएँ और ५००० विद्यार्थी जुड़े हैं वह तो अपने आप में ही सफलता और उज्ज्वल भविष्य की गाथा कह जाते हैं।

मैं अपनी इस अनंत गाथा को यहीं विश्राम देती हूँ किन्तु जाते-जाते मैं उन सभी को कोटिशः धन्यवाद देना चाहूँगी जिनके कारण मैं आज विदेश में अपनी भाषा का ध्वज लहरा रही हूँ।

सफलता का नया शिखर: अब एक 'मान्यता प्राप्त' वैश्विक संस्था

ACCREDITING COMMISSION FOR SCHOOLS WESTERN ASSOCIATION OF SCHOOLS AND COLLEGES

presents to

HINDIUSA

this

CERTIFICATE OF ACCREDITATION SUPPLEMENTARY EDUCATION PROGRAM

this Program is accredited through

JUNE 30, 2029

Linda Norman
Dr. Linda Norman
Commission Chair



Dr. Barry R. Graves
President

हिंदी यू.एस.ए. पाठशालाओं के विकास का विस्तृत विश्लेषण (२००१-२५)

देवेंद्र सिंह

जब मैंने हिंदी यू.एस.ए. संस्था की १५ वर्षीय रिपोर्ट २०१५ में लिखी थी, उसके बाद हिंदी यू.एस.ए. संस्था का विस्तार तीव्र गति से हुआ था। विद्यार्थियों और पाठशालाओं की संख्या में वृद्धि के साथ-साथ नए कार्यकर्ताओं के आगमन से संस्था ने नए आयामों को छुआ और नई परियोजनाओं को फलीभूत किया।

हिंदी यू.एस.ए. की यात्रा वर्ष २००१ में उस समय शुरू हुई जब भारतीय समुदाय के कुछ समर्पित सदस्यों ने लगा कि अमेरिका में पले-बढ़े बच्चों को अपनी मातृभाषा और सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ना अत्यंत आवश्यक है। सिर्फ दो छात्रों और एक स्कूल से शुरू हुई यह पहल किसी संस्था की तरह नहीं, बल्कि एक संकल्प की तरह थी—एक ऐसा संकल्प जो आने वाले वर्षों में हजारों परिवारों की पहचान बन गया।

इन प्रारम्भिक वर्षों में:

- ♦ स्वयंसेवकों ने अपने घरों, सामुदायिक केंद्रों और मंदिरों में कक्षाएँ चलाई
- ♦ बच्चों को खेल-खेल में हिंदी सिखाने के नए तरीके विकसित किए
- ♦ माता-पिता ने भी सक्रिय रूप से सहयोग दिया
- ♦ समुदाय में विश्वास और अपनापन बढ़ा

पिछले पच्चीस वर्षों में हिंदी यू.एस.ए. ने जिस प्रकार एक छोटे से बीज को एक विशाल, फलदार वृक्ष में बदल दिया है, वह भारतीय समुदाय की सांस्कृतिक चेतना, समर्पण और दूर दृष्टि का अद्भुत उदाहरण है। वर्ष २००१ में केवल दो छात्रों और एक स्कूल से शुरू हुई यह यात्रा आज ५००० छात्रों और ५६ स्कूलों तक पहुँच चुकी है। यह

विस्तार केवल संख्या का बढ़ना नहीं है, बल्कि भारतीय मूल के बच्चों में भाषा, संस्कृति और मूल्यों की जड़ों को मजबूत करने का एक संगठित और सफल प्रयास है।

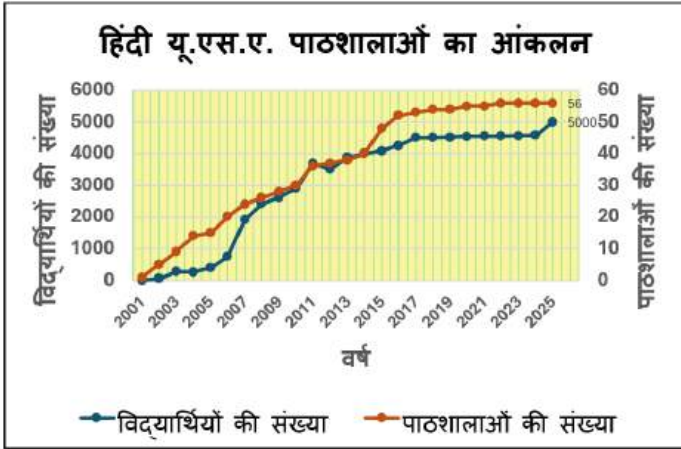
हिंदी यू.एस.ए. ने अपने विकास के हर चरण में गुणवत्ता, अनुशासन और नवाचार को प्राथमिकता दी है। प्रारम्भिक वर्षों में जहाँ स्वयंसेवकों की प्रतिबद्धता और समुदाय का विश्वास इसकी नींव बना, वहीं बाद के वर्षों में पाठ्यक्रम विकास, शिक्षक प्रशिक्षण, वार्षिक परीक्षाएँ, सांस्कृतिक कार्यक्रम और डिजिटल शिक्षण मॉडल ने इसे एक सुव्यवस्थित शैक्षणिक संस्था का रूप दिया।

वर्ष २०२१ के बाद, जब दुनिया डिजिटल शिक्षा की ओर बढ़ी, हिंदी यू.एस.ए. ने भी तकनीक को अपनाते हुए हाइब्रिड मॉडल, ऑनलाइन कक्षाएँ और आधुनिक शिक्षण उपकरणों को शामिल किया। इसका परिणाम यह हुआ कि संस्था ने न केवल अपनी पहुँच बढ़ाई, बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता को भी नए स्तर पर पहुँचाया।

आज हिंदी यू.एस.ए. केवल एक भाषा-शिक्षण संस्था नहीं है, बल्कि भारतीय संस्कृति का एक जीवंत केंद्र है, जहाँ बच्चे भाषा के साथ-साथ पहचान, परंपरा, नैतिकता और भारतीयता की भावना सीखते हैं।

हिंदी यू.एस.ए. द्वारा संचालित पाठशालाएँ भारतीय मूल के बच्चों और परिवारों में हिंदी भाषा, संस्कृति और भारतीय मूल्यों के संरक्षण का महत्वपूर्ण माध्यम बन चुकी हैं। प्रस्तुत आँकड़े वर्ष २००१ से २०२५ तक विद्यार्थियों की संख्या और पाठशालाओं की संख्या में हुए विकास को दर्शाते हैं। यह रिपोर्ट इन आँकड़ों का विश्लेषण करते हुए हिंदी यू.एस.ए. के विस्तार, प्रभाव,

चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं पर प्रकाश डालती है। विद्यार्थियों और पाठशालाओं की संख्या में संबद्ध पाठशालाओं और उनके विद्यार्थियों की संख्या भी सम्मिलित है। हिंदी यू.एस.ए. की ऑनलाइन पाठशाला की स्थापना के बाद संस्था की मान्यता पूरे अमेरिका में फैल चुकी है।



विद्यार्थियों की संख्या (२००१-२०२५)

२००१ में केवल २ विद्यार्थियों से प्रारम्भ
 २००६ तक संख्या बढ़कर १९०५
 २०१० में ३६८२
 २०१५ में ४०८९
 २०२० में ४५५०
 २०२५ में ५०००

पाठशालाओं की संख्या – मुख्य एवं सम्बद्ध

पाठशालाएँ (२००१-२०२५)

२००१ में १ पाठशाला
 २००६ में २० पाठशालाएँ
 २०१० में ३६ पाठशालाएँ
 २०१५ में ४८ पाठशालाएँ
 २०२० में ५५ पाठशालाएँ
 २०२५ में ५६ पाठशालाएँ

इन आँकड़ों से स्पष्ट है कि हिंदी यू.एस.ए. ने दो दशकों में अत्यंत तेजी से विस्तार किया है।

विकास का चरणबद्ध विश्लेषण

प्रारंभिक चरण (२००१-२००६)

- ◆ यह अवधि संगठन की नींव रखने वाली थी।
- ◆ विद्यार्थियों की संख्या २ से बढ़कर १९०५ तक पहुँची — यह असाधारण वृद्धि है।
- ◆ पाठशालाओं की संख्या १ से बढ़कर २० हुई।
- ◆ इस चरण में समुदाय का विश्वास और स्वयंसेवकों की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण रही।

विस्तार चरण (२००७-२०१४)

- ◆ विद्यार्थियों की संख्या २००७ में २४१२ से बढ़कर २०१४ में ४०८९ तक पहुँची।
- ◆ पाठशालाएँ २४ से बढ़कर ४० तक पहुँचीं।
- ◆ यह वह समय था जब हिंदी यू.एस.ए. एक स्थानीय पहल से बढ़कर एक सुव्यवस्थित संगठन के रूप में स्थापित हुआ।
- ◆ विभिन्न राज्यों में केंद्र खुलने लगे और पाठ्यक्रम भी अधिक संरचित हुआ।
- ◆ एक सुव्यवस्थित स्तर आधारित पाठ्यक्रम तैयार किया गया
- ◆ शिक्षक प्रशिक्षण (Teacher Training Workshops) शुरू हुए
- ◆ वार्षिक परीक्षाएँ और प्रमाणपत्र प्रणाली लागू की गई
- ◆ सांस्कृतिक कार्यक्रमों और हिंदी दिवस समारोहों ने बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ाया
- ◆ नए राज्यों में स्कूलों की स्थापना हुई
- ◆ हिंदी यू.एस.ए. अमेरिका में हिंदी शिक्षा का सबसे बड़ा सामुदायिक मंच बन चुका था।

स्थिरता और परिपक्वता चरण (२०१५-२०२०)

- ◆ विद्यार्थियों की संख्या २०१५ में ४०८९ से बढ़कर २०२० में ४५५० तक पहुँची।
- ◆ पाठशालाओं की संख्या ४८ से बढ़कर ५५ तक पहुँची।
- ◆ वृद्धि की गति थोड़ी धीमी हुई, लेकिन संगठनात्मक स्थिरता बढ़ी।

- ◆ इस अवधि में डिजिटल संसाधनों, प्रशिक्षित शिक्षकों और मानकीकृत परीक्षाओं का विकास हुआ।

२०१५ के बाद संस्था ने केवल विस्तार पर नहीं, बल्कि गुणवत्ता सुधार पर ध्यान केंद्रित किया। इस काल में:

- ◆ पाठ्यक्रम को आधुनिक उदाहरणों और गतिविधियों से समृद्ध किया गया
- ◆ बच्चों की भाषा कौशल (Listening, Speaking, Reading, Writing) पर विशेष ध्यान दिया गया
- ◆ शिक्षकों के लिए उन्नत प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए गए
- ◆ परीक्षा प्रणाली को और पारदर्शी और प्रभावी बनाया गया

वर्ष २०२० में महामारी के काल में हिंदी यू.एस.ए. ने तेजी से डिजिटल मॉडल अपनाया। ऑनलाइन कक्षाओं ने यह साबित किया कि:

“हिंदी सीखने की इच्छा किसी भी परिस्थिति में रुक नहीं सकती।”

आधुनिक चरण (२०२१-२०२५)

- ◆ विद्यार्थियों की संख्या ४५५५ से बढ़कर २०२५ में ५००० तक पहुँची।
- ◆ पाठशालाओं की संख्या ५५-५६ के बीच स्थिर रही।
- ◆ यह संकेत देता है कि संगठन अब गुणवत्ता पर अधिक ध्यान दे रहा है, न कि केवल विस्तार पर।
- ◆ ऑनलाइन कक्षाओं और हाइब्रिड मॉडल का उपयोग बढ़ा।
- ◆ सबसे बड़ी बात यह थी कि कक्षाएँ online होने के बाद और online से वापसी करने के बाद भी विद्यार्थियों की संख्या में कमी नहीं आई।

प्रमुख अवलोकन

विद्यार्थियों की संख्या में निरंतर वृद्धि

- ◆ २५ वर्षों में २ से ५००० विद्यार्थियों तक पहुँचना किसी भी सामुदायिक शैक्षणिक पहल के लिए अत्यंत

उल्लेखनीय उपलब्धि है।

- ◆ यह दर्शाता है कि भारतीय समुदाय में हिंदी भाषा के प्रति रुचि लगातार बढ़ रही है।

पाठशालाओं की संख्या में स्थिरता

- ◆ २०२० के बाद पाठशालाओं की संख्या लगभग स्थिर हो गई है (५५-६०)।
- ◆ इसका अर्थ है कि संगठन अब विस्तार की बजाय गुणवत्ता, प्रशिक्षण और संसाधनों पर अधिक ध्यान दे रहा है।

वृद्धि की गति में परिवर्तन

- ◆ २००१-२०१०: अत्यधिक तेज़ वृद्धि
- ◆ २०११-२०२०: मध्यम वृद्धि
- ◆ २०२१-२०२५: स्थिर वृद्धि

यह किसी भी सफल संगठन के प्राकृतिक विकास चक्र जैसा है।

हिंदी यू.एस.ए. की सफलता के कारण

- ◆ स्वयंसेवी मॉडल: समुदाय-आधारित स्वयंसेवकों का मजबूत नेटवर्क
- ◆ सुलभ शुल्क: कम लागत में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा
- ◆ सांस्कृतिक जुड़ाव: त्योहार, प्रतियोगिताएँ, सांस्कृतिक कार्यक्रम
- ◆ मानकीकृत पाठ्यक्रम: स्तर-आधारित हिंदी शिक्षा
- ◆ डिजिटल संसाधन: ऑनलाइन कक्षाएँ, वर्कशीट, वीडियो सामग्री
- ◆ शैक्षणिक ऐप्स का उपयोग करके शिक्षण को इंटरैक्टिव, व्यक्तिगत और सुलभ बनाकर आगे बढ़ाया जा रहा है। Kahoot जैसे ऐप्स के जरिए Quiz और गेम-आधारित सीख से छात्रों की भागीदारी बढ़ती है
- ◆ कर्मभूमि और इंद्रधनुष पत्रिकाओं द्वारा विद्यार्थियों की लेखन एवं रचनात्मक प्रतिभा को निखारा जा रहा है
- ◆ पुस्तक स्टाल द्वारा हिंदी की शैक्षणिक और कथाओं की पुस्तकों का प्रचार किया जा रहा है

चुनौतियाँ

- ◆ प्रशिक्षित शिक्षकों की उपलब्धता
- ◆ बढ़ती संख्या के साथ गुणवत्ता बनाए रखना
- ◆ किशोर विद्यार्थियों को निरंतर जोड़कर रखना
- ◆ तकनीकी संसाधनों का विस्तार
- ◆ विभिन्न राज्यों में प्रशासनिक समन्वय

भविष्य की संभावनाएँ

- ◆ ऑनलाइन विस्तार: पूरे अमेरिका में पहुँच बढ़ सकती है
- ◆ उच्च-स्तरीय पाठ्यक्रम: साहित्य, नाटक, वाद-विवाद आदि
- ◆ शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम
- ◆ अंतरराष्ट्रीय सहयोग
- ◆ सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम
- ◆ WASC संस्था द्वारा मान्यता मिलने से विद्यार्थियों को हिंदी credit का लाभ

२००१ से २०२५ तक हिंदी यू.एस.ए. का सफर एक प्रेरणादायक कहानी है — २ विद्यार्थियों से ५००० विद्यार्थियों तक, १ पाठशाला से ५६ पाठशालाओं तक, यह विकास न केवल संगठन की सफलता दर्शाता है, बल्कि भारतीय समुदाय की अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति गहरी प्रतिबद्धता को भी उजागर करता है।

हिंदी यू.एस.ए. आज अमेरिका में हिंदी शिक्षा का सबसे बड़ा और सबसे प्रभावशाली मंच बन चुका है, और आने वाले वर्षों में इसकी भूमिका और भी महत्वपूर्ण होने वाली है।

WASC संस्था द्वारा मान्यता मिलने से विद्यार्थियों को High School में हिंदी credit मिलने की व्यवस्था की ओर एक ठोस कदम उठाया गया है।

हिंदी यू.एस.ए. की बढ़ती प्रतिष्ठा और प्रभाव को देखते हुए भारत के एक प्रतिष्ठित कॉलेज, Roongta University ने एक औपचारिक सहयोग-प्रस्ताव (Collaboration Proposal) भेजा है। यह प्रस्ताव न

केवल संस्था की उपलब्धियों की सराहना है, बल्कि यह संकेत भी है कि हिंदी यू.एस.ए. अब वैश्विक स्तर पर हिंदी शिक्षा के एक महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में पहचाना जा रहा है।

यह सहयोग दोनों संस्थाओं के लिए नए अवसर, नई संभावनाएँ और एक व्यापक शैक्षणिक भविष्य का मार्ग खोलता है।

सहयोग-प्रस्ताव का उद्देश्य

भारत के कॉलेज का मुख्य उद्देश्य है:

- ◆ हिंदी भाषा को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देना
- ◆ दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक और शैक्षणिक संबंधों को मजबूत करना
- ◆ आधुनिक, शोध-आधारित पाठ्यक्रम विकसित करना

यह प्रस्ताव हिंदी यू.एस.ए. के लिए एक ऐतिहासिक अवसर है, क्योंकि इससे संस्था को शैक्षणिक मान्यता और अंतरराष्ट्रीय विश्वसनीयता दोनों मिलती हैं।

हिंदी यू.एस.ए. ने पिछले २५ वर्षों में जिस प्रकार निरंतर विकास, गुणवत्ता और समुदाय-केंद्रित दृष्टिकोण को अपनाया है, वह आने वाले वर्षों के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करता है। अब संस्था एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है जहाँ उसे अपनी उपलब्धियों को अगले स्तर पर ले जाने के लिए रणनीतिक निर्णय लेने की आवश्यकता है। नीचे प्रस्तुत सुझाव और भविष्य दृष्टि संस्था को अगले दशक में एक वैश्विक हिंदी शिक्षा मॉडल के रूप में स्थापित करने में सहायक होंगी।

सुझाव (Recommendations)

(१) डिजिटल विस्तार को प्राथमिकता देना

ऑनलाइन और हाइब्रिड मॉडल ने यह साबित किया है कि हिंदी यू.एस.ए. की पहुँच भौगोलिक सीमाओं से परे जा सकती है। इसलिए:

- ◆ अधिक राज्यों और देशों में ऑनलाइन कक्षाएँ
- ◆ डिजिटल असाइनमेंट और मूल्यांकन
- ◆ वर्चुअल सांस्कृतिक कार्यक्रम

को और मजबूत किया जाना चाहिए।

(२) शिक्षक प्रशिक्षण को उन्नत बनाना

शिक्षक किसी भी संस्था की रीढ़ होते हैं। इसलिए:

- ◆ नियमित प्रशिक्षण
 - ◆ प्रमाणित शिक्षक कार्यक्रम
 - ◆ भारत के विशेषज्ञों के साथ संयुक्त कार्यशालाएँ
- शिक्षण गुणवत्ता को और ऊँचा उठाएँगी।

(३) पाठ्यक्रम को आधुनिक और शोध-आधारित बनाना

भाषा शिक्षा तभी प्रभावी होती है जब वह समय के साथ विकसित होती रहे। इसलिए:

- ◆ स्तर-आधारित पाठ्यक्रम
- ◆ आधुनिक उदाहरण
- ◆ गतिविधि-आधारित शिक्षण
- ◆ सांस्कृतिक अध्ययन

को और समृद्ध किया जाना चाहिए।

(४) डेटा-आधारित निर्णय-प्रणाली अपनाना

छात्रों की प्रगति, उपस्थिति, प्रदर्शन और प्रतिक्रिया का विश्लेषण करके संस्था:

- ◆ श्रेष्ठ योजना
- ◆ बेहतर संसाधन प्रबंधन
- ◆ और अधिक प्रभावी शिक्षण

सुनिश्चित कर सकती है।

(५) भारत के कॉलेज के साथ सहयोग को औपचारिक रूप देना

यह सहयोग हिंदी यू.एस.ए. की विश्वसनीयता और शैक्षणिक पहचान को नई ऊँचाइयों पर ले जाएगा। इसलिए इसे प्राथमिकता के साथ आगे बढ़ाया जाना चाहिए।

भविष्य-दृष्टि (Future Vision)

हिंदी यू.एस.ए. का भविष्य अत्यंत उज्ज्वल है। आने वाले वर्षों में संस्था निम्नलिखित लक्ष्यों को प्राप्त कर सकती है:

(१) १०००० छात्रों का लक्ष्य (२०३० तक)

डिजिटल मॉडल और गुणवत्ता-आधारित शिक्षण के माध्यम से यह लक्ष्य पूरी तरह संभव है।

(२) वैश्विक विस्तार

हिंदी यू.एस.ए. अमेरिका से आगे बढ़कर:

- ◆ कनाडा
- ◆ यूरोप
- ◆ ऑस्ट्रेलिया
- ◆ मध्य पूर्व

में भी अपनी उपस्थिति दर्ज करा सकता है।

(३) अंतरराष्ट्रीय प्रमाणपत्र कार्यक्रम

भारत के कॉलेज के सहयोग से छात्रों को विश्व स्तरीय प्रमाणपत्र मिलेंगे, जो उनके भविष्य के लिए अत्यंत लाभकारी होंगे।

(४) सांस्कृतिक नेतृत्व का केंद्र बनना

हिंदी यू.एस.ए. केवल भाषा नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, परंपरा और मूल्यों का एक वैश्विक केंद्र बन सकता है।

(५) आधुनिक तकनीक का उपयोग

AI-आधारित शिक्षण, डिजिटल मूल्यांकन, और इंटरैक्टिव लर्निंग टूल्स संस्था को भविष्य-उन्मुख बनाएँगे।

निष्कर्ष

हिंदी यू.एस.ए. की २५-वर्षीय यात्रा केवल एक संस्था की कहानी नहीं, बल्कि एक समुदाय की प्रतिबद्धता, एक संस्कृति की शक्ति और एक भाषा की जीवंतता का प्रमाण है। आने वाले वर्षों में यदि संस्था इन सुझावों और भविष्य दृष्टि को अपनाती है, तो यह न केवल अमेरिका में, बल्कि विश्व-स्तर पर हिंदी शिक्षा का सबसे प्रभावशाली मॉडल बन सकती है।



CLASS ROOMS & CONCERT HALL AVAILABLE ON RENT

ARCHANA ARTS STUDIO IS A BEAUTIFULLY MAINTAINED CLOSE TO 5000 SQ. FT OF FACILITY
WITH VERY POSITIVE VIBRATIONS.
"TRULY A TEMPLE OF ARTS"

IDEAL FOR
MUSIC, YOGA, DANCE, ZUMBA CLASSES
AS WELL AS CHESS CLUB, STUDY CLASSES
(TABLES AND CHAIRS AVAILABLE ERASER BOARD IS ALSO THERE.)

CONCERT HALL *Ideal for small events.*



Kitchen
connected to Concert Hall



FACILITIES:

Accommodates upto 100+.
With Attached Rest Room, Kitchen with Refrigerator and Oven.
Also attached with Makeup room facility.

CAN BE USED FOR

1. Arangetram Stage practices with Musicians.
2. Photoshoots for Arangetram or for any other purposes.
3. Big groups choreography works.
4. Theatre - drama practices.
5. Screening of films. Drop Screen is already available.
6. For shooting of interviews, news ETC.

Foyer - Waiting area



Hallway



● FOR QUERY CONTACT ●

CALL OR TEXT *(preferred)*

609 309 3288

(Send text message about your requirement and your name)



हमारी शक्ति, हमारी पहचान: हिन्दी यू.एस.ए. के नेतृत्व सूत्रधार

हिन्दी यू.एस.ए. की २५ वर्षों की यह यात्रा केवल एक संस्था की नहीं, बल्कि उन कर्मठ कार्यकर्ताओं की कहानी है जिन्होंने अपनी आत्मा, हृदय और मस्तिष्क से इसे सींचा है। यह लेख उन प्रमुख अंगों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का एक छोटा सा प्रयास है जो हमारी संस्था की धुरी हैं। इनके अटूट विश्वास और निरंतर प्रयासों ने ही आज हजारों परिवारों को अपनी भाषा और संस्कृति से जोड़ रखा है।

हिन्दी यू.एस.ए. की आत्मा – निदेशक मंडल



हिन्दी यू.एस.ए. के निदेशक मंडल में ५ सदस्य हैं। ये सदस्य देखने में अलग-अलग उँगलियों की तरह दिखते हैं, परंतु वास्तव में ये सब मिलकर एक मुट्ठी की तरह शक्तिशाली हैं। ये सभी पिछले २० वर्षों से हिन्दी यू.एस.ए. के सभी कार्यक्रमों की योजना, तैयारी, परिवर्तन आदि में दिन-रात जुटे रहते हैं। यही मंडल बाकी समितियों के कार्यों का अवलोकन करता है और

समय-समय पर उन्हें निर्देश देता है।

यदि संक्षेप में कहें तो ये वे लोग हैं जिन्होंने अपनी लगन से संस्था को खड़ा किया है और आज भी बिना थके, बिना हारे, पूरे उत्साह के साथ नए सत्र और नए विद्यार्थियों का स्वागत करते हैं। बिना इनके हिन्दी यू.एस.ए. की कल्पना करना अकल्पनीय है।

हिंदी यू.एस.ए. का हृदय – कार्यकारी संचालक



इस समूह में वे ७ सदस्य हैं जो पिछले १० वर्षों से निदेशक मंडल और संस्था के हर कार्य को करने के लिए, अतिरिक्त जिम्मेदारियाँ लेने के लिए और अपना अमूल्य समय और श्रम देने के लिए सदा तत्पर रहते हैं। ये सभी सदस्य विभिन्न पाठशालाओं के संचालक और

संचालिका होते हुए भी संस्था के सभी कार्यक्रमों के आयोजनों में अग्रणी भूमिका निभाते हैं। इनके कार्यों को सूची में बाँधना असंभव है। यदि संक्षेप में कहें तो ये हिंदी यू.एस.ए. के हृदय में और हिंदी यू.एस.ए. इनके हृदय में बसता है।

हिंदी पाठशालाओं की धुरी – पाठशाला संचालक एवं संचालिकाएँ



ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने व्यस्त जीवन, पारिवारिक जिम्मेदारियों और अन्य सेवा कार्यों को निभाते हुए हिंदी यू.एस.ए. की विभिन्न प्रांतों और नगरों में चलने वाली एक-एक पाठशाला की जिम्मेदारी अपने मजबूत कंधों पर न केवल उठाई है, बल्कि उसे अपनी कर्मठता और सूझ-बूझ से कार्यावित भी किया है। ये ऐसे नेतृत्वकर्ता हैं जो अपनी पाठशाला के शिक्षक-शिक्षिकाओं, विद्यार्थियों, विभिन्न कार्यक्रमों को एक अच्छे व्यवस्थापक की तरह

प्रसन्नता से संभाल रहे हैं। इन सब का मधुर व्यवहार और अनुशासन के बीच तारतम्य बनाए रखना ही इनकी कुँजी है। निष्पक्षता, समान व्यवहार और हिंदी यू.एस.ए. के सभी नियमों का पालन करते हुए इन सभी ने अपने-अपने क्षेत्रों में और संयुक्त रूप से हिंदी यू.एस.ए. का नाम और काम दोनों का झंडा ऊँचा किया है। संक्षेप में ये वह धुरी (Axis) हैं जिनके चारों ओर पाठशाला घूमती है, और ये सभी पाठशालाएँ संस्था की शक्ति हैं।

हिंदी यू.एस.ए. का मस्तिष्क – स्तर संचालिकाएँ एवं संचालक



यह एक ऐसा समूह है जिसका हर सदस्य संस्था के द्वारा स्थापित शिक्षण के ९ स्तरों में से किसी एक स्तर का संचालन कर रहा है। ये सदस्य स्वयं उसी स्तर में शिक्षण का कार्य करते हुए उस स्तर के शिक्षक-शिक्षिकाओं की समस्याओं का समाधान करना, उन्हें हिंदी यू.एस.ए. की कार्य प्रणाली, शिक्षण-विधा और नियमों से शिक्षक प्रशिक्षण तथा ऑनलाइन समूह बनाकर प्रशिक्षित और तैयार करना, शिक्षकों के अंदर आत्म-विश्वास को बढ़ाना और पूरे सत्र भर उनका मार्ग-दर्शन करना आदि सभी

कार्यों को बहुत ही सूझ-बूझ और बिना हतोत्साहित हुए लगन के साथ पिछले १५ वर्षों से करते आ रहे हैं। इनका हिंदी शिक्षण के प्रति प्रेम ही इनके मस्तिष्क को सदैव ही पाठ्यक्रम, पुस्तकों, कार्यक्रमों की कमियों, कठिनाइयों और बदलाव की ओर प्रेरित करता है और यही कारण है कि हमारी शिक्षण प्रणाली में जीवंतता बनी हुई है। इनके नवीन विचार और कर्मठता संस्था को लगातार आगे बढ़ाने में विशेष भूमिका निभा रहे हैं।



हिन्दी यू.एस.ए. के २५
गौरवशाली वर्ष पूर्ण
होने पर हार्दिक
बधाई। हमारी भाषा,
हमारी पहचान, सदा
रहे जग में महान।

राज मित्तल



सेवा और समर्पण के २५ वर्ष

एडिसन हिन्दी पाठशाला के समस्त समर्पित
स्वयंसेवकों की ओर से बधाई और शुभकामनाएँ

माणक काबरा - संचालक



सेवा और समर्पण के
२५ वर्ष! सात समंदर
पार हिन्दी की अलख
जगाने वाली इस
महान संस्था को शत-
शत नमन।

सुनील दुबे परिवार



सिल्वर जुबली का यह
पर्व एक नई ऊर्जा का
संचार करे। हिन्दी का
यह दीप युगों-युगों
तक प्रकाशित रहे।

प्रिया तलाथी



भाषा ही नहीं, संस्कार
भी सिखाए। २५ वर्षों
से हमारी संस्कृति को
जीवित रखने के लिए
हिन्दी यू.एस.ए. का
आभार।

सुशील एवं वंदना अग्रवाल



एक सपना, २५ वर्ष
और अनगिनत
मुस्कान! हिन्दी
यू.एस.ए. परिवार के
हर सदस्य को रजत
जयंती की
शुभकामनाएँ।

निखिल महाजन



हिन्दी यू.एस.ए. की
रजत जयंती आने
वाली पीढ़ियों के लिए
प्रेरणा है। आपकी
ज्ञान-ज्योति यूं ही
जलती रहे। हार्दिक
शुभकामनाएँ!

प्राची कुमार परिवार



जड़ों से जोड़ा, अपनों
से मिलाया। २५ साल
की इस यात्रा ने हमें
'हिन्दी' का मान
बढ़ाया।

यज्ञेश दलाल



पाराशर परिवार की
ओर से हिंदी यू.एस.ए.
को २५ वर्ष की
समर्पित शिक्षा सेवा,
सांस्कृतिक संरक्षण
और नई पीढ़ी को हिंदी
भाषा से जोड़ने के
लिए आभार।

पवन पाराशर



पच्चीस वर्षों की यह
गौरव गाथा, हिंदी
यू.एस.ए. ने रची नई
परिभाषा,
विदेशी धरती पर बोया
जो बीज, आज बना
वह संस्कृति का
मधुमय साझा।

प्रशांत गुप्ता



माँ शारदे का आशीष
बना रहे, और हिन्दी
यू.एस.ए. का कारवां
यूँ ही आगे बढ़ता रहे।
२५वें वर्ष की बधाई
और शुभकामनाएँ।

प्रमोद तिवारी



सिल्वर जुबली का है
उल्लास, हिन्दी के संग
सबका विकास।
निरंतर बढ़ता रहे,
हमारा यह अटूट
विश्वास।

लीना क्रिस्चियन एवं आश्विन कचुला



मेनन परिवार की ओर
से नई पीढ़ी को अपनी
जड़ों से जोड़ने के
सफल २५ वर्ष होने
पर हिन्दी यू.एस.ए.
को अनंत
शुभकामनाएँ।

राकेश एवं मनिषा मेनन

हिंदी यू.एस.ए. निदेशक मंडल से एक साक्षात्कार

पच्चीस वर्षों के संकल्प एवं समर्पण की यात्रा

**टढ़ संकल्प, साहस और विश्वास से हो जाता,
असंभव कार्य भी सहज, सुगम एवं सरल।
हिन्दी यू.एस.ए. है जीवंत प्रमाण इसका,
निःस्वार्थ सेवा की यहाँ धारा बह रही अविरल।।**

जैसा आप सब को विदित है, इस वर्ष हिंदी यू.एस.ए. अपनी स्थापना का २५वाँ वर्ष मना रहा है और किसी भी संस्था का इतने वर्षों तक अनवरत अपने उद्देश्य-पथ पर चलते रह कर आगे बढ़ते रहना एक अत्यंत ही विशेष उपलब्धि है। हमने इस अवसर पर संस्था के संस्थापकों एवं निदेशक मंडल के वरिष्ठ सदस्यों, जोकि हिंदी यू.एस.ए. के अग्रणी और सशक्त हस्ताक्षर हैं, से संस्था के प्रारंभिक इतिहास, विकास यात्रा एवं भविष्य के बारे में उनके तथ्यपरक विचार एवं अनुभव जानने का प्रयास किया है। आज मेरे साथ साक्षात्कार लेने के लिए राजीव श्रीवास्तव जी और इंदु श्रीवास्तव जी भी हैं। तो आइए आप भी इस रोचक वार्तालाप के साक्षी बलिए और हिंदी यू.एस.ए. के बारे में कुछ अनकही, अनसुनी एवं प्रेरणादायी जानकारी जानिए। सर्वप्रथम, संस्था के संस्थापक श्री देवेन्द्र सिंह जी और रचिता सिंह जी से साक्षात्कार करने का सुअवसर प्राप्त हुआ, उनसे हुई बातचीत के अंश -



देवेन्द्र सिंह

देवेन्द्र जी: नमस्ते योगिता जी।

बचपन में अपनी दादी जी से रामायण में वर्णित हनुमान जी के रोमांचक एवं पराक्रम भरे वृतांत तथा अन्य हिंदी की ज्ञानवर्धक कहानियाँ सुनकर

बचपन से ही संस्कृति के लिए कुछ करने की इच्छा ने मन में कहीं जन्म ले लिया था। इसके बाद विद्यार्थी जीवन में यह इच्छा और बलवती हुई तथा मैं बहुत से सामूहिक कार्य और समुदायिक परियोजनाओं से अग्रणी रूप से जुड़ा रहा। भारत से अमेरिका में आगे की पढ़ाई करने तथा बाद में विवाह पश्चात जब मैं यहाँ बस गया तब कुछ समय पश्चात मैंने और मेरी धर्मपत्नी रचिता ने अपनी भाषा एवं अपनी संस्कृति को आगे बढ़ाने की दिशा में कुछ ठोस कार्य करने का सोचा। हमारे बच्चे पहले मंदिर और बाद में एक अन्य संस्था में हिंदी पढ़ने जाते थे लेकिन वह ज्यादा प्रभावी नहीं था, उसमें कई कमियाँ थीं, जैसे विद्यार्थियों में गंभीरता एवं निरंतरता का अभाव, व्यवस्थित पाठ्यक्रम का न होना, उपयुक्त शिक्षकों का अभाव आदि। उन कमियों को देखते हुए हमने स्वयं एक ऐसी संस्था प्रारम्भ करने का विचार बनाया जो इन कमियों से परे हो और हिंदी भाषा एवं संस्कृति के संरक्षण तथा संवर्धन में सहायक हो।

योगिता जी: जी, जैसा आपने बताया कि बचपन और विद्यार्थी जीवन से ही आपका संस्कृति और सामाजिक कार्य के प्रति लगाव रहा था, कहीं न कहीं वो विचार ही मूलतः इस संस्था की परिकल्पना को मूर्त रूप दे पाया, जोकि बहुत ही प्रेरणादायी है। देवेन्द्र जी, आपने यह कार्य



योगिता मोदी

योगिता जी: नमस्ते देवेन्द्र जी, हिंदी यू.एस.ए. की स्थापना का मूलभूत प्रेरक स्रोत क्या था, एक संस्थापक के रूप में आपके विचार जानना चाहती हूँ?

आरंभ करने का सोचा तो था लेकिन एक पाश्चात्य सभ्यता के देश में आपको कितना विश्वास था कि लोग इस संस्था से जुड़ेंगे और भाषा तथा संस्कृति के संरक्षण के लिए काम करेंगे?

देवेंद्र जी: निश्चित रूप से यह विचार हमारे मन में भी आया था कि जहाँ बहुत वर्षों तक अमेरिका में रहने के बावजूद भी भारतीयों ने अमेरिका की बहुत सी अच्छी बातों को अपने सामाजिक जीवन में कोई स्थान नहीं दिया था, यहाँ के रंग में रंग कर उन्हें केवल अपनी जीविका और मौज मस्ती तक ही सीमित रहना पसंद था तथा जहाँ उनका नाम न हो या मंच पर उन्हें सम्मानित न किया जाए, वहाँ जाना उन्हें पसंद नहीं था तो ऐसे में एक स्वयंसेवी संस्था से लोग निःस्वार्थ कैसे जुड़ेंगे लेकिन जितना बड़ा काम होता है उतनी ही अधिक कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है और यदि किसी भी कार्य को पूरा करना है तो उसे पूरी मानसिक तथा शारीरिक शक्ति का उपयोग करके करना पड़ता है, जैसे विमान को उड़ाने के लिए विमानचालक उसे विमान पट्टी पर ज्यादा से ज्यादा गति से दौड़ाता है। यदि वह ऐसा न करे और आराम से ही विमान को पट्टी पर चलने दे तो विमान कभी भी नहीं उड़ेगा। हिंदी यू.एस.ए. की उड़ान की कहानी के पीछे भी कुछ ऐसी ही सोच और विश्वास था और अभी भी है। मेरी जैसी इस सोच और विश्वास रखने वाले बहुत से स्वयंसेवक इस कार्य में मजबूती से हाथ बढ़ाने आगे आये और आगे भी आते रहेंगे।

योगिता जी: जी, बिलकुल सही कहा आपने, धन्यवाद देवेंद्र जी।

नमस्ते रचिता जी, मेरा अगला प्रश्न आपसे से है, आप भी इस संस्था की स्थापना में देवेंद्र जी की पूर्णतः सहभागी रही हैं। हिंदी यू.एस.ए. के लिए आपने ९ स्तरीय पाठ्यक्रम की रचना, संगठन की कार्यप्रणाली और विस्तार को कैसे परिकल्पित और व्यवस्थित किया?



रचिता सिंह

रचिता जी: नमस्ते योगिता जी, जैसा कि कहा जाता है कि आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है। जब हमने हिंदी यू.एस.ए (HindiUSA) प्रारंभ किया, तो हमने यह महसूस

किया कि भारत की पुस्तकों से यहाँ के बच्चों को हिंदी सिखाना बहुत ही कठिन है। इसी कारण हमें अपनी स्वयं की पुस्तकें तैयार करने की आवश्यकता महसूस हुई। इस यात्रा के कुछ मुख्य पड़ाव इस प्रकार हैं:

पाठ्यक्रम का निर्माण: शुरू में मैंने कई हिंदी विद्वानों और पीएचडी धारकों से मदद मांगी, लेकिन अंततः मुझे स्वयं ही पाठ्यक्रम तैयार करना पड़ा।

- ♦ पुस्तकों का विकास: सबसे पहले हमने बच्चों के गृहकार्य के लिए अभ्यास-पुस्तक तैयार की और फिर धीरे-धीरे पाठ्य-पुस्तकों का विकास किया।
- ♦ क्रमिक विस्तार इस प्रकार रहा: हमने शुरुआत ३ साल के पाठ्यक्रम से की थी, जो बाद में ५ साल और अब अनुभव के आधार पर ९ स्तरों (9 years) तक विस्तृत हो चुका है।
- ♦ विशेषताएँ: हमारी पुस्तकें रंगीन चित्रों के साथ बनाई गई हैं ताकि बच्चे उन्हें रुचि के साथ पढ़ें और जल्दी सीख सकें।

आज अभिभावकों और शिक्षकों के साथ-साथ बच्चे भी इन पुस्तकों को बहुत पसंद करते हैं, जो हमारे लिए बहुत खुशी की बात है।

योगिता जी: देवेंद्र जी, क्या आपको लगता है कि इस संस्था के विकास, विस्तार को लेकर जो आपकी अपेक्षाएँ, उद्देश्य थे वे अब तक पूरे हुए हैं?

देवेंद्र जी:

दो बच्चों से शुरू हुई थी हिंदी की ये गाड़ी,
रोड़े भी आए राहों में आई जटिल पहाड़ी।
रुकी नहीं है यात्रा क्योंकि गाड़ीवान हैं सच्चे,
लक्ष्य एक साधा था जिससे ज्ञानवान हों बच्चे।।

अमेरिका में जन्मी प्रवासी पीढ़ी को हिन्दी का बुनियादी ज्ञान देना तथा भारतीय संस्कार एवं संस्कृति से जोड़े रखना इस संस्था का मुख्य लक्ष्य था और सदैव रहेगा। पिछले २५ वर्षों में इस परिवार का दिन-दूना रात चौगुना विस्तार हुआ है जिसकी अपेक्षा हमेशा से थी और आगे भी रहेगी कि यह उन्नति के मार्ग पर ऐसे ही अग्रसर रहे। जहाँ तक उद्देश्य का सवाल है वो भी बहुत सीमा तक पूरे हुए हैं लेकिन अभी भी इस दिशा में और प्रयास जारी है। हिन्दी को अमेरिका में लोकप्रिय बनाने में कई अवरोध हैं। भारतीय जातिवाद और प्रांतीयता में बँटे हुए हैं, इसलिए भारत के लिए व्यापक सोच से वंचित हैं। मद्रास को चेन्नई और बॉम्बे को मुंबई करवाने में पूरी ताकत लगाते हैं, परंतु इंडिया को भारत करवाने के मामले में उदासीन रहते हैं। इसके बावजूद हिन्दी यू.एस.ए. अपना पूरा प्रयास कर रहा है कि हिन्दी भाषा बोलचाल की भाषा बने। अमेरिकी नागरिकों को भी हिन्दी सीखने की आवश्यकता पर जोर डाला जा रहा है जिससे भारत और अमेरिका के संबंधों में मजबूती आएगी तथा भाषा के माध्यम से वे भारत की संस्कृति, व्यापार, पर्यटन शिक्षा और अन्य क्षेत्रों से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ पाएँगे।

हिन्दी यू.एस.ए. को इस वर्ष WASC से जो मान्यता प्राप्त हुई है वह भी एक विशेष अपेक्षा थी जो पूरी हुई और अब यह उद्देश्य है कि यह नए मानदंडों के साथ अपने उच्चता के शिखर को छूए।

योगिता जी: जी, हम सब स्वयंसेवक भी इस उद्देश्य को पूरा करने में हिन्दी यू.एस.ए. के साथ हैं। रचिता जी मेरा अगला प्रश्न आपसे है -

इस संस्था की स्थापना से लेकर पिछले २५ वर्षों की सफलता के क्या मापदंड रहे और इनमें और सुधार की क्या सम्भावना है?

रचिता जी: जैसा कि हम सभी जानते हैं कि सुधार की संभावना तो हमेशा हर कार्य में रहती ही है और हम अपनी गलतियों से ही सीखते हैं। समय के साथ बदलना

भी बहुत आवश्यक है और आज टेक्नोलॉजी और एआई (AI) का जमाना है। बच्चे भी टेक्नोलॉजी के माध्यम से पढ़ाई कर रहे हैं, तो ऐसे समय में यह बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है कि हम हिन्दी को भी आधुनिक तकनीकों से जोड़ें। हिन्दी यूएसए (HindiUSA) ने इस दिशा में कई कदम उठाए हैं:

- ♦ तकनीकी माध्यम: हमने हिन्दी सीखने के लिए ऐप, वीडियो, ऑडियो सीडी और रिकॉर्डिंग्स का उपयोग शुरू किया है।
- ♦ ऑनलाइन कक्षाएँ: ऑनलाइन माध्यम से यह लाभ मिलता है कि कोई क्लास मिस नहीं होती और छुट्टियों या स्कूल बंद होने पर भी कोर्स समय पर पूरा हो जाता है।
- ♦ दैनिक जीवन से जुड़ाव: बच्चों को हिन्दी से जोड़ने के लिए पाठ्यक्रम को उनके दैनिक जीवन, खेलकूद और भविष्य के करियर से जोड़ना आवश्यक है।
- ♦ भविष्य की योजनाएँ: हम जल्द ही एआई (AI) पर काम शुरू करेंगे और पाठ्यपुस्तकों में भी आवश्यक बदलाव करेंगे ताकि वे बच्चों के लिए और अधिक रोचक बन सकें।

योगिता जी: बहुत-बहुत धन्यवाद देवेंद्र जी, रचिता जी, आपने बहुत ही उपयोगी, सार्थक जानकारी दी और इस साक्षात्कार को इतना रोचक बनाया।



राजीव श्रीवास्तव

राजीव जी: हिन्दी यू.एस.ए. निदेशक मंडल के सदस्य एवं उपाध्यक्ष श्री राज मित्तल जी से संस्था की पच्चीस वर्षों के संकल्प एवं समर्पण की यात्रा के बारे में जानने का मुझे सुअवसर प्राप्त हुआ। राज जी और उनकी धर्मपत्नी

श्रीमती सुमन मित्तल जी ने संयुक्त राज्य अमेरिका में हिन्दी भाषा और भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

नमस्ते राज जी - आप हिन्दी यू.एस.ए. के साथ कब और

कैसे जुड़े?



राज मित्तल

राज जी: मैं तो हिंदी यू.एस.ए. के साथ प्रारंभ से ही जुड़ गया था। देवेंद्र जी ने जब पहले महोत्सव में हिंदी यू.एस.ए. को प्रारंभ करने का संकल्प लिया, तब से ही मैं और मेरी धर्मपत्नी सुमन संस्था के साथ जुड़ गए थे। सन् २००१ में कुछ स्वयंसेवकों के साथ एडिसन, न्यू जर्सी पाठशाला की स्थापना में अपना योगदान दिया। पहले वर्ष में ही कब विद्यार्थियों की संख्या १०० से अधिक पहुँच गई, पता ही नहीं चला। फिर बहुत से अभिभावक स्वयंसेवक के रूप में जुड़ते चले गए।

राजीव जी: जी राज जी, यही है संकल्प और समर्पण की अद्भुत यात्रा का संक्षेप। आरंभिक दिनों में हिंदी यू.एस.ए. को और आपको किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ा?

राज जी: किसी भी पाठशाला को आरंभ करने के लिए विद्यार्थी और स्थान ये दोनों ही बहुत आवश्यक होते हैं। कुछ संकल्पित स्वयंसेवकों की सहायता से स्थान और विद्यार्थियों का पंजीकरण तो संभव हो गया, किंतु सही पुस्तकों का मिलना, उचित शिक्षकों का चयन, और विभिन्न स्तरों का पाठ्यक्रम बनाना बहुत ही जटिल काम था। लेकिन हम सबके दृढ़ संकल्प और असीमित समर्पण के रहते कोई भी काम असंभव नहीं लगा।

राजीव जी: जी, यदि उद्देश्य ऊँचे और सच्चे हों तो राह अपने आप ही बनती चली जाती है। पिछले पच्चीस वर्षों में हिंदी यू.एस.ए. की २९ पाठशालाएँ बन गई, ६०० से अधिक स्वयंसेवक जुड़ गए। आप इतने बड़े स्वयंसेवकों के समूह को जुड़े रहने के लिए कैसे प्रेरित करते हैं?

राज जी: जैसा कि मैंने पहले बताया, हिंदी यू.एस.ए. अभिभावकों के द्वारा, उन्हीं के बच्चों को भाषा एवं संस्कृति से जोड़ने के लिए बनाया गया अभियान है। जब वे अपने बच्चों को भाषा एवं संस्कृति से जुड़ा देखते हैं, तो

स्वतः ही उनके मन में इस अभियान के प्रति समर्पण की भावना जागृत होती है। ऐसे स्वयंसेवक ना सिर्फ लंबे समय के लिए संस्था से जुड़ जाते हैं, बल्कि दूसरों के लिए प्रेरणास्रोत भी बन जाते हैं।

राजीव जी: जी बिल्कुल, स्वयंसेवक स्वयं के साथ-साथ दूसरों के भी प्रेरणास्रोत बन जाते हैं। आने वाले पाँच वर्षों में आप हिंदी यू.एस.ए. को कैसा देखना चाहते हैं?

राज जी: मैं आने वाले पाँच वर्षों में इस अभियान का लाभ अधिक से अधिक बच्चों तक पहुँचते हुए देखना चाहता हूँ। मुझे लगता है कि हिंदी यू.एस.ए. का प्रसार तभी होगा जब इसका प्रचार होगा। इस अभियान के प्रचार एवं प्रसार के लिए हमें नई तकनीकों तथा अन्य आधुनिक माध्यमों जैसे डिजिटल मार्केटिंग, सोशल मीडिया, ऑनलाइन शिक्षा आदि की सहायता लेनी होगी। मुझे खुशी है कि हिंदी यू.एस.ए. ने इस दिशा में कार्य करना प्रारंभ कर दिया है और उसके परिणाम भी मिलना शुरू हो गए हैं।

राजीव जी: जी, मैं भी आपके इन विचारों से सहमत हूँ। आपका नए स्वयंसेवकों के लिए क्या संदेश है?

राज जी: हिंदी यू.एस.ए. का अभियान एक संकल्प और समर्पण की यात्रा है। मेरा सभी स्वयंसेवकों से यही आह्वान है कि वे धैर्यपूर्वक माँ भारती की सेवा के इस अभियान में जुड़े रहें। हमें अपनी अगली पीढ़ियों को भाषा के माध्यम से संस्कृति से जोड़ना है। हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी पहचान, हमारी चेतना और हमारी सांस्कृतिक विरासत है, और आप सभी उसके सच्चे संवाहक हैं। आपके सहयोग एवं सहकार से संस्था अपने उद्देश्य में सफल हो रही है। आइए, इसी उत्साह और एकजुटता के साथ आगे बढ़ते रहें, और हिंदी की ज्योति को और अधिक प्रखर बनाएँ। आप सभी स्वयंसेवकों का हिंदी यू.एस.ए. की रजत जयंती के इस अवसर पर अभिनंदन एवं आभार।

राजीव जी: जी राज जी, इतनी महत्वपूर्ण और रोचक

जानकारी साझा करने के लिये हिंदी यू.एस.ए. के सारे स्वयंसेवकों की ओर से आपका हार्दिक धन्यवाद !



इंदु श्रीवास्तव

इंदु जी: आइए अब हम आपको वरिष्ठ स्वयंसेवक, हिंदी यू.एस.ए. निदेशक मंडल के सदस्य एवं एडिसन पाठशाला के संचालक श्री माणक काबरा जी से मिलवाते हैं -

राजीव जी: आप सबसे पहले हिंदी यू.एस.ए. से कैसे और कब जुड़े?



माणक काबरा

माणक जी: मैं २००५ में एक अभिभावक के रूप में हिंदी यू.एस.ए. से जुड़ा। चूंकि हिंदी यू.एस.ए. अभिभावकों के लिये अभिभावकों द्वारा बनायी संस्था है, इसलिए मैं भी अपने बच्चों को कक्षाओं में छोड़ने के बाद

पाठशाला की गतिविधियों में सहायता करने लगा और कुछ समय के पश्चात पाठशाला के संचालकों के समूह में शामिल हो गया।

राजीव जी: बिल्कुल माणक जी, हम अभिभावकों की भूमिका निभाते हुए माँ भारती की सेवा में स्वतः जुड़ जाते हैं, ऐसा हिंदी यू.एस.ए. में ही संभव है।

इंदु जी: शुरुआत में आपको स्वयंसेवा करने के लिए किसने प्रेरित किया, और इतने वर्षों तक इसमें शामिल रहने का कारण क्या है?

माणक जी: परदेश में आकर माँ भारती की सेवा का इससे अच्छा अवसर कुछ हो ही नहीं सकता। इस तरह की गतिविधियाँ आपको अपने लोगों से जुड़ने का अवसर भी प्रदान करती हैं। एक बार जो हिंदी यू.एस.ए. से जुड़ गया तो फिर पीछे मुड़ कर देखने का प्रश्न ही नहीं उठता।

इंदु जी: बिल्कुल माणक जी, जिन कार्यों से अंतर्मन को खुशी मिलती हो उनको छोड़ने का कोई सोच भी नहीं सकता।

राजीव जी: क्या आप बता सकते हैं कि शुरुआती दिनों

में संगठन कैसा दिखता था और अब कैसा दिखता है?

माणक जी: शुरुआती दिनों में एडिसन पाठशाला तो उतनी ही बड़ी थी पर हिंदी यू.एस.ए. में तब इतनी पाठशालाएँ नहीं थीं। सभी कार्यकर्ता माह में एक बार मिलकर अपने कार्यों की समीक्षा करते थे और हिंदी शिक्षा का प्रसार कैसे किया जाए उस पर विचार करते थे। एडिसन पाठशाला के अभिभावक और स्वयंसेवक जब दूसरे शहरों में गए तब उन्होंने वहाँ भी पाठशाला खोलने का निश्चय किया। प्रारंभिक दिनों में सारा काम मैनुअल ही होता था, अब तो नई तकनीकी सुविधाओं के कारण बहुत से काम सरल हो गए हैं। इतने वर्षों के अनुभव से पाठ्यक्रम, और शैक्षणिक गतिविधियों की गुणवत्ता भी बढ़ी है। समय के साथ-साथ संस्था में सकारात्मक बदलाव भी आये हैं। संस्था की वेबसाइट, ऑनलाइन फीस भुगतान, और लर्निंग मैनेजमेंट पोर्टल ने सभी का काम बहुत कुछ आसन कर दिया है।

राजीव जी: बिलकुल माणक जी समय के साथ हर संस्था का परिवर्तन उसके विकास और प्रसार के लिए अत्यंत आवश्यक है।

इंदु जी: आपकी स्वयंसेवी यात्रा का एक ऐसा यादगार पल या अनुभव कौन सा है जो आप हमसे साझा करना चाहेंगे?

माणक जी: वैसे तो बहुत से यादगार अनुभव हैं पर जब छात्र/छात्राएँ अपना अध्ययन पूर्ण करके युवा स्वयंसेवक बनते हैं और फिर वे शिक्षक/शिक्षिकाओं के रूप में लौटते हैं तो मन संतोष से भर जाता है और पूरा विश्वास हो जाता है हिंदी यू.एस.ए. का भविष्य उज्ज्वल है।

इंदु जी: जी माणक जी बिलकुल, आपके किए गए कार्यों का इससे बड़ा अनुमोदन और क्या हो सकता है।

राजीव: पिछले कुछ वर्षों में आपने छात्रों के दृष्टिकोण, आत्मविश्वास या सांस्कृतिक जुड़ाव में क्या क्या बदलाव देखे हैं?

माणक जी: मैंने बहुत से छात्र/छात्राओं में हिंदी

यू.एस.ए. में पढ़ते हुए, युवा स्वयंसेवक के रूप में कार्य करते हुए, या उसके बाद उनकी नेतृत्व क्षमता का विकास होते हुए देखा है। उनमें भाषा के माध्यम से अपनी संस्कृति को जानने और समझने की रुचि बढ़ी है। विभिन्न स्तरों की कविता पाठ प्रतियोगिता में भाग लेने के पश्चात उनका आत्मविश्वास बढ़ा है। इस बात की पुष्टि कई अभिभावकों ने भी की है।

राजीव जी: जी, मैं आपकी बात से बिल्कुल सहमत हूँ।

इंदु जी: किसी भी स्वयंसेवा कार्य के लिए समय और ऊर्जा की आवश्यकता होती है। आपने इसे अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन के साथ कैसे संतुलित किया?

माणक जी: बिल्कुल, हर कार्य के लिए समय और ऊर्जा की आवश्यकता होती है, पर जहाँ चाह वहाँ राह। जब आप किसी काम को अपनी प्राथमिकता बना लेते हैं तो उसके लिये समय भी निकलता है और उसको करने पर आप और भी ऊर्जामय हो जाते हैं।

इंदु जी: सही बात है, यह तो हम सभी के लिए सीखने वाली बात है।

राजीव जी: आप इतनी बड़ी पाठशाला का संचालन करते हैं, उसमें आपको क्या कठिनाइयाँ आती रही हैं और आप उन्हें कैसे सुलझाते हैं?

माणक जी: हिंदी यू.एस.ए. जैसी स्वयंसेवी संस्था में पाठशाला का संचालन करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, जिसे समर्पण से ही पूरा किया जा सकता है। इसमें मुख्यतः योग्य स्वयंसेवी शिक्षकों की खोज, युवा स्वयंसेवकों और विद्यार्थियों के बीच हिंदी के प्रति रुचि बनाए रखना और पाठशाला प्रबंधन जैसी कठिनाइयाँ आती हैं। उन्हें सुलझाने के लिए स्वयंसेवकों के साथ नियमित संवाद, उनका प्रशिक्षण, मनोरंजक और नई तकनीकी द्वारा शिक्षण, और सांस्कृतिक गतिविधियों में उनकी सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करते रहना ऐसा मेरा प्रयास रहता है।

राजीव जी: जी, सभी संचालकों के लिए यह महत्वपूर्ण सुझाव हैं।

इंदु जी, राजीव जी: माणक जी, आप से बातचीत कर के हमें अत्यधिक हर्ष हुआ है और आप के अमूल्य समय के लिये हमारा हार्दिक धन्यवाद!

योगिता जी: आज की हमारी इस बातचीत की एक अत्यंत महत्वपूर्ण कड़ी हैं - वरिष्ठ स्वयंसेवक, हिंदी यू.एस.ए. निदेशक मंडल के सदस्य, उच्चतर-१ के स्तर संचालक एवं शिक्षक, कर्मभूमि के संपादक, एडिसन पाठशाला से श्री सुशील जी -

नमस्ते सुशील जी - आप इस संस्था से कब और कैसे जुड़े? हिंदी भाषा आधारित इस संस्था से जुड़ने की आपकी प्रेरणा क्या थी?



सुशील जी: नमस्ते योगिता जी मेरा हिन्दी यू.एस.ए. के साथ संबंध उसी सहज भाव से शुरू हुआ, जैसा कि अधिकांश प्रवासी माता-पिता का होता है—अपने बच्चों को अपनी जड़ों और संस्कृति से जोड़ने की

अभिलाषा। मैं उस समय से इस परिवार का हिस्सा हूँ जब इसे 'हिन्दी एन.जे.' (Hindi NJ) के नाम से जाना जाता था। मेरी असली प्रेरणा तब जागी जब संस्था ने अपना विस्तार केवल न्यू जर्सी तक सीमित न रखकर पूरे अमेरिका में करने का संकल्प लिया। मुझे यह बोध हुआ कि केवल अपने घर के दो बच्चों को भाषा सिखाने से हमारी महान सभ्यता जीवित नहीं रह सकती; इसके लिए एक सामुदायिक क्रांति की आवश्यकता है। बस तभी से मैं पूरी लगन से इस संस्था के साथ जुड़ गया और एडिसन हिन्दी पाठशाला में शिक्षण के साथ-साथ संस्था के लिए जो अन्य कार्य बन सके वे भी करने लगा।

योगिता जी: पिछले २० वर्षों में संस्था में आपने कौन-कौन से प्रमुख बदलाव देखे?

सुशील जी: इन दो दशकों में हमने एक अभूतपूर्व

वैचारिक और संरचनात्मक परिवर्तन देखा है:

- ♦ औपचारिकता का विस्तार: हमारी पढ़ाई घरों और मंदिरों की सीमाओं से निकलकर अब सुव्यवस्थित आधुनिक पाठशालाओं में होती है।
- ♦ शिक्षण सामग्री: भारत की पुस्तकें यहाँ के बच्चों के लिए कठिन थीं, इसलिए रचिता जी ने विशेष रूप से अमेरिका में पले-बढ़े बच्चों के लिए २५ पुस्तकों और क्रिया-कलाप सामग्रियों का एक वैज्ञानिक पाठ्यक्रम तैयार किया।
- ♦ अभिव्यक्ति का महाकुंभ: कविता पाठ प्रतियोगिता अब केवल एक स्पर्धा नहीं, बल्कि बच्चों के लिए अभिव्यक्ति की पहली सीढ़ी और हमारी सबसे लोकप्रिय परंपरा बन चुकी है।
- ♦ सांस्कृतिक सेतु: १६ वर्ष पूर्व शुरू हुई 'शैक्षिक भारत यात्रा' आज नई पीढ़ी को उनकी विरासत से जोड़ने का सबसे सशक्त माध्यम है।
- ♦ डिजिटल क्रांति: कोविड की चुनौती को हमने अवसर में बदला। आज हमारी 'ऑनलाइन हिन्दी पाठशाला' जूम (Zoom) के माध्यम से अमेरिका भर के छात्रों को जोड़ रही है और यह हमारी सबसे बड़ी पाठशाला बनकर उभरी है।

योगिता जी: हिंदी भाषा और संस्कृति के प्रचार-प्रसार में इस संस्था की भूमिका को आप कैसे देखते हैं?

सुशील जी: भाषा और संस्कृति का संबंध अटूट है—भाषा ही संस्कृति को जन्म देती है और संस्कृति ही सभ्यता का आधार बनती है। यदि हमें अपनी पहचान सुरक्षित रखनी

है, तो भाषा का विकास अनिवार्य है और विकास सतत प्रयोग से आता है। आज जहाँ स्वयं भारत में हिन्दी के प्रति रुझान में उतार-चढ़ाव दिखते हैं, वहीं हिन्दी यू.एस.ए. अमेरिका की धरती पर इस दीप को प्रज्वलित रखे हुए है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यही बच्चे भविष्य में हमारी भाषा के सच्चे वाहक बनेंगे और इस 'देवभाषा' को उस शिखर तक पहुँचाएंगे जिसकी वह हकदार है।

योगिता जी: आपने भी इतनी उपयुक्त जानकारी हमें दी, निश्चित ही सबके लिए यह बहुत उपयोगी साबित होगी। धन्यवाद सुशील जी।

अंत में, हम निदेशक मंडल का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए आप सभी पाठकों से केवल इतना कहना चाहेंगे कि सेवा का कोई भी कार्य छोटा नहीं होता। 'हिन्दी यू.एस.ए.' आज जो कुछ भी है, वह उन कई सौ निस्वार्थ स्वयंसेवकों के प्रयासों का फल है जिन्होंने अपना समय और कौशल इस भाषा की वेदी पर अर्पित किया है। आने वाली पीढ़ी को अपनी संस्कृति से जोड़ना केवल एक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि एक निवेश है—एक ऐसा निवेश जो हमारे बच्चों को उनकी जड़ों से सींचकर उन्हें एक आत्मविश्वास से भरपूर वैश्विक नागरिक बनाता है। यदि आप भी अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति प्रेम रखते हैं, तो इस महायज्ञ में अपना योगदान दें। याद रखें, जब हम एक बच्चे को उसकी मातृभाषा सिखाते हैं, तो हम केवल शब्द नहीं सिखा रहे होते, बल्कि हम उसे उसकी पहचान और गौरव का उपहार दे रहे होते हैं। आइए, मिलकर हिन्दी की इस लौ को और प्रज्वलित करें!

क्या आप जानते हैं?

हिन्दी यू.एस.ए. की स्थापना किस वर्ष हुई थी?

(क) १९९९ (ख) २००१ (ग) २००५ (घ) २०११



उत्तर पृष्ठ ४ पर देखें

॥ भाषा, संस्कृति और संस्कार, हमारी पहचान, हमारी धरोहर ॥

25th SILVER JUBILEE
Celebrating 25 Years of Service and Dedication

हार्दिक बधाई

हिंदी और संस्कृति के सबर्द्धन की प्रेरणादायक यात्रा पर हिंदी यू. एस. ए. को बधाई

HindiUSA
को रजत जयंती की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

सौजन्य से: योगिता मोदी, संजय मोदी, निरल देसाई, मनीषा श्रीवास्तव, रितु ठाकुर, सुगुना राज, अमृता मिश्रा, प्रियंका शर्मा, नीति जैन

हिंदी से ही पहचान हमारी, हिंदी से ही शान हमारी। युगों-युगों तक यूँ ही बढ़ती रहे, हिंदी की जय, यही है कामना हमारी ॥

हिंदी संस्कृति संस्कार

शुभेच्छुक
North Brunswick HindiUSA Paathshaala
नॉर्थ ब्रन्सविक हिंदी यू.एस.ए. पाठशाला

SHANTI PHYSICAL THERAPY
Restore Movement. Relieve Pain. Reclaim Life.

PAIN IS TEMPORARY, RECOVERY Starts Today!

WE TREAT A WIDE RANGE OF CONDITIONS

- Back Pain
- Knee Pain
- Neck & Shoulder Pain
- Sports Injuries
- Post-Surgery Rehabilitation
- Sciatica & Nerve Pain

EDISON
1655 Oak Tree Rd, Suite 295 A
Edison, NJ 08820
P: (732) 243 9740

EAST WINDSOR
897 ROUTE 130
East Windsor, NJ 08520
P: (609) 912 4477

CALL TODAY TO BOOK YOUR APPOINTMENT!
We're here to help you
MOVE BETTER, FEEL BETTER, LIVE BETTER!

EXPERT CARE. REAL RESULTS. BETTER LIFE.

VISIT OUR WEBSITE www.shantirehab.com

Facebook, Instagram, Google+ icons



हिंदी यू.एस.ए. समितियाँ

संगठन की मजबूती और प्रगति के सशक्त स्तंभ

माणक काबरा पिछले २१ वर्षों से न्यू जर्सी में रह रहे हैं और समर्पण के साथ एडिसन हिंदी पाठशाला का संचालन कर रहे हैं। हिंदी भाषा, भारतीय संस्कृति और सामुदायिक जुड़ाव के प्रति उनका योगदान उल्लेखनीय है। संगीत के प्रति उनकी रुचि विशेषकर पुराने हिंदी फ़िल्मी गीत, भजन और राजस्थानी लोकगीत गाने में आनंद पाते हैं। यह उनकी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ाव और संगीत के प्रति प्रेम को दर्शाता है। संगीत, संस्कृति, शिक्षा और सेवा का सुंदर संगम है, जो उन्हें हिंदी यू.एस.ए. समुदाय का एक प्रेरक और सम्मानित चेहरा बनाता है।

हिंदी यू.एस.ए. की निरंतर सफलता, विस्तार और संगठनात्मक स्थिरता के पीछे कई समर्पित समितियों का अथक परिश्रम निहित है। ये समितियाँ न केवल संगठन के दैनिक संचालन को सुचारु बनाती हैं, बल्कि हिंदी भाषा और संस्कृति के प्रसार को आधुनिक युग की आवश्यकताओं के अनुरूप नई दिशा भी प्रदान करती हैं। प्रस्तुत है हिंदी यू.एस.ए. की प्रमुख समितियाँ, जो संगठन की रीढ़ के समान हैं।

वेबसाइट, लर्निंग मैनेजमेंट सिस्टम (LMS), ऑडियो/वीडियो और मोबाइल ऐप समिति

वेबसाइट, वीडियो, ऑडियो, LMS और मोबाइल ऐप प्रबंधन समिति हिंदी यू.एस.ए. की डिजिटल रीढ़ के रूप में कार्य करती है। इस समिति में **वेनुगोपाल** वेबसाइट एवं LMS के संपूर्ण प्रबंधन, तकनीकी सुधार, प्रश्नों के समाधान तथा अभिभावकों, शिक्षकों और समन्वयकों को समयबद्ध सहायता प्रदान करने में अग्रणी भूमिका निभाते हैं।

इंदु श्रीवास्तव मोबाइल ऐप प्रबंधन की प्रमुख हैं—ऐप के विकास हेतु आवश्यक समन्वय, डेवलपर को सटीक जानकारी उपलब्ध कराना और विद्यार्थियों तक ऐप का

सफलतापूर्वक क्रियान्वयन सुनिश्चित करना, यह सब वे अत्यंत निष्ठा और दक्षता से करती हैं।

हिंदी यू.एस.ए. के सभी प्रमुख आयोजनों में ऑडियो/वीडियो प्रबंधन की ज़िम्मेदारी **अमित खरे और राजीव श्रीवास्तव** संभालते हैं। मंच की तकनीकी व्यवस्था, लाइव यूट्यूब प्रसारण, ध्वनि गुणवत्ता का नियंत्रण तथा महत्वपूर्ण क्षणों की फोटोग्राफी—इन सभी क्षेत्रों में उनकी विशेषज्ञता हर कार्यक्रम को उत्कृष्टता की नई ऊँचाइयों तक पहुँचाती है। इनके निरंतर प्रयासों से संगठन न केवल सुचारु रूप से संचालित होता है, बल्कि डिजिटल युग की आवश्यकताओं के अनुरूप निरंतर विकसित भी हो रहा है।

हिंदी पुस्तक स्टॉल समिति — साहित्यिक जागरूकता की अग्रदूत

हिंदी यू.एस.ए. में हिंदी भाषा और साहित्य के प्रसार को सशक्त बनाने में हिंदी पुस्तक स्टॉल समिति की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह समिति न केवल विद्यार्थियों और अभिभावकों को हिंदी पुस्तकों से जोड़ती है, बल्कि हर आयोजन में साहित्यिक वातावरण का निर्माण भी करती है। इस समिति का नेतृत्व **योगिता मोदी** द्वारा अत्यंत सक्रियता और समर्पण के साथ किया जाता है।

उनके साथ **संजय मोदी, स्वगता माने** तथा अन्य स्वयंसेवक अपनी उपलब्धता के अनुसार निरंतर सहयोग प्रदान करते हैं। इन सभी की विशेषता यह है कि वे किसी भी कार्यक्रम, किसी भी स्थान पर—जहाँ भी आवश्यकता हो, योगिता मोदी हिंदी पुस्तक स्टॉल लगाने के लिए सदैव तत्पर रहती हैं। पुस्तक स्टॉल के माध्यम से वे विद्यार्थियों, युवाओं और परिवारों को हिंदी पढ़ने की प्रेरणा देते हैं, जिससे भाषा और संस्कृति की जड़ें और भी मजबूत होती हैं।

स्टोरेज प्रबंधन समिति — संगठन की सबसे परिश्रमी और महत्वपूर्ण कड़ी

हिंदी यू.एस.ए. के सुचारु संचालन में जहाँ कई समितियाँ अपनी-अपनी भूमिका निभाती हैं, वहीं स्टोरेज प्रबंधन समिति संगठन की सबसे मेहनती और अत्यावश्यक इकाइयों में से एक है। पुस्तकों और सामग्री के विशाल स्तर पर वितरण का कार्य अत्यंत जटिल है, जिसे यह समिति अत्यधिक समर्पण और दक्षता के साथ संभालती है। इस समिति का नेतृत्व **राजीव राजपाल, मधु राजपाल और रचिता सिंह** द्वारा किया जाता है। हिंदी यू.एस.ए. के पास कई स्टोरेज स्थान हैं, जहाँ भारत से कंटेनर आने पर पुस्तकों को स्तर/कक्षा के अनुसार व्यवस्थित किया जाता है। यह कार्य न केवल समय साध्य है, बल्कि अत्यधिक श्रमसाध्य भी है फिर भी समिति इसे पूरी निष्ठा से पूरा करती है। इसके बाद पुस्तकों को विभिन्न स्कूलों तक पहुँचाने के लिए स्कूल समन्वयकों के साथ समन्वय किया जाता है।

कई हिंदी यू.एस.ए. की कुछ पाठशालाएँ न्यू जर्सी राज्य के बाहर स्थित हैं, इसलिए समिति कई डाक सेवाओं के माध्यम से पुस्तकों को पैक कर भेजने की जिम्मेदारी भी निभाती है। पैकिंग, लेबलिंग, ड्रॉप ऑफ के हर चरण में उनकी सूझ बूझ और मेहनत झलकती है। इन स्टोरेज स्थानों का उपयोग केवल पुस्तकों के लिए ही नहीं, बल्कि

हिंदी यू.एस.ए. के विभिन्न आयोजनों में विद्यार्थियों, शिक्षकों और निर्णायकों के लिए उपहार सामग्री सुरक्षित रखने के लिए भी किया जाता है।

सोशल मीडिया समिति — वैश्विक पहचान की प्रेरक शक्ति

डिजिटल युग में किसी भी संगठन की पहचान और पहुँच उसके सोशल मीडिया प्रभाव पर निर्भर करती है। हिंदी यू.एस.ए. की सोशल मीडिया समिति इस दिशा में संगठन की अग्रणी शक्ति है, जिसने संगठन को वैश्विक मंच पर स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस समिति का नेतृत्व **राखी वैश** द्वारा अत्यंत दूरदर्शिता और रचनात्मकता के साथ किया जाता है। उनके साथ **गुलशन मिर्ग और राजीव श्रीवास्तव** निरंतर सहयोग प्रदान करते हैं, जिससे यह टीम आधुनिक सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म का प्रभावी उपयोग कर संगठन की गतिविधियों को दुनिया भर तक पहुँचाती है।

समिति ने एक नई परंपरा स्थापित की है और हिंदी यू.एस.ए. के सभी कार्यक्रमों, उत्सवों, पिकनिक, शिक्षक सम्मान समारोह, युवा स्वयंसेवक गतिविधियों और हिंदी कविता प्रतियोगिताओं की झलकियाँ आकर्षक रूप में प्रस्तुत कर उन्हें वैश्विक दर्शकों तक पहुँचाया है। इन पोस्टों और वीडियो के माध्यम से न केवल संगठन में होने वाले कार्यक्रम सामने आते हैं, बल्कि हिंदी भाषा और संस्कृति के प्रति लोगों में उत्साह भी बढ़ता है। सोशल मीडिया एक तेज़ी से विकसित होता मंच है, और हिंदी यू.एस.ए. की यह समिति सदैव एक कदम आगे रहकर नेतृत्व का परिचय देती है। उनकी सक्रियता, रचनात्मकता और तकनीकी समझ ने संगठन को विश्व स्तर पर एक सशक्त पहचान प्रदान की है।

सजावट समिति — सौंदर्य, सृजनशीलता और आयोजन की शोभा

किसी भी कार्यक्रम की पहली छाप उसके वातावरण और सजावट से बनती है, और हिंदी यू.एस.ए. की सजावट समिति इस जिम्मेदारी को अत्यंत सृजनशीलता और समर्पण के साथ निभाती है। यह समिति सुनिश्चित करती है कि हर आयोजन न केवल सुव्यवस्थित हो, बल्कि सौंदर्य और आकर्षण से भी भरपूर दिखाई दे। इस समिति में **कविता प्रसाद** मंच सजावट का नेतृत्व करती हैं। रंगों, थीम और सौंदर्यबोध की उनकी समझ हर कार्यक्रम के मंच को एक विशिष्ट पहचान देती है। वहीं **राज मित्तल** पूरे आयोजन स्थल पर बैनरों की व्यवस्था संभालते हैं, जिससे कार्यक्रम का वातावरण और भी जीवंत और उत्सवपूर्ण बन जाता है।

इनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे स्वयंसेवकों की टीम के साथ बहुत सुबह ही स्थल पर पहुँच जाते हैं, ताकि सजावट का हर तत्व समय पर और सुंदरता से स्थापित हो सके। कार्यक्रम समाप्त होने के बाद भी वे उतनी ही जिम्मेदारी से सभी सजावटी सामग्री को हटाकर स्थल को पूरी तरह साफ सुथरा छोड़ते हैं। यह अनुशासन और समर्पण उनकी कार्य निष्ठा का प्रमाण है।

हिंदी यू.एस.ए. इस सभी समितियों का धन्यवाद करती है और शुभकामनाएं देती है कि इनके नेतृत्व में संगठन और आगे बढ़े और समाज को भारतीय संस्कृति और हिंदी भाषा से जोड़ सकें।

Phone: +1 (302) 668-7935

THE VEDIC EDGE

Where Ayurveda meets conscious living



True wellness begins with balance—of body, mind, and energy. At The Vedic Edge, we bring together authentic Ayurvedic wisdom and holistic practices to help you heal deeply and live with clarity.

Offerings:

- Ayurvedic Counseling for chronic conditions, inflammation & lifestyle alignment
- Mindfulness Sessions rooted in Vedic philosophy
- Chakra Balancing & Yogic Practices
- Sound Healing with Crystal Bowls



Neha with Dr. Vasant Lad

Guided by Neha, trained under esteemed Ayurvedic guru Vasant Lad, with a focus on bringing ancient healing into modern life.

Book your session
www.thevedicedge.com



ज्ञान-पिटारा

हिंदी यू.एस.ए. में शिक्षण के कुल कितने स्तर (Levels) निर्धारित हैं?

(क) ७ (ख) ८ (ग) ९ (घ) १०



उत्तर पृष्ठ १६ पर देखें



हिंदी यू.एस.ए. में स्वयंसेवक क्यों बनें?

मेरा नाम ज्योति गुप्ता है। पिछले आठ वर्षों से मैं वुडब्रिज हिंदी पाठशाला में उच्चस्तर-२ की अध्यापिका के रूप में अपनी सेवाएँ दे रही हूँ। भारत में आगरा विश्वविद्यालय से विज्ञान में परास्नातक (M.Sc.) करने के बाद मेरा हिंदी भाषा और अपनी जड़ों से जुड़ाव हमेशा बना रहा। मैं हिंदी यू.एस.ए. की अत्यंत आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे अपनी संस्कृति और मातृभाषा को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने का यह शानदार मंच प्रदान किया।

स्वयंसेवा केवल दूसरों की सहायता करने का ही माध्यम नहीं है, बल्कि यह व्यक्तिगत और सामाजिक विकास का एक सशक्त आधार भी है। जब हम निस्वार्थ भाव से समाज के प्रति अपना योगदान देते हैं तो इससे न केवल जरूरतमंदों के जीवन में सकारात्मक बदलाव आता है, बल्कि हममें दया, करुणा और संवेदनशीलता जैसे मानवीय गुणों का भी संचार होता है। यह प्रक्रिया हमें एक जिम्मेदार नागरिक बनाती है और हमारे आत्मविश्वास को नई ऊँचाइयों पर ले जाती है। व्यावहारिक दृष्टिकोण से देखें तो स्वयंसेवा नए कौशल सीखने का एक बेहतरीन मंच है। इसके माध्यम से हम सामूहिक कार्य, नेतृत्व और बेहतर संचार कला में निपुण बनते हैं, जो हमारे व्यावसायिक और व्यक्तिगत जीवन दोनों के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध होते हैं। मानसिक स्तर पर दूसरों की मदद करने से प्राप्त होने वाला संतोष तनाव को कम करता है और आंतरिक शांति प्रदान करता है। अंततः, स्वयंसेवा से मिला अनुभव हमारे व्यक्तित्व को निखारता है और हमें समाज के साथ गहराई से जुड़ने का अवसर देता है, जो भविष्य की हर राह में हमारे लिए एक अनमोल पूंजी साबित होता है। हिंदी यू.एस.ए. अमेरिका में हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने वाला एक ऐसा संगठन है, जिसमें स्वयंसेवा करना कई कारणों से महत्वपूर्ण और लाभदायक है:

भाषा और सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण: अमेरिका जैसे देश में रहते हुए अपनी मातृभाषा हिंदी को जीवित रखना एक चुनौती है। हिंदी यू.एस.ए. के माध्यम से आप

बच्चों और युवाओं को हिंदी भाषा, भारतीय संस्कारों और नैतिक मूल्यों से जोड़कर उन्हें अपनी जड़ों से जोड़े रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

युवा पीढ़ी का मार्गदर्शन और पोषण: यह मंच आपको नई पीढ़ी के साथ संवाद करने और उन्हें भारत के समृद्ध रीति-रिवाजों, परंपराओं और त्योहारों की गहराई समझाने का अनूठा अवसर देता है। आप बच्चों को भारत की विविधता और उसके गौरवशाली इतिहास के बारे में शिक्षित कर सकते हैं, जिससे उनमें अपनी संस्कृति के प्रति गर्व का भाव जागृत होता है।

व्यक्तिगत और सामाजिक विकास: स्वयंसेवा से न केवल सामाजिक संतुष्टि और मानसिक शांति मिलती है, बल्कि यह आपके नेतृत्व और संचार कौशल को भी निखारता है। विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों के साथ काम करने से आपकी सांस्कृतिक समझ व्यापक होती है और आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

भविष्य के लिए अनुभव: शिक्षण, आयोजन और टीमवर्क के क्षेत्र में यहाँ प्राप्त अनुभव आपके व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन के लिए एक अनमोल पूंजी साबित होता है।

संक्षेप में, हिंदी में स्वयंसेवा करना अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति एक निवेश है। यह आपको एक ऐसा मंच प्रदान करता है जहाँ आप न केवल समाज को कुछ वापस देते हैं, बल्कि एक शिक्षक और मार्गदर्शक के रूप में एक नई पहचान भी पाते हैं।

हिन्दी यू.एस.ए. की प्रतियोगिताएँ

आत्मविश्वास और संस्कृति का संगम

हिन्दी यू.एस.ए. का उद्देश्य केवल भाषा सिखाना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है। हमारी प्रतियोगिताएँ इसी लक्ष्य की प्राप्ति का एक सशक्त माध्यम हैं, जो बच्चों के जीवन पर गहरा और सकारात्मक प्रभाव डालती हैं।

हिन्दी महोत्सव: प्रतिभा का महाकुंभ

हमारी अधिकांश प्रतियोगिताओं का केंद्र 'हिन्दी महोत्सव' होता है। हिन्दी महोत्सव का उद्देश्य समाज में हिन्दी के प्रति जागरूकता पैदा करना, विद्यार्थियों को हिन्दी का मंच प्रदान करना तथा विभिन्न कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिताओं के माध्यम से विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति तथा देशभक्ति की भावना से जोड़ना है। यह केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि एक उत्सव है जहाँ बच्चे अपनी वर्ष भर की मेहनत को मंच पर प्रदर्शित करते हैं। इस महोत्सव के माध्यम से विद्यार्थियों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना जागृत होती है। जब बच्चे बड़े समूह के सामने अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं, तो उनका भाषाई संकोच दूर होता है और उनमें वह आत्मविश्वास पैदा होता है जो जीवन के हर क्षेत्र में काम आता है। यह आयोजन उन्हें अपनी जड़ों से जुड़ने और अपनी पहचान पर गर्व करने का अवसर प्रदान करता है।

कविता पाठ प्रतियोगिता: अभिव्यक्ति की पहली सीढ़ी

हिंदी साहित्य में कविताओं का विशेष महत्व रहा है। कविता न केवल भाषा की सुंदरता को व्यक्त करती है, बल्कि भावनाओं, संस्कारों और विचारों को भी सशक्त रूप से प्रस्तुत करती है। 'कविता पाठ प्रतियोगिता' हमारी संस्था की सबसे बड़ी और अत्यंत ही लोकप्रिय

प्रतियोगिता है जो कनिष्ठ स्तर से लेकर उच्च स्तर तक के सभी विद्यार्थियों के लिए समान रूप से आयोजित की जाती है। इसमें अधिकतम संख्या में विद्यार्थी भाग लेते हैं और विद्यार्थी व अभिभावक दोनों ही उत्साहपूर्वक इसमें शामिल होते हैं। यह प्रतियोगिता बच्चों के जीवन पर प्रारंभिक स्तर से ही प्रभाव डालना शुरू कर देती है:

उच्चारण में शुद्धता: कविता के लय और ताल के माध्यम से बच्चे शब्दों के सही उच्चारण और आरोह-अवरोह को सीखते हैं।

स्मरण शक्ति का विकास: लंबी कविताओं को याद करने से उनकी एकाग्रता और याददाश्त बढ़ती है।

भावों की अभिव्यक्ति: शब्दों के पीछे छिपे भावों को चेहरे और हाथों के संकेतों (expressions) से समझाना उन्हें एक बेहतर वक्ता बनाता है।

आत्मविश्वास: मंच पर दर्शकों के सामने प्रस्तुति देने से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास और नेतृत्व कौशल का विकास होता है।

नेतृत्व कौशल: उच्चस्तर-१ और २ के विद्यार्थियों को कार्यक्रम संचालन और प्रतिभागियों को मंच पर आमंत्रित करने की जिम्मेदारी से उनके मंच भय को दूर करने का तथा नेतृत्व गुणों को विकसित करने का अवसर मिलता है।

इस प्रकार यह प्रतियोगिता न केवल भाषा सीखने का माध्यम है, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास,

आत्मविश्वास और सांस्कृतिक जुड़ाव को भी सुदृढ़ बनाती है।

कनिष्ठ-१ (Starter-1): बाल अभिनय गीत प्रतियोगिता

कनिष्ठ-१ स्तर के नन्हे विद्यार्थियों के लिए 'बाल अभिनय गीत प्रतियोगिता' उनकी भाषाई यात्रा की एक अत्यंत उत्साहजनक शुरुआत है। इस प्रतियोगिता में विद्यार्थी संगीत की मधुर धुनों पर स्वयं गाकर या गीतों के अनुसार जीवंत अभिनय (Action Song) करते हैं। यहाँ मुख्य रूप से उन बाल गीतों को प्राथमिकता दी जाती है जो सरल होने के साथ-साथ शिक्षाप्रद भी हों, जिससे खेल-खेल में विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों और शब्दावली का विकास हो सके। इस प्रतियोगिता का बच्चों के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है:

प्रारंभिक भाषाई जुड़ाव: अभिनय के माध्यम से बच्चे हिंदी शब्दों के अर्थ को शारीरिक संकेतों से जोड़ना सीखते हैं, जिससे भाषा उनके लिए बोझ नहीं बल्कि मनोरंजन बन जाती है।

संकोच का निवारण: छोटी आयु में ही मंच पर आकर प्रस्तुति देने से बच्चों का शुरुआती संकोच (Stage fright) दूर होता है और उनमें भविष्य के लिए आत्मविश्वास की नींव पड़ती है।

रचनात्मक अभिव्यक्ति: संगीत और लय के साथ तालमेल बिठाने से उनकी रचनात्मकता और एकाग्रता में वृद्धि होती है।

कनिष्ठा-२ (Starter-2): पाठ्यक्रम संबंधी प्रतियोगिता

कनिष्ठा-२ स्तर हिन्दी यू.एस.ए. का वह महत्वपूर्ण पड़ाव है जहाँ ५ से ७ वर्ष के विद्यार्थी हिन्दी भाषा की समृद्ध दुनिया में अपना पहला कदम रखते हैं। इस स्तर में स्वर, गिनती, फल-सब्जियों और त्योहारों जैसे विषयों को कहानियों और खेलों के माध्यम से सिखाया जाता है। इन सीखे हुए पाठों को जीवंत रूप देने के लिए हिन्दी

महोत्सव में 'पाठ्यक्रम संबंधी प्रतियोगिता' का आयोजन किया जाता है, जिसमें विद्यार्थी नृत्य, नाटक, गीत या प्रस्तुतियों के माध्यम से अपनी प्रतिभा दिखाते हैं। इस प्रतियोगिता का बच्चों के विकास पर गहरा प्रभाव पड़ता है:

आत्मविश्वास का उदय: अनेक बच्चों के लिए बड़े मंच पर श्रोताओं के समक्ष अपनी कला दिखाने का यह पहला अवसर होता है, जो उनके मनोबल को अभूतपूर्व ऊँचाई देता है।

अनुशासन और कौशल: तैयारी की प्रक्रिया के माध्यम से बच्चे कम उम्र में ही अनुशासन, समय के सदुपयोग और सार्वजनिक प्रस्तुति (public speaking) के गुणों को आत्मसात करते हैं।

सृजनशीलता को प्रोत्साहन: शिक्षिकाओं के मार्गदर्शन में विद्यार्थी अपनी रचनात्मकता को प्रदर्शित करते हैं, जिससे उनके सीखने की प्रक्रिया आनंदमयी बन जाती है।

प्रथमा-१ (Beginner-1): सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक चेतना का विकास

प्रथमा-१ स्तर के विद्यार्थियों के लिए प्रतियोगिताएँ केवल भाषाई अभ्यास नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और महान व्यक्तित्वों से जुड़ने का एक सेतु हैं। पिछले कुछ वर्षों में इस स्तर के बच्चों ने देशभक्ति गीतों, भजनों और धार्मिक प्रसंगों पर आधारित ऐसी प्रभावशाली प्रस्तुतियाँ दी हैं जो दर्शकों के मन में गहराई से अंकित हो गई हैं। विशेष रूप से भारत के विभिन्न राज्यों की सांस्कृतिक विविधता, 'राम जी के पद' - जिनमें उन स्थानों का वर्णन था जहाँ प्रभु राम के चरण पड़े, और 'पंचतंत्र' की कालजयी कहानियों ने विद्यार्थियों की प्रस्तुति क्षमता को एक नई ऊँचाई दी है।

इस स्तर की प्रतियोगिताओं के लाभ:

सांस्कृतिक जड़ता का विस्तार: इन विषयों के माध्यम से विद्यार्थी अपनी जड़ों, भारत के भूगोल और पौराणिक

इतिहास के बारे में गहराई से सीखते हैं।

नैतिक मूल्यों का समावेश: पंचतंत्र जैसी कहानियों और महापुरुषों के जीवन वृत्तांतों के मंचन से बच्चों में ईमानदारी, साहस और सूझबूझ जैसे मानवीय गुणों का विकास होता है।

सार्वजनिक प्रस्तुति कौशल: विविध प्रकार की भूमिकाओं (जैसे ऐतिहासिक पात्र या कहानीकार) को निभाने से उनके भाषाई संकोच में कमी आती है और सार्वजनिक मंच पर बोलने का आत्मविश्वास बढ़ता है।

स्मरण शक्ति और लय का समन्वय: भजनों और पद-गायन के माध्यम से शब्दों के सही आरोह-अवरोह और लयबद्ध तरीके से बोलने का अभ्यास होता है।

प्रथमा-२ (Beginner-2): सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ाव और अभिव्यक्ति कौशल

प्रथमा-२ स्तर के विद्यार्थी प्रतिवर्ष हिन्दी महोत्सव में धार्मिक ग्रंथों, हिन्दी के महत्व और पाठ्यक्रम पर आधारित विषयों को नृत्य, नाटक या गीतों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। इन प्रतियोगिताओं का मुख्य उद्देश्य अमेरिका जैसे देश में पल रहे बच्चों को उनकी समृद्ध भारतीय विरासत और परंपराओं से जोड़ना है। यह उन विद्यार्थियों के लिए एक सेतु का कार्य करता है जो दो अलग-अलग संस्कृतियों के बीच सामंजस्य बिठाने का प्रयास कर रहे हैं, ताकि वे अपनी जड़ों का सम्मान करना सीखें।

विद्यार्थियों के विकास पर सकारात्मक प्रभाव:

प्रस्तुति और संवाद कौशल: अभिनय और कहानी कहने की कला के माध्यम से बच्चों के सार्वजनिक बोलचाल (Public Speaking) में सुधार होता है और उनका भाषाई संकोच दूर होता है।

टीम भावना और सहयोग: एक समूह के रूप में काम करने से विद्यार्थी आपसी सहयोग और सामंजस्य की अहमियत सीखते हैं।

आत्मविश्वास और मंच उपस्थिति: बड़े मंच पर दर्शकों

के सामने प्रदर्शन करने से उनके अंदर आत्मविश्वास और 'स्टेज प्रेजेंस' बढ़ती है, जो उनके भविष्य के शैक्षिक और व्यक्तिगत विकास में अत्यंत लाभदायक सिद्ध होती है।

सांस्कृतिक और भाषाई सम्मान: इन कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चों में हिन्दी भाषा, साहित्य और अपनी संस्कृति के प्रति गहरी समझ और सम्मान का भाव विकसित होता है।

मध्यमा-१ (Intermediate-1): सांस्कृतिक चेतना और व्यक्तित्व का विकास

मध्यमा-१ स्तर के विद्यार्थियों के लिए हिन्दी महोत्सव एक ऐसा मंच है जहाँ उनकी प्रतिभा को पंख मिलते हैं। पिछले २५ वर्षों में इस स्तर के बच्चों ने सामूहिक भजन, देशभक्ति गीत, लोक नृत्य और सामाजिक विषयों पर आधारित लघु नाटिकाओं के माध्यम से अपनी उत्साहपूर्वक सहभागिता दर्ज की है। इन प्रस्तुतियों का चयन स्तर के शिक्षकों और पाठशाला प्रबंधकों द्वारा महोत्सव की वार्षिक विषय-वस्तु (Theme) और समसामयिक मुद्दों को ध्यान में रखकर किया जाता है। प्रतियोगिता के माध्यम से सर्वांगीण लाभ:

सामुदायिक सामंजस्य: महोत्सव की तैयारी के दौरान पाठशाला के स्वयंसेवकों, विद्यार्थियों और अभिभावकों के बीच आपसी मेलजोल और एकजुटता बढ़ती है।

जीवन कौशल (Life Skills): गहन विचार-विमर्श और निरंतर अभ्यास से विद्यार्थियों में समय-प्रबंधन, अनुशासन, निष्ठा और कठिन परिश्रम करने की आदत विकसित होती है।

आत्मविश्वास और खेल भावना: बड़े मंच पर प्रस्तुति देने से जहाँ उनका आत्मविश्वास बढ़ता है, वहीं प्रतियोगिता के स्वरूप के कारण वे हार-जीत को हिम्मत और शालीनता से स्वीकार करना सीखते हैं।

भाषाई और सांस्कृतिक समृद्धि: तैयारी की इस अवधि में बच्चों का हिन्दी शब्दकोश समृद्ध होता है और उन्हें भारतीय जीवन-दर्शन एवं संस्कृति के विभिन्न पहलुओं

को निकट से समझने का अवसर मिलता है।

टीम भावना (Teamwork): सामूहिक प्रस्तुतियों के माध्यम से बच्चे एक लक्ष्य के लिए मिलकर काम करने और फोकस बनाए रखने की अहमियत समझते हैं। हमारा मानना है कि यह महोत्सव विद्यार्थियों के हिन्दी ज्ञान-वर्धन और व्यक्तित्व विकास के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जो हिन्दी यू.एस.ए. के मूल उद्देश्यों को सार्थक बनाता है।

मध्यमा-२ (Intermediate-2): नुक्कड़ नाटक - सामाजिक चेतना और निर्भीक अभिव्यक्ति

मध्यमा-२ स्तर के विद्यार्थी पिछले कई वर्षों से हिन्दी महोत्सव में 'नुक्कड़ नाटक' की गौरवशाली परंपरा को जीवंत कर रहे हैं। नुक्कड़ नाटक एक ऐसी नाट्य विधा है जो पारंपरिक बंद मंच की सीमाओं को तोड़कर खुले स्थानों, जैसे सड़क, चौक या बाजारों में सीधे जनमानस के बीच प्रस्तुत की जाती है। यद्यपि हमारे विद्यार्थी इसे महोत्सव के भव्य मंच पर प्रस्तुत करते हैं, किंतु इसकी आत्मा वही रहती है—तेज संवाद, प्रभावशाली संदेश और समाज को झकझोरने वाले गीत व नारे। इस स्तर के छात्रों ने अपनी कला का उपयोग विशेष रूप से हिन्दी की महत्ता समझाने और सामाजिक जागरूकता फैलाने के लिए किया है।

नुक्कड़ नाटक के माध्यम से व्यक्तित्व का विकास:

किताबी ज्ञान से परे अनुभव: यह विधा बच्चों को केवल रटने के बजाय वास्तविक अनुभव से सीखने का अवसर प्रदान करती है।

निर्भीक अभिव्यक्ति: नुक्कड़ नाटक विद्यार्थियों को साहसी बनाता है और उन्हें अपनी बात बिना किसी हिंसा के, तर्कों के साथ दूसरों तक पहुँचाने का कौशल सिखाता है।

नेतृत्व और टीम वर्क: अभिनय की इस प्रक्रिया में विद्यार्थी टीम के साथ तालमेल बिठाना और एक लीडर की तरह सोचना सीखते हैं।

रचनात्मकता और सामाजिक समझ: यह बच्चों में जटिल सामाजिक मुद्दों की गहरी समझ विकसित करता है और उनकी रचनात्मक सोच को विस्तार देता है। नुक्कड़ नाटक के माध्यम से हम यह गौरव के साथ कह सकते हैं कि इन विद्यार्थियों का सर्वांगीण व्यक्तित्व निखरता है, जो उन्हें समाज के भावी कर्णधार के रूप में तैयार करता है।

मध्यमा-३, उच्चस्तर-१ एवं २: नाट्य कला के माध्यम से सांस्कृतिक गौरव की प्रस्तुति

हिन्दी महोत्सव का सबसे प्रतीक्षित और भव्य आकर्षण 'नाटक प्रतियोगिता' है, जिसमें मध्यमा-३ के विद्यार्थी उच्चस्तर-१ और २ के साथ मिलकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं। यह त्रिकोणीय संगम न केवल कला का प्रदर्शन है, बल्कि यह हिन्दी भाषा, भारतीय संस्कृति और गौरवशाली इतिहास का एक जीवंत उत्सव है। इन नाटकों के माध्यम से भारत की गौरवशाली घटनाओं और हिंदू धर्म की प्रेरणादायक कहानियों को मंच पर जीवंत किया जाता है। विद्यार्थी अपने अभिनय और संवादों के द्वारा देशभक्ति, त्याग, सत्य, प्रेम और मानवीय मूल्यों का प्रभावशाली संदेश भी समाज तक पहुँचाते हैं। यह मंच दर्शकों और प्रतिभागियों, दोनों को अपनी जड़ों और समृद्ध विरासत से जोड़ने का एक सशक्त माध्यम बनता है।

विद्यार्थियों के जीवन पर पड़ने वाले विशेष लाभ:

रचनात्मकता और अभिनय क्षमता: यह प्रतियोगिता विद्यार्थियों को अपनी रचनात्मक सोच और उत्कृष्ट अभिनय कौशल को निखारने का एक सुनहरा अवसर प्रदान करती है।

भाषाई प्रगढ़ता और प्रेम: उच्च स्तर के इन नाटकों में भाग लेने से छात्रों का हिन्दी भाषा के प्रति अनुराग और गहरा होता है, जिससे उनकी अभिव्यक्ति में निखार आता है।

नेतृत्व और टीम वर्क: तीन अलग-अलग स्तरों के

विद्यार्थियों का एक साथ मिलकर काम करना उनमें आपसी सहयोग, नेतृत्व क्षमता और सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करता है।

हिन्दी महोत्सव की यह नाट्य प्रतियोगिता वास्तव में कला, संस्कृति और भाषा का वह संगम है जो समाज में सकारात्मकता का संचार करता है और हमारी आने वाली पीढ़ी को एक जागरूक और स्वाभिमानी नागरिक के रूप में तैयार करता है

उच्च स्तर-१ एवं २: व्याकरण एवं भाषा ज्ञान महा-मुकाबला

उच्च स्तर-१ और २ के विद्यार्थियों के लिए आयोजित होने वाली यह 'जेपार्डी' (Jeopardy) शैली की प्रतियोगिता न केवल उनके व्याकरण ज्ञान की परीक्षा लेती है, बल्कि उनके त्वरित चिंतन और व्यावहारिक कौशल को भी निखारती है। इस प्रतियोगिता को विभिन्न चुनौतीपूर्ण चक्रों और श्रेणियों में विभाजित किया गया है, जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण भाषाई विकास को सुनिश्चित करते हैं।

इस प्रतियोगिता का मुख्य आकर्षण इसकी विविधता है, जहाँ किताबी ज्ञान के साथ-साथ भाषा के व्यावहारिक प्रयोग पर भी बल दिया जाता है। प्रतियोगिता के विभिन्न चरण विद्यार्थियों में निम्नलिखित कौशलों का विकास करते हैं:

व्याकरण की सुदृढ़ नींव (Grammar Mastery):

जेपार्डी शैली में संज्ञा, सर्वनाम, लिंग, वचन, कारक, काल और विशेषण जैसे ६-८ श्रेणियों के प्रश्न विद्यार्थियों के व्याकरण बोध को गहराई से जाँचते हैं।

पठन और शब्द ज्ञान (Unseen Passage & Vocabulary):

अपठित गद्यांशों को माइक पर उचित भाव और विराम चिह्नों के साथ पढ़ने से बच्चों के उच्चारण और पठन गति में सुधार होता है। इसके उपरांत शब्दों के अर्थ बताने से उनका शब्दकोश भी समृद्ध होता है।

तात्कालिक भाषण और संवाद: पर्ची में दिए गए किसी

भी आकस्मिक विषय पर एक मिनट तक बोलना विद्यार्थियों के तात्कालिक चिंतन और बोलने के आत्मविश्वास को बढ़ाता है।

भाषिक सृजनात्मकता (Creative Talent & Tongue Twisters):

मुहावरों का अर्थ बताकर उनका वाक्यों में प्रयोग करना और कठिन 'टंग ट्विस्टर्स' (Tongue Twisters) को दोहराना उनके भाषाई प्रवाह और रचनात्मकता को नई ऊँचाई प्रदान करता है।

टीम वर्क और नेतृत्व (Teamwork & Leadership):

५-५ विद्यार्थियों की टीमों में बँटकर खेलना और सहपाठियों की सहायता से उत्तर देना उनमें आपसी सहयोग और नेतृत्व के गुणों को विकसित करता है।

निष्कर्ष: भाषा और संस्कृति के गौरवमयी २५ वर्ष हिन्दी यू.एस.ए. की पिछले २५ वर्षों की यह यात्रा केवल भाषा सिखाने तक सीमित नहीं रही है, बल्कि यह प्रवासी भारतीय बच्चों में आत्मविश्वास, नेतृत्व कौशल और अपनी सांस्कृतिक जड़ों के प्रति गर्व जागृत करने का एक महायज्ञ रही है। 'हिन्दी महोत्सव' और 'कविता पाठ' जैसी प्रतियोगिताओं के माध्यम से विद्यार्थियों ने न केवल व्याकरण और शब्दकोश का ज्ञान अर्जित किया, बल्कि उन्होंने मंच पर अपनी पहचान को निर्भीकता से प्रस्तुत करना भी सीखा है। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य अमेरिका में जन्मी और पली-बढ़ी भारतीय पीढ़ी को अपनी समृद्ध विरासत और स्वतंत्रता संग्राम के गौरवशाली इतिहास से जोड़ना है। आज, हमारी रजत जयंती के इस शुभ अवसर पर, हम यह विश्वास के साथ कह सकते हैं कि इन प्रतियोगिताओं ने विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को संवार कर उन्हें भविष्य के स्वाभिमानी नागरिकों के रूप में तैयार किया है। 'कर्मभूमि' के माध्यम से हम अपनी इस विरासत को निरंतर आगे बढ़ाने और आने वाली पीढ़ियों के जीवन में हिन्दी की लौ को प्रज्वलित रखने के लिए संकल्पबद्ध हैं।

भारत यात्रा

एक अद्भुत अनुभव की कहानी



मधु और राजीव राजपाल

भारत एक ऐसा देश है जहाँ विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं और धार्मिकताओं का संगम होता है। इसी विविधता को समझने और अनुभव करने के लिए हिंदी यू.एस.ए. ने पिछले दो दशकों से "भारत यात्रा" का आयोजन किया है। इस यात्रा में हर दो वर्ष में लगभग १४ छात्रों का चयन किया जाता है, जो एक कठोर चयन प्रक्रिया के माध्यम से अपनी योग्यता साबित करते हैं। यात्रा की योजना अमेरिका और भारत के स्वयंसेवकों के सहयोग से बनाई जाती है। छात्रों को एक पुरुष और एक महिला संरक्षक के साथ यात्रा करने का अवसर मिलता है। इस यात्रा का उद्देश्य छात्रों को भारतीय संस्कृति, धार्मिक स्थलों, कला और इतिहास का प्रत्यक्ष अनुभव कराना है। छात्रों को भारतीय सेना के साथ बातचीत करने, जैसे कि वाघा बॉर्डर पर, स्थानीय जीवन का अनुभव करने और पारंपरिक भारतीय भोजन का आनंद लेने का अवसर मिलता है। वे भारत के प्रमुख धार्मिक स्थलों, ऐतिहासिक स्थानों और विभिन्न पाठशालाओं का दौरा करते हैं, जहाँ वे स्थानीय छात्रों के साथ सांस्कृतिक अनुभव साझा करते हैं। इस यात्रा के बाद कई छात्रों ने इसे अपने जीवन का सबसे बेहतरीन अनुभव बताया। खुशी और आदि खुराना ने कहा, "इस यात्रा ने मेरी पहचान और शिक्षा की परिभाषा को नया आकार दिया। अब मैं अपनी जड़ों के प्रति अधिक जागरूक हूँ।" प्रिशा अग्रवाल ने भारतीय सांस्कृतिक उत्सवों की विविधता के प्रति अपने प्यार को व्यक्त किया। समीक्षा अग्रवाल ने अनुशासन की

सीख के बारे में कहा, "मैंने जल्दी उठना और अपनी चीजों को व्यवस्थित करना सीखा।" त्विषा शर्मा ने कहा, "इस यात्रा ने मुझे भारतीय संस्कृति के प्रति और अधिक स्पष्टता दी।" आस्था और रिद्धि राजपाल ने इसे अपनी कई पूर्व यात्राओं से भिन्न बताया और कहा, "अब हम खुद को केवल भारतीय मूल के बच्चों के रूप में नहीं, बल्कि असली भारतीय के रूप में देखते हैं।"

छात्रों की कुल राय के अनुसार निष्कर्षतः यह यात्रा केवल एक यात्रा नहीं थी, बल्कि स्वयं को और अपनी संस्कृति को समझने का एक महत्वपूर्ण अनुभव थी। छात्रों ने न केवल भारतीय संस्कृति का अनुभव किया, बल्कि अनुशासन, नेतृत्व और आत्मनिर्भरता जैसे महत्वपूर्ण गुण भी सीखे। हिंदी यू.एस.ए का यह प्रयास छात्रों के जीवन में एक अमिट छाप छोड़ता है और उन्हें अपने भारतीय मूल और संस्कृति की ओर और अधिक आकर्षित करता है। धन्यवाद, हिंदी यू.एस.ए. हमें यह जीवन भर का अनुभव देने के लिए। यह लेख उन छात्रों की यात्रा को समर्पित है, जिन्होंने भारत की विभिन्नताओं को अनुभव करते हुए अपनी पहचान को नई दिशा दी।



पहली भारत यात्रा—२००८

हिंदी यू.एस.ए. भारत-यात्रा



डॉ. सुनीता गुलाटी

नवीन भारत को देखने एवं प्राचीन भारत को समझने की यात्रा



राजीव श्रीवास्तव

आँखों में सजे सपनों की चमक और हृदय में मातृभूमि से जुड़ने की गहरी आकांक्षा लिए हमने “एक भारत, श्रेष्ठ भारत” के संकल्प के साथ अपनी यात्रा आरंभ की। यह केवल एक शैक्षणिक भ्रमण नहीं, बल्कि अपनी जड़ों को समझने और अपनी पहचान को महसूस करने की एक भावनात्मक पहल थी। हमारा उद्देश्य था — भारत की गौरवशाली विरासत को जानना और साथ ही नवभारत की प्रगतिशील सोच और विकास को निकट से देखना। जिन स्थानों की यात्रा हमारे कार्यक्रम में शामिल थी, उनके इतिहास, भूगोल और सांस्कृतिक महत्व का गंभीर अध्ययन हमने पहले ही कर लिया था, ताकि यह अनुभव केवल दर्शनीय न रहकर ज्ञानवर्धक और आत्मस्पर्शी बन सके। २० दिसंबर को जब यह यात्रा प्रारंभ हुई, तब उसके पीछे छह से नौ महीनों की निरंतर मेहनत, समर्पण और सूक्ष्म तैयारी का सशक्त आधार था। यह प्रयास केवल एक कार्यक्रम की तैयारी नहीं, बल्कि अपनी भाषा, संस्कृति और मातृभूमि से गहरे संबंध को साकार करने की एक सच्ची साधना थी।



दिल्ली: भारत की राजधानी



महक भार्गव

सी.सी.ए. विद्यालय, गुरुग्राम

दिल्ली स्थित सी.सी.ए. विद्यालय, गुरुग्राम की हमारी यात्रा अत्यंत स्मरणीय और उत्साहपूर्ण रही।

विद्यालय के प्रवेश द्वार पर एक भव्य बैंड द्वारा हमारा स्वागत किया गया, जिससे वातावरण गरिमामय और

उल्लासपूर्ण हो उठा। स्वागत-पटल पर हमारे आगमन का संदेश अंकित था, जिसने हमें विशेष सम्मान का अनुभव कराया। इसके पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ, जिसमें दोनों पक्षों ने अपनी-अपनी प्रस्तुतियाँ दीं। हमने भांगड़ा और घूमर जैसी विभिन्न भारतीय नृत्य शैलियों को सम्मिलित करते हुए एक फ्यूजन नृत्य प्रस्तुत किया, जबकि वहाँ के विद्यार्थियों ने भी हमारे साथ उत्साहपूर्वक नृत्य किया और अपनी ओर से भी सुंदर प्रस्तुति दी। दोनों विद्यालयों द्वारा नुक्कड़ नाटक भी प्रस्तुत किए गए। हमारा नाटक “नव भारत” की सोच पर आधारित था, जिसमें नए और पुराने भारत के अंतर को दर्शाया गया, जबकि उनके नाटक में पर्यावरण संरक्षण, पुनः उपयोग और पुनर्चक्रण का प्रभावशाली संदेश दिया गया। इसके बाद हमें पूरे विद्यालय का भ्रमण कराया गया, जहाँ हमने उनकी कक्षाएँ, गतिविधियाँ और विद्यालय जीवन को निकट से देखा। इस अनुभव ने हमारी उस धारणा को बदल दिया कि भारत में विद्यालय केवल पढ़ाई पर केंद्रित होते हैं; वहाँ नृत्य, संगीत, खेल और अन्य सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों को भी समान महत्व दिया जाता है। अंत में हमने ‘खो-खो’ खेलना सीखा और साथ मिलकर खेला, जो अत्यंत आनंददायक और उत्साहवर्धक अनुभव रहा।

संघ मुख्यालय

पहले कार्यक्रम और विद्यालय भ्रमण के बाद, हमने

दिल्ली में स्थित संघ कार्यालय (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, RSS) का दौरा किया। RSS एक सामाजिक संगठन है जिसकी स्थापना १९२५ में हुई थी और इसका उद्देश्य भारत में राष्ट्रभक्ति, अनुशासन और समाज सेवा को बढ़ावा देना है। यह संगठन शिक्षा, सामाजिक कार्य और देशभक्ति के मूल्यों को लोगों में विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करता है। हमें बताया गया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी भी पहले RSS के स्वयंसेवक रहे हैं और वहीं से उन्होंने राष्ट्र और समाज की सेवा के लिए प्रेरणा पाई। वहाँ पहुँचकर सबसे पहले हमने भगवान हनुमान की पूजा की, क्योंकि वे संघ और राष्ट्रभक्ति के आदर्शों का प्रतीक माने जाते हैं। इसके बाद हमें संघ के सदस्यों से मिलकर उनके जीवन, प्रशिक्षण और समाज सेवा के कार्यों के बारे में जानने का अवसर मिला। हमने देखा कि ये लोग कितनी निष्ठा और अनुशासन के साथ काम करते हैं और समाज के लिए समर्पित रहते हैं। उनके अनुभव और दृष्टिकोण को देखकर हमें यह समझ आया कि देश की सेवा में अनुशासन, सहयोग और समर्पण कितने महत्वपूर्ण हैं। यह अनुभव अत्यंत प्रेरणादायक और ज्ञानवर्धक रहा।



माही सुनेजा

भारतीय संसद

भारत यात्रा के दौरान संसद भवन का दौरा मेरे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण अनुभव रहा। संसद भवन नई दिल्ली के सेंट्रल विस्टा क्षेत्र में स्थित है।

भारत की संसद दो सदनों —

लोकसभा और राज्यसभा — से मिलकर बनी है। हमें दोनों सदनों को देखने का अवसर मिला, जिससे संसदीय कार्यप्रणाली को समझने में सहायता मिली। हमें बताया गया कि भारत में संसदीय प्रणाली लागू है, जिसमें प्रधानमंत्री सरकार का प्रमुख होता है और वह संसद के

प्रति उत्तरदायी होता है। संसद भवन के भीतर हमने संगीत, कला और संविधान से संबंधित विभिन्न प्रदर्शनी देखीं। बाहर निकलते समय हमें संसद टी.वी. द्वारा साक्षात्कार देने का अवसर मिला। हमें लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला जी से मिलने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। मैंने उनके समक्ष अपनी कविता प्रस्तुत की, जो मेरे लिए अत्यंत सम्मान का क्षण था। इस अनुभव ने भारत की विधायी प्रक्रिया के प्रति मेरी समझ को और गहरा किया।

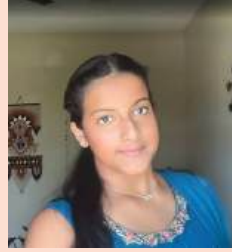
भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद

हमने भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद का भी दौरा किया। इसकी स्थापना १९५० में मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद द्वारा की गई थी। यह संस्था भारत और अन्य देशों के बीच सांस्कृतिक संबंधों को सुदृढ़ करने का कार्य करती है। वहाँ हमारी मुलाकात नंदिनी सिंगला जी और अभय कुमार जी से हुई। उन्होंने परिषद की गतिविधियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी और बताया कि यह विदेशी छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान करती है तथा विभिन्न देशों में भारतीय सांस्कृतिक केंद्र संचालित करती है। प्रश्नोत्तर सत्र में हमने चर्चा की कि विदेश में रहने वाली नई पीढ़ी भारत के लिए किस प्रकार योगदान दे सकती है। हमें अभय कुमार जी द्वारा लिखित हनुमान चालीसा की हस्ताक्षरित प्रति भी प्राप्त हुई। वहाँ हमने अपना नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया, जो एक यादगार अनुभव रहा।

गुरुद्वारा बंगला साहिब

यात्रा के अंतिम दिन हम गुरुद्वारा बंगला साहिब गए, जो नई दिल्ली के कनॉट प्लेस क्षेत्र के निकट स्थित है। इसका ऐतिहासिक संबंध सिखों के आठवें गुरु, गुरु हर किशन जी से है। गुरुद्वारा परिसर में प्रवेश से पूर्व हमने सिर ढका और जूते उतारे, जो सिख परंपरा का अनिवार्य नियम है। दरबार साहिब में गुरु ग्रंथ साहिब स्थापित है, जो सिख धर्म का पवित्र ग्रंथ है। गुरुद्वारे का स्वर्ण गुंबद और विशाल सरोवर अत्यंत आकर्षक हैं। इसके पश्चात

हम लंगर हॉल में गए। लंगर की परंपरा गुरु नानक देव जी द्वारा प्रारंभ की गई थी, जहाँ सभी लोगों को निःशुल्क भोजन कराया जाता है। वहाँ हमने सेवा, समानता और विनम्रता की भावना को निकट से अनुभव किया।



श्रावणी मगदुम

इंडिया गेट

इंडिया गेट नई दिल्ली में स्थित एक ऐतिहासिक स्मारक है, जिसे प्रथम विश्व युद्ध में शहीद हुए भारतीय सैनिकों की स्मृति में बनाया गया था।

यह लाल पत्थरों से निर्मित है और इसका डिजाइन फ्रांस के आर्क डी ट्रायम्फ से प्रेरित माना जाता है। यह गणतंत्र दिवस परेड का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। पहले इसके आसपास का क्षेत्र राजपथ कहलाता था, जिसे अब कर्तव्य पथ के नाम से जाना जाता है, जिससे औपनिवेशिक विरासत के स्थान पर नागरिक कर्तव्य की भावना को दर्शाया गया है। पहले इसके नीचे अमर जवान ज्योति जलती थी, जिसे बाद में राष्ट्रीय युद्ध स्मारक में स्थानांतरित कर दिया गया और वहाँ नेताजी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा स्थापित की गई। शाम के समय यहाँ तिरंगे रंगों की रोशनी में सजा दृश्य अत्यंत आकर्षक और भावनात्मक होता है। इसके बाद हम राष्ट्रीय युद्ध स्मारक गए, जहाँ अमर जवान ज्योति स्थापित है। यह स्मारक १९४७ के बाद देश के लिए शहीद हुए लगभग २५,००० सैनिकों की स्मृति में बनाया गया है, जिनके नाम इसकी दीवारों पर अंकित हैं। इस स्मारक के चार प्रमुख चक्र हैं—अमर चक्र, वीरता चक्र, त्याग चक्र और रक्षक चक्र—जो भारतीय सैनिकों के साहस और बलिदान का प्रतीक हैं। वहाँ का वातावरण बेहद भावुक कर देने वाला था। हमारे सैनिक देश की रक्षा के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर देते हैं, यह सोचकर गर्व और सम्मान की भावना मन में जाग उठी।

प्रधानमंत्री संग्रहालय

प्रधानमंत्री संग्रहालय नई दिल्ली में स्थित एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल है, जहाँ भारत के सभी प्रधानमंत्रियों के जीवन, योगदान और देश के विकास की यात्रा को आधुनिक तकनीक के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। यहाँ चित्रों, दुर्लभ वस्तुओं और इंटरैक्टिव प्रदर्शनों के जरिए उनके कार्यों और उपलब्धियों को रोचक ढंग से

समझाया गया है, जिससे देश के इतिहास को समझना आसान हो जाता है। दिन के अंत में यहाँ एक आकर्षक लाइट और साउंड शो आयोजित होता है, जिसमें लेजर लाइट, ध्वनि दृश्य प्रभावों के साथ भारत की प्रमुख उपलब्धियों को दर्शाया जाता है। यह शो शाम के समय होता है और संग्रहालय की यात्रा को एक यादगार अनुभव बना देता है।



उदयपुर: झीलों की अद्भुत नगरी



सिटी पैलेस

भारत यात्रा के सभी अनुभव बहुत ज्ञानवर्धक और रोचक थे। लेकिन उदयपुर की यात्रा मेरे लिए बहुत विशेष थी। इतिहास में रुचि और मेरा ननिहाल होने के कारण उदयपुर का मेरे जीवन में विशेष स्थान है। वहाँ के दर्शनीय स्थल जैसे कि सिटी पैलेस, सहेलियों की बाड़ी आदि आज भी हमें भारत के गौरवशाली इतिहास की जीती जागती कहानी सुनाते हैं। सिटी पैलेस के भव्य द्वार, सुंदर झरोखे,

तरन सिंह

विशाल आँगन तथा वहाँ सुरक्षित रखी गई ऐतिहासिक कलाकृतियाँ, जैसे कि शस्त्र, चित्रकला और प्राचीन वस्तुएँ, मेवाड़ के राजपूती वैभव और समृद्ध परंपरा की जीवंत कहानी सुनाती हैं। उदयपुर की पावन धरती पर महाराणा प्रताप जैसे पराक्रमी राजा हुए हैं जिन्होंने अनेक कठिनाइयों का सामना करके और घास की रोटी खाकर भी शौर्य के साथ देश और धर्म की रक्षा का युद्ध किया। ऐसे पावन स्थल पर जाना मेरे लिए बहुत भावपूर्ण था। मेवाड़ की महारानी साहिबा महिमा कुमारी जी से मिलना एक बहुत ही अनोखा अनुभव था। उन्होंने बहुत स्नेह के

साथ हमारा स्वागत और सत्कार किया। महारानी साहिबा न केवल उदयपुर के लोगों के लिए समाज सेवा करती हैं बल्कि लोक सभा की निर्वाचित सदस्य के रूप में अपने राज्य का प्रतिनिधित्व करती हैं और देश की सेवा करती हैं। उन्होंने हमें बताया कि उनके महल के आस पास की जमीन संरक्षित है क्योंकि प्रकृति भी हमारे इतिहास का ही हिस्सा है। मुझे उनका यह संदेश बहुत ही अच्छा लगा कि हम सभी को देश सेवा के लिए प्रकृति का संरक्षण, राजनीति और समाज सेवा में योगदान देना चाहिए।



आरव गुप्ता

सहेलियों की बाड़ी एवं दाल बाटी का भोजन

सिटी पैलेस देखने के बाद हम श्री कृष्णा बिस्ट्रो गए, जो उदयपुर का एक बहुत ही प्रसिद्ध रेस्टोरेंट है। वहाँ काफी लंबी प्रतीक्षा थी, लेकिन जब

हम अंदर पहुँचे और दाल-बाटी-चूरमा के स्वादिष्ट भोजन का आनंद लिया तो हम सब पूरी तरह तृप्त हो गए। दाल-बाटी-चूरमा राजस्थानी संस्कृति का एक अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसे अनुभव करने का हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ।

भोजन करने के बाद हम सहेलियों की बाड़ी गए। यह उदयपुर का एक अत्यंत सुंदर और ऐतिहासिक उद्यान है, जिसे रानियों और उनकी सखियों के मनोरंजन तथा विश्राम के लिए बनवाया गया था। इस बाग में सुंदर फव्वारे, हरियाली और शांत वातावरण देखने को मिला। कहा जाता है कि जब राजस्थान पर मुगलों के आक्रमण हुए, तब महिलाओं का बाहर निकलना सुरक्षित नहीं था। इसलिए राजा ने अपनी रानियों और उनकी सखियों के लिए यह बाग बनवाया, जहाँ वे सुरक्षित वातावरण में विश्राम कर सकें और आनंद ले सकें।



राजस्थान का भोजन – दाल बाटी



रजत जयंती का है उल्लास, हिन्दी के संग सबका विकास।
निरंतर बढ़ता रहे, हमारा यह अटूट विश्वास।

अहमदाबाद, वड़ोदरा और केवड़िया: एकता की यात्रा



सिद्धि अय्यगारि

अडालज वाव

हमारी अडालज वाव की यात्रा अविस्मरणीय रही। वाव की गहराई, बारीक नक्काशी और संतुलित बनावट देखकर प्राचीन भारतीय वास्तुकला की बारीकी और सौंदर्य का जीवंत अनुभव हुआ। इसे बारिश का पानी संचित करने और लोगों की जरूरतों को पूरा करने के लिए बनाया गया था, जो उस समय के लोगों की व्यावहारिक समझ और प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता को दर्शाता है। लेकिन जैसा हम सोचते हैं, वैसा हमेशा नहीं होता। जब यह वाव बन रही थी, उस समय वहां के महाराज युद्ध में वीरगति को प्राप्त हो गए। उनके शत्रु मुगलों ने राज्य पर अपना शासन स्थापित कर लिया और वहीं की वर्तमान महारानी से विवाह करना चाहा। पर महारानी भी एक वीरांगना थीं। उन्होंने अपने दुख को भुला कर प्रजा के हित में मुगलों से वाव बनवाई और महाराज का अधूरा कार्य पूरा किया। प्रजा के प्रति कर्तव्य पूरे करने के बाद अब उन्हें अपने सम्मान की रक्षा करनी थी। उन्होंने शत्रु के आदेशों को आत्मसमर्पण करने के बदले स्वयं को वाव को समर्पित कर दिया और मृत्यु तक मुगलों के हाथ में न आकर अपने सम्मान और राज्य की गरिमा को बचाए रखा। यह कहानी निष्ठा, साहस और समर्पण की मिसाल है, और यह सिखाती है कि कभी-कभी समाज या परिवार के हित में कठिन निर्णय लेने पड़ते हैं। इस कारण अडालज वाव सिर्फ एक स्मारक नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर और जीवन की सीख का प्रतीक भी है।

साबरमती आश्रम

साबरमती आश्रम की यात्रा भी अत्यंत प्रभावशाली रही। साबरमती नदी के किनारे स्थित यह आश्रम महात्मा गांधी के सरल, अनुशासित और मूल्य-प्रधान जीवन का

परिचायक है। उनके कमरे, रसोई और चर्खा देखकर यह स्पष्ट हो गया कि उनके विचार और दिनचर्या पूरी तरह सत्य, अहिंसा और आत्मनिर्भरता के सिद्धांतों पर आधारित थे। आश्रम की सादगी और शांत वातावरण उनके जीवन की सोच को सीधे दर्शाता है। आज यह आश्रम संग्रहालय बन चुका है, और गांधी जी के विचार और जीवनशैली को लोगों तक पहुँचा रहा है और उन्हें प्रेरित कर रहा है। यहाँ आकर मुझे यह अनुभव हुआ कि वास्तविक नेतृत्व हमेशा मूल्य और अनुशासन की नींव पर टिका होता है।



कनिका सेक्सरिया

लक्ष्मी विलास पैलेस

वड़ोदरा में लक्ष्मी विलास पैलेस देखने का अनुभव बहुत शानदार था। यह महल गायकवाड़ परिवार का है।

गायकवाड़ वंश मराठा साम्राज्य से

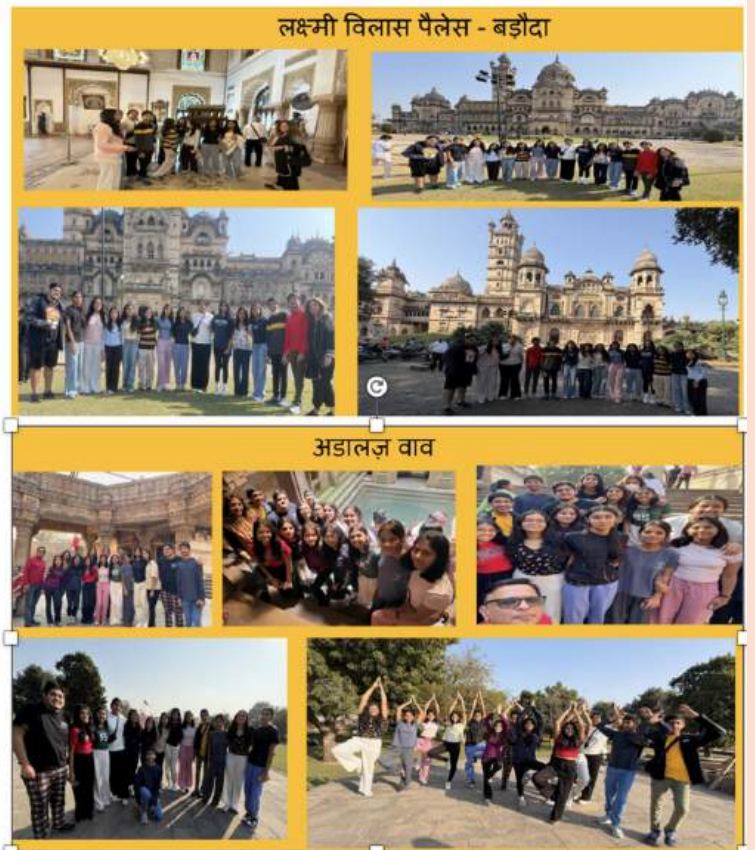
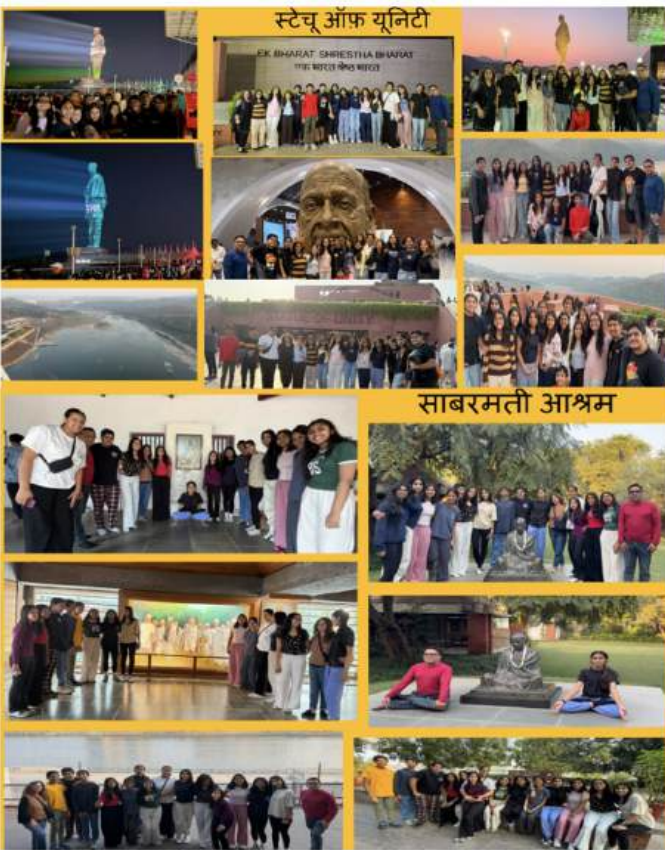
जुड़ा एक प्रमुख राजघराना था, जिसने १८ वीं सदी में बड़ौदा में अपना शासन स्थापित किया। इस वंश की नींव पिलाजी राव गायकवाड़ ने रखी और बाद में यह रियासत भारत की सबसे समृद्ध और प्रगतिशील रियासतों में गिनी जाने लगी। विशेष रूप से महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ तृतीय के शासनकाल में शिक्षा, सामाजिक सुधार और प्रशासनिक विकास को अत्यधिक बढ़ावा मिला। उन्होंने १८९० में भव्य लक्ष्मी विलास पैलेस का निर्माण कराया, जो भव्य वास्तुकला शैली में बना विश्व के सबसे बड़े निजी महलों में से एक माना जाता है। लगभग ५०० एकड़ में फैला यह महल आज भी गायकवाड़ परिवार का निवास है और वड़ोदरा की सांस्कृतिक पहचान तथा शाही विरासत का प्रतीक बना हुआ है।

स्टॉच्यू ऑफ़ यूनिटी - केवड़िया

इसके बाद हम केवड़िया में स्टेचू ऑफ़ यूनिटी देखने गए,

जो गुजरात में नर्मदा नदी के किनारे स्थित है। भारत के प्रथम उपप्रधानमंत्री और गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल को समर्पित विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा (१८२ मीटर) है। इसका निर्माण २०१८ में राष्ट्र की एकता और अखंडता के प्रतीक के रूप में किया गया, क्योंकि सरदार पटेल ने स्वतंत्रता के बाद ५०० से अधिक रियासतों को एकजुट कर आधुनिक भारत के निर्माण में निर्णायक भूमिका निभाई थी। यह प्रतिमा केवल एक स्मारक नहीं, बल्कि राष्ट्रीय एकता, मजबूत नेतृत्व और देशभक्ति का प्रतीक है। आज यह भारत के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से

एक है और लोगों को देश के इतिहास और एकीकरण की प्रेरणादायक कहानी से जोड़ती है। इसके बाद हमने एक अनोखा लाइट और साउंड शो भी देखा, जिसमें मूर्ति के ऊपर सरदार वल्लभभाई पटेल की कहानी चित्रों में दिखाई गई और इसके साथ उनके “एक भारत सर्वश्रेष्ठ भारत” के उद्देश्य के बारे में बताया गया। इस यात्रा पर मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला और बहुत अनोखे अनुभव मिले। यह एक ऐसी यात्रा है जो हम सब आजीवन नहीं भूलेंगे।



अविनाशी काशी (वाराणसी): मोक्षदायनी भारतीय प्राचीन नगरी



समीक्षा अग्रवाल

काशी के गंगा घाट

अविनाशी काशी। एक ऐसी प्राचीन नगरी जिसका न कोई आरंभ है और न कोई अंत। काशी शब्द का अर्थ है, प्रकाश देने वाली नगरी। जिस स्थान से ज्ञान का प्रकाश चारों ओर फैलता

है, उसे काशी कहते हैं। इसी नगरी का नाम वाराणसी भी है, क्योंकि यहां पर दो नदियां मिलती हैं, वरन, और असी। यह भारत की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में भी जानी जाती है। काशी का वर्णन ऋग्वेद में भी हुआ है। यहाँ पर २,००० से ज्यादा मंदिर हैं और यह गंगा नदी के किनारे बसी है। मुझे काशी सबसे ज्यादा पसंद आई क्योंकि यहीं से हमारी भारत की धार्मिक और आध्यात्मिक यात्रा की शुरुआत हुई। बनारस पहुँचकर हम सबसे पहले गंगा आरती के दर्शन करने गए। गंगा आरती के खत्म होने के बाद हम सब नाव की सवारी पर जाने के लिए बहुत उत्सुक थे। हमने अपनी नाव की यात्रा नमो घाट से आरंभ की और दशाश्वमेध घाट तक गए, और फिर नमो घाट पर वापस आ गए। बनारस में लगभग ८४ घाट हैं, जिनमें से १०-१२ घाट हमने अपनी नाव यात्रा के समय देखे। हमने अद्भुत मणिकर्णिका भी घाट भी देखा जहाँ पर माना जाता है कि जिसका यहाँ अंतिम संस्कार होता है उसे निश्चित रूप से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

इस समय मैं अपने इतिहास और संस्कृति के और करीब महसूस कर रही थी। इस यात्रा पर बहुत नए दोस्त बनाए, और बहुत नई चीजें भी सीखीं। इस यात्रा ने मुझे सिखाया कि मैं अपने माता-पिता के बिना खुद को संभाल सकती हूँ। यह मेरे लिए हमेशा एक यादगार अनुभव रहेगा, जिसकी यादें मेरे हृदय के करीब हमेशा रहेगी।



देविका लखोटिया

काशी विश्वनाथ

हमने वाराणसी में बहुत सारे मंदिरों के दर्शन किए जैसे – काशी विश्वनाथ संकटमोचन, रामचरितमानस और दुर्गा मंदिर। काशी विश्वनाथ मंदिर यहाँ का सबसे प्रसिद्ध मंदिर है, जो

भगवान शिव के १२ ज्योतिर्लिंगों में से एक है। मुगलों के समय में काशी विश्वनाथ मंदिर का एक हिस्सा तोड़ दिया गया था और बाद में इसे फिर से बनाया गया। आज भी पास में मस्जिद दिखाई देती है। हम बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी भी देखने गए और उसके बारे में जानकारी भी प्राप्त की। बीएचयू (BHU) को एशिया के सबसे बड़े आवासीय विश्वविद्यालयों में गिना जाता है। मेरे नानाजी जो कि एक डॉक्टर थे, उन्होंने बीएचयू से ही पढ़ाई की थी। हम सारनाथ भी गए जहाँ भगवान बुद्ध ने ज्ञान प्राप्ति के बाद अपना पहला उपदेश दिया था। हमने वहाँ कई स्तूप देखे जो एक अनोखा अनुभव था। यहाँ का शांत वातावरण, स्तूपों और विहारों की स्थापत्य कला, तथा पेड़ों से घिरा हिरण उद्यान साधना और ध्यान के लिए विशेष रूप से उपयुक्त माना जाता है। बनारसी साड़ी की परंपरा वाराणसी में कई सौ साल पुरानी मानी जाती है। हमने देखा और सीखा कि बनारसी साड़ियाँ कैसे बनाई जाती हैं। हमें बताया गया कि हाथ से बनाने में एक वर्ष में केवल ३ बनारसी साड़ियाँ बनती हैं। हैंडमेड बनारसी की कीमत आमतौर पर पावरलूम से काफी अधिक होती है, क्योंकि समय और मेहनत बहुत ज्यादा लगती है। वाराणसी की यात्रा मुझे हमेशा याद रहेगी। मुझे यहाँ आकर प्राचीन भारत को समझने का बहुत अच्छा अवसर मिला। मैंने जाना कि मुगलों और बाहर के लोगों ने आकर हमारे मंदिरों को तोड़ दिया लेकिन हम लोग दृढ़ रहे और अपने धर्म और संस्कृति को बचाए रखा।

गंगा आरती [नमो घाट]



घाटों का दर्शन



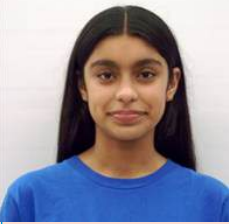
काशी विश्वनाथ



बनारस हिंदू विश्वविद्यालय / सारनाथ/बनारसी



अयोध्या: भगवान श्री राम की जन्म भूमि



त्विशा शर्मा

श्री राम जन्मभूमि

पूरी भारतयात्रा बहुत रोमांचक थी, लेकिन जिस पल का मैं २६ जनवरी, २०२४ उद्घाटन की तारीख, से इंतज़ार कर रही थी, वह राम मंदिर था। मैं आप सभी को अयोध्या में राम मंदिर के अपने अनुभव के बारे में बताने के लिए उत्साहित हूँ। "अयोध्या" एक ऐसा स्थान जो कि हमारे आराध्य मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की जन्मभूमि है। अयोध्या - शब्द के दो अर्थ हैं, एक जिसे युद्ध से जीता न जा सके और दूसरा अयुद्ध, जहाँ कभी युद्ध होता ही न हो। राम मंदिर के निर्माण से ही मेरी अयोध्या में जाने की प्रबल इच्छा थी और भारत यात्रा के समय मेरा यह सपना पूर्ण हुआ। बाबा मोर्य के मार्गदर्शन में भगवान श्री राम के बाल रूप के दर्शन सुगमता से हो गए। राम लला के दर्शन करने के बाद हम राम दरबार देखने गए। मंदिर के दरवाज़े शुद्ध सोने

के बने थे और बहुत साफ़-सुथरे थे। इसे १,००० वर्ष से ज्यादा समय तक चलने के लिए डिज़ाइन किया गया है। उसके बाद हमने मंदिर के चारों ओर परिक्रमा की और प्राकृतिक सुंदरता और सुंदर वास्तुकला को देखा। राम लला की मूर्ति बहुत सुंदर थी। मैं लोगो की भक्ति और आँखों में आँसू देख कर निःशब्द और भक्तिमय हो गई। मुझे और मेरे मित्रों को नववर्ष में जागरण अखबार के साथ अपने अनुभव शेयर करने का मौका मिला। इससे मेरी अयोध्या यात्रा ओर भी यादगार बन गई।



खुशी खुराना

रंगमहल एवं हनुमानगढ़ी

मेरी अयोध्या की यात्रा, भारत यात्रा के मध्यम से, सच में जीवन में एक बार मिलने वाला अनुभव रहा। भव्य राम मंदिर में जाकर रामलला के दर्शन करना मेरे लिए बहुत भावुक क्षण था। दर्शन के पश्चात हमने रंग महल भी देखा, जहाँ

मान्यता है कि भगवान राम अपने तीनों भाइयों और उनकी पत्नियों के साथ निवास करते थे। उस स्थान पर जाकर ऐसा लगा जैसे रामायण के दृश्य जीवंत हो उठे हों। पूरे शहर में बंदरों की चहल-पहल भी देखने को मिली, जो अयोध्या की खास पहचान है। इसके बाद हम हनुमान गढ़ी गए। वहाँ बहुत भीड़ थी, फिर भी हमें बहुत अच्छे से और शांतिपूर्वक दर्शन करने का अवसर मिला। पूरा अनुभव अत्यंत आध्यात्मिक और आनंदमय रहा। मैं हिन्दी यू.एस.ए. को दिल से आभार धन्यवाद करती हूँ, जिन्होंने हमारी पूरी यात्रा को इतना सुगम और यादगार बनाया। यह यात्रा मेरे जीवन की अमूल्य स्मृति बन गई है।



अन्वी सिंह

अयोध्या से लखनऊ

राम मंदिर के दर्शन मेरे लिए पूरी यात्रा के सबसे शांत और आध्यात्मिक पलों में से एक रहे। मंदिर में प्रवेश करते ही जो भक्ति और सकारात्मक ऊर्जा महसूस हुई, उसने मन को तुरंत

सुकून से भर दिया। राम लला के दर्शन करते समय एक अलग ही भावनात्मक जुड़ाव महसूस हुआ, मानो उस पल में समय ठहर सा गया हो। इसके बाद लखनऊ की यात्रा ने मेरी इस भारत यात्रा में एक अलग ही रंग भर दिया। लखनऊ की गलियों में घूमते हुए वहाँ की संस्कृति, तहज़ीब और कला को करीब से देखने का मौका मिला। खासकर चिकनकारी कढ़ाई की दुकानों में जाना बहुत रोचक रहा, क्योंकि हर कपड़े पर की गई बारीक कढ़ाई में कारीगरों की मेहनत और परंपरा साफ दिखाई देती है। मैंने एक बहुत सुंदर चिकनकारी कुर्ती खरीदी - उसका लाल कपड़ा, डिज़ाइन और सफ़ेद धागों की कढ़ाई सच में बहुत आकर्षक लगी। दुकान में मोलभाव करना भी अनुभव का मज़ेदार हिस्सा था, क्योंकि यह स्थानीय बाज़ार की संस्कृति को और करीब से महसूस करने का मौका देता है। कुल मिलाकर अयोध्या की आध्यात्मिक शांति और लखनऊ की सांस्कृतिक खूबसूरती ने इस यात्रा को मेरे जीवन के सबसे यादगार अनुभवों में बदल दिया, और मैं इन यादों को हमेशा संजोकर रखूँगी।



भगवान श्री राम जन्मभूमि



हनुमान लाला/रेजिडेंसी/गोमती रिवर फ्रंट/अंबेडकर पार्क



हनुमान गढ़ी

वृंदावन: श्री कृष्ण जन्मभूमि

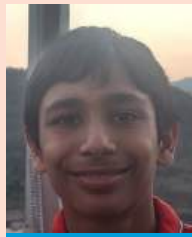


नंदिनी अग्रवाल

वात्सल्य ग्राम

हमारी भारत यात्रा हर पहलू से बहुत ही आनंददायी और रोमांचक रही। लेकिन एक अनुभव खास रहा जिसमें मुझे सबसे ज्यादा आनंद आया, वह था साध्वी ऋतंभरा जी (दीदी माँ) के

आश्रम, वात्सल्य ग्राम, का दर्शन। इसके लिए हम वृंदावन गए थे। हमारा आश्रम का भ्रमण अत्यधिक आध्यात्मिक और सुख से भरा था। मुझे वहाँ पर भगवान की उपस्थिति का भी एहसास हुआ। वहाँ मैंने एक कविता भी सुनाई, जो दीदी माँ ने स्वयं लिखी थी। मुझे बहुत गर्व हुआ कि मैं उनकी कविता उनके सामने सुना सकी। मेरी कविता सुनकर वे बहुत प्रसन्न हुईं और उन्होंने खुद कहा कि यह उनके जन्मदिन का सबसे अच्छा उपहार रहा। यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई, क्योंकि मैंने अपनी कविता को याद करने के लिए बहुत मेहनत की थी और मेरी मेहनत रंग लाई। उसके बाद हमने उनके आश्रम क्या पूरा भ्रमण किया। मुझे लगता है कि यह जीवन में एक ही बार मिलने वाला सुनहरा अवसर था जिसका हिस्सा बनाकर मुझे बहुत गर्व का अनुभव हुआ।



सुहान अग्रवाल

श्री कृष्ण जन्मभूमि

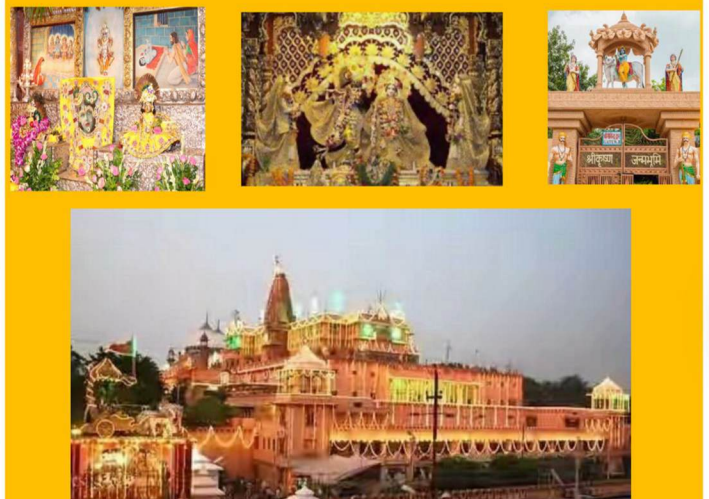
वात्सल्य ग्राम में भ्रमण के पश्चात हम सभी ने श्री कृष्ण जन्मभूमि के दर्शन किए। इस पावन स्थल को देखकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता और श्रद्धा का अनुभव हुआ। उनकी जन्मभूमि की पवित्र धरती

पर उपस्थित होना मेरे लिए एक अविस्मरणीय और आध्यात्मिक अनुभव रहा। इतिहास के विभिन्न कालखंडों में अनेक आक्रमणकारियों और शासकों—जैसे ग्रीक, मुगल, फारसी, अरब, तुर्क, ब्रिटिश और पुर्तगाली—का भारत पर प्रभाव पड़ा। इन दौरों में हमारे कई धार्मिक और सांस्कृतिक स्थलों ने भी परिवर्तन और चुनौतियाँ देखीं। फिर भी यह सत्य है कि हमारी आस्था, संस्कृति और परंपराएँ समय-समय पर आई कठिनाइयों के बावजूद सशक्त रूप से जीवित रहीं। इस यात्रा ने मुझे यह सिखाया कि हमारे धर्म और संस्कृति की शक्ति केवल स्थापत्य या इमारतों में नहीं, बल्कि लोगों की श्रद्धा, विश्वास और निरंतर परंपरा में निहित है। यही कारण है कि अनेक चुनौतियों के बावजूद हमारी सांस्कृतिक धरोहर आज भी प्रेरणादायक बनी हुई है।

वात्सल्य ग्राम



भगवान श्री कृष्ण जन्मभूमि



भारत यात्रा का समापन: अंतः अस्ति प्रारंभ

पुनरागमनाय च: इसी भाव के साथ २०२५-२६ की सांस्कृतिक यात्रा की पूर्णाहुति दिल्ली, उदयपुर, काशी, अयोध्या होती हुई वृंदावन में हुई। योग्य बच्चों का चयन, उनकी नौ माह तक चली तैयारी, यात्रा का कार्यक्रम, यात्रियों की सुरक्षा का निर्धारण, यात्रा के स्थानों का चयन से लेकर हर छोटी बड़ी व्यवस्थाओं में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से हिंदी यू.एस.ए. के संस्थापकों, स्वयंसेवकों, एवं अभिभावकों का योगदान अत्यंत सराहनीय था। इस सांस्कृतिक यात्रा पर युवा छात्र-

छात्राओं और स्वयंसेवकों को भेजने का उद्देश्य उन्हें हिंदी भाषा के प्रतिनिधि के रूप में अपनी संस्कृति का परिचय कराना और देश के प्रति आत्म गौरव का भाव जाग्रत करवाना था। मुझे पूर्ण विश्वास है कि ये विद्यार्थी अपनी सांस्कृतिक यात्रा के अनुभवों को संजोए, माँ भारती की सेवा में और भाषा के इस अश्वमेध को आगे बढ़ाने में अपना योगदान सदैव देते रहेंगे। यह भारत यात्रा का समापन नहीं नव निर्माण का आरंभ है।



दो सप्ताह की यात्रा, सदियों का ज्ञान! अपनी जड़ों को करीब से देखकर लौटे इन विद्यार्थियों का उत्साह देखते ही बनता है। यह केवल एक यात्रा नहीं, बल्कि अपनी संस्कृति से फिर से जुड़ने का एक उत्सव था। हाथों में 'Welcome Back' के गुब्बारे और हृदय में भारत की अनमोल यादें लिए यह हमारा प्यारा समूह।



वही मुस्कान, पर एक नई पहचान: यात्रा का सुखद समापन

नींव से शिखर तक

हमारी पाठशालाओं की गौरव गाथा

हिन्दी यू.एस.ए. के २५ वर्षों की इस ऐतिहासिक यात्रा में हमारी पाठशालाएँ ज्ञान और संस्कृति के प्रकाश स्तंभ के रूप में अडिग खड़ी रही हैं। शून्य से शिखर तक की यह यात्रा केवल आँकड़ों की नहीं, बल्कि उन अनगिनत चुनौतियों, प्रेरणाओं और अटूट संकल्पों की कहानी है जिन्होंने एक छोटे से विचार को आज एक विशाल वटवृक्ष बना दिया है। प्रत्येक पाठशाला का अपना एक अनूठा इतिहास है—कहीं संघर्षों की यादें हैं, तो कहीं पहले वर्ष के नन्हें कदमों से मिली प्रेरणा और स्वयंसेवकों का निस्वार्थ समर्पण। आइए, अपने समन्वयकों की जुबानी उन अविस्मरणीय स्मृतियों और अनुभवों को जानें, जिन्होंने हमारी पाठशालाओं को केवल एक शिक्षण केंद्र नहीं, बल्कि एक जीवंत परिवार बनाया है।

वेस्ट विंडसर प्लेंसबोरो हिंदी पाठशाला

गुलशन मिर्ग, ज्योति विटल एवं राकेश पूरिल

संपूर्ण वेस्ट विंडसर प्लेंसबोरो हिंदी पाठशाला परिवार की ओर से “हमारी कर्मभूमि, हमारी पहचान, हमारी भाषा और हमारा गर्व!”

हिंदी यू.एस.ए. के अंतर्गत वेस्ट विंडसर प्लेंसबोरो हिंदी पाठशाला परिवार के लिए वर्ष २०२५ अत्यंत विशेष है। यह वर्ष केवल एक शैक्षिक अध्याय नहीं, बल्कि हमारी वर्षों की समर्पणपूर्ण यात्रा का उत्सव है। यह एक ऐसी यात्रा जो विद्यार्थियों के मन में हिंदी भाषा, भारतीय संस्कृति और सेवा भावना को गहराई से स्थापित करती है।

हमारी पाठशाला की स्थापना वर्ष २००३ में ममता त्रिवेदी जी द्वारा की गई थी, जो आज भी वरिष्ठ शिक्षिका और मार्गदर्शक के रूप में हमारी प्रेरणा हैं। उन्होंने इस पाठशाला का प्रारम्भ एक सरल भावना से किया था। “हमारे विद्यार्थी हिंदी बोलें, समझें और अपनी जड़ों से जुड़े रहें।” उनका यह छोटा सा प्रयास आज एक सशक्त समुदाय का रूप ले चुका है, जहाँ सैकड़ों विद्यार्थी,

शिक्षक, स्वयंसेवक और अभिभावक एक परिवार की तरह जुड़े हुए हैं।

वर्तमान में हमारी पाठशाला में लगभग १८० विद्यार्थी, ३० शिक्षक-शिक्षिकाएँ, ३० युवा स्वयंसेवक और १० स्वयंसेवक सक्रिय रूप से कार्यरत हैं।

हर शुक्रवार की शाम ग्रोवर मिडल स्कूल, वेस्ट विंडसर, न्यू जर्सी में जब कक्षाएँ आरंभ होती हैं, तो पूरा परिसर हिंदी की मधुर ध्वनियों और बच्चों की उत्साहित आवाज़ों से गूँज उठता है। प्रत्येक शिक्षक अपने विद्यार्थियों में केवल भाषा नहीं, बल्कि संस्कार, संस्कृति और आत्मविश्वास का संवर्धन करते हैं। हमारे युवा स्वयंसेवक इस यात्रा के अभिन्न अंग हैं। वे विद्यार्थियों को खेल-खेल में सीखने की प्रेरणा देते हैं और शिक्षकों का हर संभव सहयोग करते हैं। विद्यालय का संचालन पूर्णतः स्वयंसेवी भावना से होता है। शिक्षण, आयोजन, प्रशासन या सामुदायिक कार्य, हर क्षेत्र में सहयोग और एकता की भावना झलकती है। यही हमारी असली शक्ति है।

हिंदी शिक्षा के साथ-साथ हमारी पाठशाला सामुदायिक सेवा में भी सक्रिय भूमिका निभाती है। वर्ष २०१७ से हम Plainsboro Food Pantry और Plainsboro Rescue Squad के लिए दीपावली अनुदान अभियान चला रहे हैं। इस पहल के माध्यम से विद्यार्थी, अभिभावक परिवार और स्वयंसेवक मिलकर खाद्य सामग्री और अन्य आवश्यक वस्तुएँ एकत्र कर समुदाय तक पहुँचाते हैं। वर्ष २०२४ से प्लेंसबोरो लायंस क्लब भी हमारे साथ इस पुनीत कार्य में जुड़ गया है, जिससे यह प्रयास और व्यापक हो गया है। यह केवल दान नहीं, बल्कि सेवा और करुणा की हमारी परंपरा का प्रतीक है।

हमारी पाठशाला में वर्ष भर कई सांस्कृतिक और शैक्षिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जैसे हिंदी दिवस, गणतंत्र दिवस, शिक्षक एवं युवा स्वयंसेवक सम्मान दिवस, माता-पिता दिवस और दिवाली समारोह जैसे

कार्यक्रमों में विद्यार्थियों की रचनात्मकता और उत्साह झलकता है। हर आयोजन यह संदेश देता है कि जब शिक्षा में संस्कृति का संगम होता है, तो सीखना जीवन का उत्सव बन जाता है। दीवाली और अन्य उत्सवों के दौरान हम प्लेंसबोरो और वेस्ट विंडसर के मेयर, नगर प्रशासन के अधिकारी, पुस्तकालय प्रबंधन और स्कूल बोर्ड के सदस्यों को आमंत्रित करते हैं। वे हमेशा हमारे विद्यार्थियों की सराहना करते हैं और हमारी हिंदी पाठशाला के प्रयासों का पूरा सहयोग करते हैं।

आज वेस्ट विंडसर प्लेंसबोरो हिंदी पाठशाला केवल एक शिक्षण संस्था नहीं, बल्कि एक परिवार है। जहाँ हर शिक्षक प्रेरक है, हर विद्यार्थी संस्कृति का वाहक है, और हर अभिभावक इस मिशन का अभिन्न अंग है।

हमारी पहचान सिर्फ पाठशाला तक सीमित नहीं, बल्कि उस सामूहिक भावना में है जो हमें “हम” बनाती है।

लॉरेन्सविल हिंदी पाठशाला

संजय भयाना

हिन्दी यू.एस.ए. लॉरेन्सविल पाठशाला का प्रारम्भ २००६ में हुआ। यहाँ के प्रथम संचालक मैं (संजय भयाना) और संदीप अग्रवाल जी थे। कुछ वर्षों के पश्चात् मैं प्लेंसबोरो पाठशाला चलाने लगा और तत्पश्चात् कुछ अंतराल के बाद मैं वापिस २०२२ से यहाँ का सञ्चालन कर रहा हूँ। इस बीच रत्ना पराशर जी, जयश्री जी, योगिता जी, श्वेता जी, जगदीश जी, श्रुति जी और राखी वैश जी ने शाला के सञ्चालन का कार्यभार संभाला। वर्तमान में हमारी पाठशाला में ८ स्तर, १० शिक्षक/शिक्षिकाएँ, ५ युवा स्वयंसेवक और २५ विद्यार्थी हैं। हम सभी अपनी शाला को सुचारू रूप से चलाने के लिए एक परिवार की तरह कार्यरत रहते हैं। सभी विद्यार्थियों के माता-पिता जो शिक्षक नहीं भी हैं वे भी अन्य तरह से पूर्ण सहयोग देते हैं। हमारी पाठशाला में सभी शिक्षक, विद्यार्थी, स्वयं सेवक और उनके माता-पिता कक्षा प्रारम्भ

होने से पहले मिल कर प्रार्थना करते हैं। सभी पूरे उत्साह के साथ दिवाली, कविता पाठ, हिंदी महोत्सव तथा अन्य आयोजनों में भाग लेते हैं, तथा अभिभावक उन्हें प्रोत्साहन देते हैं। लॉरेन्सविल पाठशाला में सभी माता-पिता अपने बच्चों को भारतीय संस्कृति से जोड़े रखने के लिए हिंदी पढ़ाने के लिए जुड़े हैं। हम सभी का यह विश्वास है की यदि बच्चे हिंदी पढ़, बोल और लिख पाएंगे तो अपने धर्म और संस्कृति को अच्छी तरह समझ सकेंगे और परदेश में भी हम युवा पीढ़ी को अपनी संस्कृति से जोड़ पाएंगे। हमारी शाला में पूर्व में अंतर्राष्ट्रीय और गैर हिंदी भाषी परिवार के भी कुछ विद्यार्थी स्नातक हुए हैं। इन विद्यार्थियों को पढ़ाने का अनुभव भिन्न था। हिंदी पढ़ाने के अलावा हमारे कुछ अध्यापक और अध्यापिकाएँ अन्य सामाजिक सेवा में भी जुड़े हैं, जैसे चिन्मया मिशन, स्वामीनारायण संस्था, राधा कृष्णा मंदिर आदि।



लॉरेन्सविल हिंदी पाठशाला

ईस्ट ब्रुंस्विक हिंदी पाठशाला स्वागता माने

नींव और प्रेरणा: मेरी इस यात्रा की शुरुआत तब हुई जब मेरी एडिसन की सहेली जयश्री जी ने मुझे हिंदी यू.एस.ए. से अवगत कराया। मैंने अपनी बेटी का पंजीकरण ईस्ट ब्रुंस्विक पाठशाला में कराया और तब से मैं इस संस्था के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हूँ। २००९ में मैनो जी ने मुझे शिक्षक बनने का प्रस्ताव दिया और मैं एक शिक्षिका के रूप में जुड़ गई। हालांकि मैं भारत में भी अध्यापिका रह चुकी हूँ, लेकिन यहाँ हिंदी यू.एस.ए. के प्रशिक्षण ने मेरा आत्मविश्वास बढ़ाया और मुझे अमेरिका की शिक्षा प्रणाली को करीब से समझने का अवसर मिला।

चुनौतियाँ और विकास: २०१९ में मुझे इस पाठशाला की संचालिका बनने का सौभाग्य मिला। मेरे १६ वर्षों की यात्रा में सबसे चुनौतीपूर्ण समय कोविड का था, जब हमें ऑनलाइन कक्षाएँ लेनी पड़ीं और पार्क में जाकर

विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र देने पड़े। काफी कठिनाइयों के बाद व्यक्तिगत रूप से पाठशाला का पुनः प्रारम्भ होना हमारे लिए एक अनोखा अनुभव था। वर्तमान में हमारी पाठशाला में ५० विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं, जिन्हें ११ समर्पित अध्यापिकाएँ और ५ युवा स्वयंसेवक अपना मार्गदर्शन दे रहे हैं।

हमारी गतिविधियाँ और गौरव के क्षण: हमारी पाठशाला में अभिभावक अत्यंत हर्षोल्लास से सभी कार्यों में भाग लेते हैं। हम दिवाली का उत्सव बड़े धूमधाम से मनाते हैं, जहाँ अध्यापिकाएँ स्वयं मेहनत से खाना बनाती हैं और बच्चे मंच पर अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। वसंत पंचमी पर पीले वस्त्र पहनना और गणतंत्र दिवस की परेड जैसे हमारे प्रयास रंग लाते हैं। हमें गर्व है कि हमारी कई शिक्षिकाओं को 'सर्वश्रेष्ठ शिक्षक' पुरस्कार मिला है और हमारे विद्यार्थियों जैसे नियति

चोरडिया, संधायनी मुर्मू और शिवांश शर्मा ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त कर पाठशाला का मान बढ़ाया है। अभिसार मुर्मू, चहेल कटोच और आश्रित आत्माराम का अभूतपूर्व भारत यात्रा के लिए चुना जाना हमारे लिए गौरव की बात रही।

हमारी टीम के अनुभव: मेरे साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाली हमारी टीम के अनुभव भी अत्यंत प्रेरक हैं:

श्रुति राय गुप्ता (S-2): पिछले ९ वर्षों से नन्हे बच्चों को हिंदी और हमारी संस्कृति से जोड़ना उनके लिए गर्व का स्रोत है।

रितु सिन्हा (B-1): २०२२ से जुड़ी रितु जी के लिए अब यह संस्था उनका दूसरा परिवार बन चुकी है।

टीना चोरडिया (B-2): ९ वर्षों से जुड़ी टीना जी अपनी व्यस्त दिनचर्या से समय निकालकर हिंदी पढ़ाना पसंद करती हैं।

रश्मि शर्मा (A-1): ५ वर्षों से जुड़ी रश्मि जी मानती हैं

कि हिंदी यू.एस.ए. बच्चों को अपनी सभ्यता से अवगत कराने का बेहतरीन माध्यम है।

शुभ्रता सक्सेना (I-1): १२ वर्षों के अनुभव के साथ शुभ्रता जी को गर्व है कि वे इस श्रेष्ठ संस्था के माध्यम से राष्ट्रभाषा की सेवा कर रही हैं।



आभार: मेरे दोनों बच्चे इस संस्था से स्नातक हो चुके हैं और उनकी जीती हुई ट्रॉफीज आज भी हमें बिताए हुए सुखद पलों की याद दिलाती हैं। मैं देवेंद्र जी और रचिता जी का हृदय से धन्यवाद करती हूँ जिन्होंने हमें हिंदी भाषा के जरिए सही राह दिखाई। हमें अपनी पूरी टीम और हिंदी यू.एस.ए. परिवार पर गर्व है।



ईस्ट ब्रुंस्विक हिंदी पाठशाला के शिक्षक और शिक्षिकाएँ

एडिसन हिंदी पाठशाला

अमेरिका में हिंदी और भारतीय संस्कृति के संरक्षण के २१ गौरवशाली वर्ष

न्यू जर्सी के एडिसन शहर में स्थित **एडिसन हिंदी पाठशाला** पिछले दो दशकों से भारतीय-अमेरिकी बच्चों को उनकी जड़ों से जोड़ने का एक अनुकरणीय कार्य कर रही है। हिन्दी यू.एस.ए. के मार्गदर्शन में इस **पाठशाला** की यात्रा **वर्ष २००५** में शुरू हुई थी, जिसका उद्देश्य अमेरिका में जन्मे बच्चों को भारत की राजभाषा हिंदी और वहाँ की समृद्ध संस्कृति से परिचित कराना था। एडिसन पाठशाला हिन्दी यू.एस.ए. की पहली आधिकारिक पाठशाला है और प्रत्यक्ष रूप से सबसे बड़ी संचालित पाठशाला है।

एक प्रभावशाली सफर: प्रारम्भ से आज तक

अपने पहले ही वर्ष में इस पाठशाला ने **२५० पंजीकरणों** और **५ विभिन्न स्तरों** की कक्षाओं के साथ एक मजबूत नींव रखी थी। एडिसन पाठशाला की लोकप्रियता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि वर्ष **२०१७-२०१८** में यहाँ छात्रों की संख्या **५२५** तक पहुँच गई थी। वर्तमान में अपने २१वें वर्ष में, स्कूल ३५७ छात्रों को हिंदी का ज्ञान दे रहा है। हिन्दी यू.एस.ए. एडिसन की कक्षाएँ हर **शुक्रवार शाम ७:०० से ८:३० बजे** तक जॉन एडम्स मिडल स्कूल, एडिसन में आयोजित की जाती हैं।

अनुभवी नेतृत्व और समर्पित टीम

एडिसन पाठशाला की निरंतर सफलता इसके दूरदर्शी संचालकों और समर्पित शिक्षकों के अथक प्रयासों का परिणाम है। जिनमें राज मित्तल, सुशील अग्रवाल, वंदना अग्रवाल और सुमन मित्तल का पिछले २१ से भी ज्यादा वर्षों से सतत योगदान रहा है। माणक काबरा (२०+ वर्षों से सक्रिय), सुनील दुबे (१२+ वर्षों का योगदान), राकेश मेनन और यज्ञेश दलाल ने भी पाठशाला के कुशल संचालन में अमूल्य भूमिका निभाई है।

इस वर्ष पाठशाला के साथ कुल **१०५ शिक्षक और युवा स्वयंसेवक** जुड़े हुए हैं। उल्लेखनीय है कि यहाँ के **कई शिक्षक १५ से अधिक वर्षों से** निरंतर अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। इसी निस्वार्थ सेवा की भावना के कारण यहाँ के कई शिक्षकों और संचालकों ने एडिसन से बाहर जाने के बाद अन्य क्षेत्रों में भी हिंदी पाठशाला की स्थापना की है।

सांस्कृतिक जुड़ाव और अन्य कार्यक्रम

हिंदी कविता

प्रतियोगिता और

वार्षिक हिंदी

महोत्सव जैसे

आयोजनों ने न केवल

विद्यार्थियों का

आत्मविश्वास बढ़ाया

है, बल्कि सैकड़ों

अभिभावकों को भी

एक सूत्र में पिरोया है। यहाँ **भारतीय गणतंत्र दिवस,**

दिवाली पूजा, मातृ-पितृ पूजन जैसे कार्यक्रम मनाए

जाते हैं, जो विद्यार्थियों को भारतीय विरासत और संस्कृति से जुड़ने के शानदार अवसर प्रदान करते हैं। पाठशाला में बच्चों की कक्षा समाप्त होने की प्रतीक्षा कर रहे माता-

पिता के लिए सामुदायिक समृद्धि कार्यक्रम भी आयोजित

किए जाते हैं, जैसे—**टैक्स प्लानिंग, वित्त प्रबंधन,**

योग, आयुर्वेद, वसीयत/ट्रस्ट, रोबोटिक्स आदि शामिल है।

आज यह पाठशाला केवल एक शिक्षण संस्थान नहीं,

बल्कि एक जीवंत सांस्कृतिक केंद्र बन गया है। एडिसन

हिंदी पाठशाला, हिन्दी यू.एस.ए. के २५ वर्ष पूरे होने की

सभी को ढेरों शुभकामनाएँ और आने वाले कई वर्षों तक

सभी का साथ बना रहे यहीं परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।





एडिसन हिंदी पाठशाला

वुडब्रिज हिंदी पाठशाला

समुदाय, संस्कृति और भाषा संरक्षण की सुंदर यात्रा

हिंदी यू.एस.ए. की लगभग तीन दर्जन पाठशालाओं में से एक है वुडब्रिज हिन्दी स्कूल, जिसकी स्थापना वर्ष २००७ में हुई थी। वर्ष २०१५ से शिव आर्य निरंतर समर्पण के साथ इसके संचालक के रूप में जिम्मेदारी निभा रहे हैं। वुडब्रिज स्कूल आकार में भले ही छोटा हो, परंतु अपनी ऊर्जा, उत्साह और उपलब्धियों के कारण यह पूरे हिंदी यू.एस.ए. परिवार में एक विशेष स्थान रखता है। यहाँ लगभग ६०-६५ विद्यार्थी और १२-१५ शिक्षक प्रतिवर्ष सीखने-सिखाने की इस सांस्कृतिक परंपरा को आगे बढ़ाते हैं।

वुडब्रिज एक ट्रांजिशन टाउन है—अर्थात् लोग यहाँ कुछ वर्षों के लिए रहते हैं और फिर एडिसन, पिस्काटवे या प्रिंसटन जैसे बड़े कस्बों की ओर रुख कर लेते हैं। इस कारण वुडब्रिज पाठशाला में हर साल नई-नई प्रतिभाएँ आती हैं और कई परिचित चेहरे आगे बढ़ जाते हैं। इस

प्रकार की चुनौतियों से भरा यह स्कूल फिर भी अपना वातावरण हमेशा सौहार्दपूर्ण, सकारात्मक और आत्मीय बनाये रहता है।

हमारी कक्षाएँ फोर्ड मिडिल स्कूल में हर शुक्रवार शाम ७-८ बजे संचालित होती हैं। पाठशाला में हिन्दी के सभी नौ स्तर—S1, S2, B1, B2, I1, I2, I3, A1 और A2 पढ़ाए जाते हैं।

प्रतियोगिताएँ और उपलब्धियाँ

पिछले कई वर्षों में वुडब्रिज स्कूल ने कई प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। इनमें प्रमुख हैं:

- ◆ कविता पाठ प्रतियोगिता
- ◆ कर्मभूमि कवर डिजाइन प्रतियोगिता
- ◆ नुक्कड़ नाटक – वार्षिक हिन्दी महोत्सव

पिछले वर्षों में कई छात्र कविता पाठ प्रतियोगिता में अंतिम चरण तक पहुँचने का गौरव प्राप्त किया है। एक

छात्र ने कर्मभूमि कवर डिजाइन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर स्कूल का नाम रौशन किया। इस वर्ष एक युवा स्वयंसेवक का चयन हिंदी यू.एस.ए. की **भारत यात्रा** के लिए भी हुआ है—सभी स्कूलों से सैकड़ों आवेदकों में से मात्र कुछ विद्यार्थियों का चयन होता है। यह वुडब्रिज के लिए अत्यंत गर्व का क्षण होता है।

त्योहार, कार्यक्रम और सामुदायिक सहभागिता

वुडब्रिज स्कूल पूरे वर्ष हिंदी यू.एस.ए. के सभी कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी करता है। इनमें स्वतंत्रता दिवस, दुर्गा पूजा/दशहरा, दिवाली, शिक्षक सम्मान दिवस, कविता पाठ, वार्षिक पिकनिक, हिन्दी दिवस (कांसुलेट), हिन्दी महोत्सव, और विभिन्न स्वयंसेवी गतिविधियाँ सम्मिलित हैं। विशेष रूप से दिवाली उत्सव वुडब्रिज स्कूल की पहचान बन चुका है—जिसमें सभी माता-पिता, शिक्षकगण, स्वयंसेवक, स्कूल संचालक तथा हिंदी यू.एस.ए. के संस्थापक देवेन्द्र और रचिता सिंह जी भी सम्मिलित होते हैं।

शिक्षण पद्धति और सांस्कृतिक सीख

वुडब्रिज स्कूल में भाषा केवल पढ़ाई नहीं जाती—हिंदी को जीवन में लाया भी जाता है। हमारे समर्पित शिक्षक बच्चों को पढ़ना, लिखना, बोलना और सुनना—इन चारों भाषा-कौशलों के साथ-साथ भारतीय संस्कृति, भोजन, त्योहारों, परंपराओं और इतिहास से भी जोड़ते हैं। हर महीने आने वाले भारतीय त्योहारों की कहानियाँ, उनके इतिहास और उनमें निहित भारतीयता पर चर्चा की जाती है, जिससे बच्चों में भाषा के प्रति आत्मीयता और समझ विकसित होती है।

वुडब्रिज स्कूल: एक परिवार, एक परंपरा

यह हमारे लिए गर्व का विषय है कि एक छोटा और ट्रांजीशन टाउन होने के बाद भी वुडब्रिज हिन्दी स्कूल निरंतर प्रगति कर रहा है। बच्चों को प्रवेश दिलाना और बनाए रखना चुनौतीपूर्ण अवश्य है, किंतु समुदाय के प्रेम, शिक्षकों के समर्पण और विद्यार्थियों के उत्साह ने इसे सम्भव बनाया है।



वुडब्रिज हिंदी पाठशाला के शिक्षक और शिक्षिकाएँ

साउथ ब्रंसविक हिंदी पाठशाला मातृभाषा से जुड़ने की एक प्रेरणादायक यात्रा

हिंदी यू.एस.ए. - साउथ ब्रंसविक पाठशाला की स्थापना वर्ष २००७ में हुई थी। इसकी प्रेरणा मुझे हिंदी महोत्सव में हिंदी यू.एस.ए. के संस्थापक श्री देवेंद्र जी से मिलने पर मिली। मातृभूमि भारत से दूर रहते हुए मन में यह भावना जागी कि प्रवासी भारतीय बच्चों को उनकी भाषा और संस्कृति से जोड़ने के लिए कुछ किया जाए। इसी उद्देश्य से हमारी इस पाठशाला की शुरुआत हुई।

प्रारंभ में अनेक कठिनाइयाँ आईं। विद्यालय की व्यवस्था करना, स्वयंसेवी शिक्षकों को जोड़ना तथा अभिभावकों से संपर्क करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। शुरुआत पड़ोस के बच्चों से हुई और धीरे-धीरे यह प्रयास व्यापक रूप लेने लगा। पहले वर्ष में १२० विद्यार्थी जुड़े। तीन स्तर बनाए गए, आठ कक्षाएँ चलीं तथा दस शिक्षक और तीन स्वयंसेवकों ने मिलकर कार्य किया। उस समय न तो सोशल मीडिया का सहारा था और न ही ऑनलाइन पंजीकरण की सुविधा। पंजीकरण डाक द्वारा भेजे जाते थे और प्रचार स्थानीय विद्यालयों, पुस्तकालयों तथा भारतीय दुकानों के माध्यम से किया जाता था। आज समय के साथ व्यवस्था आधुनिक हो गई है और सब कुछ ऑनलाइन हो चुका है।

वर्तमान में हमारी पाठशाला से १४५ विद्यार्थी जुड़े हैं। हमारे साथ २४ शिक्षक, ८ स्वयंसेवक और १८ युवा स्वयंसेवक कार्यरत हैं। यद्यपि हमारे टाउनशिप में अब बहुत कम नए परिवार आ रहे हैं, फिर भी हम अपने विद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या को अच्छे स्तर पर बनाए रखने में सफल रहे हैं। यह हमारे लिए गर्व का विषय है कि संस्था निरंतर स्थिरता और प्रगति दोनों का उदाहरण बन रही है।

इस पाठशाला की सबसे बड़ी विशेषता इसका पारिवारिक वातावरण है। शिक्षक और स्वयंसेवक एक-

दूसरे को परिवार के सदस्य की तरह मानते हैं। हम दीवाली और होली जैसे पर्व साथ मिलकर मनाते हैं तथा परीक्षा पत्रों की जाँच मेरे घर के तलघर में चाय और नाश्ते के साथ सामूहिक रूप से होती है।

हमारे अधिकांश शिक्षक दस वर्षों से अधिक समय से सेवा दे रहे हैं और कुछ का कार्यकाल तो पंद्रह वर्षों तक का रहा है। अपने बच्चों के स्नातक होने के बाद भी वे इस सेवा कार्य को जारी रखते हैं, यह बहुत ही सराहनीय है। हमारे कुछ शिक्षक तो अन्य राज्यों में जाकर हिंदी यू.एस.ए. की नई शाखाएँ भी आरंभ कर चुके हैं। वर्तमान और पूर्व शिक्षकों में से छह शिक्षक आज विभिन्न स्तरों के समन्वयक (Level Coordinator) के रूप में कार्य कर रहे हैं। इसके अलावा, साउथ ब्रंसविक हिंदी यू.एस.ए. अपनी गरिमामय एवं कलात्मक प्रस्तुतियों के लिए शिक्षक सम्मान समारोह और हिंदी महोत्सव में भी अपनी एक विशेष पहचान रखता है।

हम स्थानीय नगर के कार्यक्रमों—जैसे नेशनल नाइट आउट, होली और दीवाली समारोह—में भी सक्रिय भागीदारी करते हैं। हमारे स्नातक समारोह में स्थानीय अधिकारियों को आमंत्रित किया जाता है, जिससे बच्चों को सम्मान और प्रेरणा मिलती है।

जब विद्यार्थी आत्मविश्वास के साथ हिंदी बोलते हैं और अपनी भाषा पर गर्व करते हैं, तब यह अनुभव होता है कि यह पाठशाला केवल भाषा सिखाने का केंद्र नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और पहचान को जीवित रखने का एक सशक्त माध्यम बन चुकी है।

उमेश महाजन - संचालक



साउथ ब्रंसविक हिंदी पाठशाला के शिक्षक और शिक्षिकाएँ



मोनरो हिंदी पाठशाला की शिक्षिकाएँ

मोनरो हिंदी पाठशाला

सपने से संस्कार तक की गौरवमयी यात्रा

मोनरो हिंदी पाठशाला केवल एक शिक्षण संस्था नहीं, बल्कि एक सपना है—हिंदी भाषा, संस्कृति और संस्कारों को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने का सपना। इस सपने ने लगभग सोलह वर्ष पूर्व केवल बारह बच्चों के साथ आकार लेना शुरू किया और आज यह पाठशाला ८३ से अधिक विद्यार्थियों के जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुकी है।

वर्ष २००४ में मोनरो के एक मिडिल स्कूल के छोटे-से कक्ष में इस पाठशाला का बीज बोया गया था। तब न संसाधन पर्याप्त थे, न ही यह निश्चित था कि यह प्रयास कितनी दूर तक जाएगा। परंतु जैसे-जैसे मोनरो शहर बढ़ा, वैसे-वैसे हिंदी से जुड़ने की चाह रखने वाले परिवार भी जुड़ते गए। यह यात्रा आज हिंदू मंदिर, मोनरो तक पहुँच चुकी है, जहाँ हर गुरुवार बच्चों की हँसी, अक्षरों की ध्वनि और संस्कृति की खुशबू से वातावरण जीवंत हो उठता है।

इस पाठशाला की नींव एक माँ के संकल्प और सही मार्गदर्शन का परिणाम है। जब डॉ. सुनीता गुलाटी ने अपनी बेटी को हिंदी पढ़ाने का विचार किया, तो उस समय आसपास कोई हिंदी कक्षा नहीं थी। उन्होंने 'हिंदी यू.एस.ए.' के संस्थापक श्री देवेन्द्र जी से संपर्क किया, जिन्होंने उन्हें प्रेरणा देते हुए कहा, "क्यों न आप ही मोनरो में हिंदी की एक पाठशाला खोल लें?" उनका यह एक वाक्य चिंगारी बन गया, जिससे मोनरो में हिंदी शिक्षा का दीप प्रज्वलित हुआ।

प्रारम्भिक वर्षों में चुनौतियाँ कम नहीं थीं। सीमित साधन, कम विद्यार्थी और पहचान की कमी—सब कुछ

नया और अनिश्चित था। फिर भी हार मानने की बजाय मोनरो जिले के विद्यालयों में फ्लायर्स बाँटे गए, घर-घर जाकर लोगों से बात की गई और समुदाय को जोड़ा गया। यह सब केवल प्रचार नहीं था, बल्कि एक विनम्र निमंत्रण था—अपनी भाषा से फिर से जुड़ने का।

पहले वर्ष में कुछ स्तरों और गिने-चुने विद्यार्थियों से आरंभ हुई यह पाठशाला आज १३ समर्पित शिक्षक-शिक्षिकाओं और २ निष्ठावान स्वयंसेवकों के सहयोग से सशक्त रूप में आगे बढ़ रही है। यहाँ शिक्षक केवल पढ़ाते नहीं, बल्कि बच्चों के भीतर अपनी जड़ों पर गर्व भी जगाते हैं।

मोनरो हिंदी पाठशाला की सबसे बड़ी विशेषता इसके आयोजन और गतिविधियाँ रही हैं—हिंदी-यू.एस.ए. के कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ, उत्सव और मंचीय कार्यक्रम—जिन्होंने विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों को एक परिवार की तरह बाँध दिया। यही सहभागिता इस पाठशाला की आत्मा है।

इस यात्रा के अनेक अविस्मरणीय क्षणों में से सबसे भावुक वे पल हैं, जब कोई विद्यार्थी जो कभी हिंदी बोलने में झिझकता था आज मंच पर आत्मविश्वास के साथ हिंदी में कविता या भाषण प्रस्तुत करता है। उन आँखों में चमक और माता-पिता के चेहरे पर गर्व देखकर यह प्रतीत होता है कि यह प्रयास सार्थक है।

मोनरो हिंदी पाठशाला की यह यात्रा आज भी जारी है—पूरे विश्वास के साथ, इस संकल्प के साथ कि हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि पहचान है।

नॉर्थ ब्रंसविक हिंदी पाठशाला

योगिता मोदी – संचालिका एवं शिक्षिका

नॉर्थ ब्रंसविक हिंदी पाठशाला की स्थापना वर्ष १९१२ में हुई थी। उस समय इस शहर में भारतीय परिवारों का आना और बसना निरंतर जारी था, इसलिए एक हिंदी पाठशाला भी आरम्भ करने की आवश्यकता पड़ने लगी। गीता टंडन जी इस पाठशाला की प्रथम संचालिका थीं, उसके पश्चात वर्ष २०१५ -१६ से मुझे इस पाठशाला से जुड़ने और संचालिका का कार्यभार संभालने का सुअवसर प्राप्त हुआ। वर्तमान (२०२५-२६) में इस प्रगतिशील पाठशाला में विद्यार्थियों की संख्या ३६ है।

पाठशाला को हिंदी यू.एस.ए. के निर्धारित नियमों और दिशा-निर्देशों के अनुसार ही संचालित किया जाता है। सर्वप्रथम, नए सत्र में ज्यादा से ज्यादा विद्यार्थी इस पाठशाला से जुड़ें इसके लिए सतत प्रयास पिछले सत्र के समाप्त होते ही आरम्भ कर दिए जाते हैं। नॉर्थ ब्रंसविक के पब्लिक और चार्टर्ड पाठशालाओं में हिंदी पाठशाला का विज्ञापन, अन्य सार्वजनिक स्थलों जैसे - भारतीय किराना दुकानें, पुस्तकालय आदि में विज्ञापन, फेसबुक और अन्य सोशल मीडिया के माध्यम से भी इसका विज्ञापन किया जाता है।

एक महत्वपूर्ण पड़ाव के रूप में सत्र के आरम्भ में सभी स्तर की शिक्षिकाओं की प्रशिक्षण कार्यशाला में उपस्थिति अनिवार्य होती है, ताकि उन्हें अपनी कक्षा के लिए पाठ्यक्रम योजना, कक्षा परियोजना, अर्द्ध वार्षिक, वार्षिक परीक्षा कविता प्रतियोगिता, हिंदी सीखने की App, कर्मभूमि, वार्षिक उत्सव आदि सभी जानकारी एक साथ मिल सके। युवा स्वयंसेवक भी अपने प्रशिक्षण शिविर में प्राप्त जानकारी से कक्षा के सुचारु संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नए तथा पुराने सभी विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को Learning Management System (LMS) के बारे में जानकारी उपलब्ध

कराना, सभी अभिभावकों से समय-समय पर मिलना ताकि उनकी पाठशाला के बारे में प्रतिक्रिया प्राप्त हो सके, आदि गतिविधियाँ निरंतर चलती रहती हैं। इस पाठशाला के विद्यार्थी अन्य मंचों जैसे दशहरा मेला, भारतीय दूतावास, अंतरराष्ट्रीय बाल काव्य मंच आदि पर नाटक, कविता में उत्साहपूर्ण भाग लेते हैं। इस पाठशाला में प्रतिवर्ष दीपावली बहुत जोर-शोर से मनाई जाती है जिसमें सभी की भागीदारी होती है। पाठशाला के विद्यार्थी और शिक्षिकाएँ कविता प्रतियोगिता और महोत्सव में आवश्यकतानुसार स्वयंसेवी कार्य में भाग लेते हैं। इसके अतिरिक्त समाज-सेवा के लिए सामूहिक रूप से सेवा-दीवाली के तत्वाधान में संस्था हर वर्ष खाद्य सामग्री आदि नॉर्थ ब्रंसविक कार्यालय में दी जाती है। धर्माश में भी इस पाठशाला के कुछ सदस्य योगदान करते हैं।

पाठशाला के विद्यार्थी निर्वाण जैन एवं तन्वी जैन (उच्चतर-२) भी इन समाज सेवाओं से जुड़े हैं - फ्रेंक्लिन शहर यूथ कौंसिल के सक्रिय स्वयंसेवी के रूप में Buddy Basketball, Franklin Day, Diwali Celebration, Top soccer (soccer class for challenged kids), Friday night out (Therapeutic Recreation for special need kids and young adults)।

इस पाठशाला में भारतीय मूल के विद्यार्थियों के साथ ही २ छात्राएँ लेबनान मूल की हैं, जो बहुत ही उत्साह से हिंदी पढ़ रही हैं। एक छात्रा चीन और भारत मिश्रित मूल की है और मध्यमा-२ की छात्रा है। समग्र रूप में नॉर्थ ब्रंसविक हिंदी पाठशाला निरंतर प्रगति के मार्ग पर अग्रसर है और शीघ्र ही विद्यार्थियों का आंकड़ा ५० तक पहुँच जायेगा, ऐसी आशा है।



नॉर्थ ब्रंसविक हिंदी पाठशाला



गुलशन मिर्ग

परिवार का स्नेह और मित्रों का साथ

मेरा नाम गुलशन मिर्ग है। मैं हिंदी यू.एस.ए. के अंतर्गत संचालित वेस्ट विंडसर-प्लेन्सबोरो हिंदी पाठशाला में एक स्वयंसेवक के रूप में सेवा कर रहा हूँ। मैं और मेरी पत्नी, मोनिका, हम दोनों वर्ष २००७ से स्वयंसेवक के रूप में जुड़े हुए हैं और प्लेन्सबोरो में रहते हैं। हमारे दो बेटे हैं, जो न्यूयॉर्क सिटी में कार्यरत हैं। हमारा विद्यालय हिंदी भाषा सिखाने के साथ-साथ विद्यार्थियों को अपनी संस्कृति, मूल्य और परंपराओं से जोड़ने का कार्य भी करता है। हमारा उद्देश्य विद्यार्थियों में हिंदी बोलने और समझने का आत्मविश्वास बढ़ाना, उन्हें भारतीय संस्कृति से जुड़े रहने के लिए प्रेरित करना और एक सकारात्मक, अनुशासित तथा सहयोगी वातावरण प्रदान करना है। इस कार्य को सार्थक बनाने में हमारे समर्पित शिक्षक, स्वयंसेवक और युवा स्वयंसेवक अमूल्य योगदान देते हैं। समय के साथ वे सभी हमारे प्रिय मित्र बन गए हैं और एक बड़े परिवार की तरह साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं। मेरी कविता “परिवार का स्नेह और मित्रों का साथ” इसी आपसी प्रेम, सहयोग और अपनत्व की भावना को समर्पित है।

घर की हँसी, मित्रों की बातें,
यही तो जीवन की सच्ची सौगातें।
साथ बैठकर चाय की चुस्की,
हर चिंता लगे फिर बहुत ही हल्की।

बीते पल जब यादों में ढलते,
दिल के कोने और भी उज्ज्वल बनते।
ना दौलत की चाह, ना नाम का शोर,
अपने लोग हों बस, क्या चाहिए और।

दुनिया की भीड़ में जब मन घबराए,
ये हाथ थामने को दौड़े चले आए।
ये रिश्ता नहीं एक प्यारा सा वादा है,
हर गम को बांटने का नेक इरादा है।

परिवार का स्नेह, मित्रों का साथ,
इन्हीं से रोशन होती हर एक रात।
समय जो इनके संग हँसकर गुजरे,
वही जीवन सबसे सुंदर निखरे।

मॉंटगोमरी हिंदी पाठशाला सांस्कृतिक धरोहर और नन्हे कदमों की प्रेरणा

मॉंटगोमरी हिन्दी यू.एस.ए. पाठशाला की स्थापना २०१२ में हुई थी। प्रारम्भ में चार छात्र और दो कक्षा स्तर थे। उसके बाद हर वर्ष विद्यार्थियों की संख्या बढ़ती गई। २०१९ तक हमारे पास लगभग ५५ से अधिक छात्र थे और हमने अपनी कक्षाओं को आठ स्तरों तक विस्तारित कर दिया था। कोविड के बाद कुछ विद्यार्थी ऑनलाइन पढ़ाई के अभ्यस्त हो चुके थे और पारंपरिक शिक्षा में वापस नहीं जाना चाहते थे। इसी कारण हमारे यहाँ छात्रों की संख्या कम हो गई। हमारा मानना है कि आमने-सामने की शिक्षा से विद्यार्थियों में सीखने के प्रति अधिक व्यक्तिगत जुड़ाव और उत्साह पैदा होता है। विद्यार्थी मित्र बना सकते हैं और अधिक सार्थक शिक्षा हासिल कर सकते हैं। हमारे पास कुछ ऐसे अभिभावक भी थे जो पढ़ाना और स्वयंसेवा करना चाहते थे। अब हमारे पास ९ शिक्षक और ३५ छात्र हैं। हम अपनी कक्षा का प्रारम्भ प्रार्थना से करते हैं। कविता पाठ और महोत्सव प्रतियोगिताओं में छात्र और शिक्षक बहुत सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। हम दिवाली और

वार्षिक पिकनिक मनाते हैं। इससे शिक्षकों, अभिभावकों और छात्रों को आपस में जुड़ने का अवसर मिलता है। हमारे पास एक छोटी सी लाइब्रेरी है जहाँ बच्चे हिन्दी की पुस्तकें उधार ले सकते हैं। हमारा मानना है कि कहानी की पुस्तकों के माध्यम से विद्यार्थी अपनी संस्कृति के बारे में सीखते हैं और अपनी भाषा सुदृढ़ करते हैं। हम एक अच्छी घटना साझा करना चाहते हैं - एक तीन वर्ष की छोटी बच्ची, जिसका भाई हमारे साथ पढ़ रहा था, हिन्दी पाठशाला में दाखिला लेना चाहती थी। वह इतनी उत्सुक थी कि उसने अपने भाई की कविता याद कर ली और हमारी कविता पाठ प्रतियोगिता में उसे सुनाया। उसने सबका दिल जीत लिया। इससे हमें यह पता चला कि जब विद्यार्थी भाषा के वातावरण में बड़े होते हैं, तो वे उसे अपने आप सीख लेते हैं। हम विद्यार्थियों को जितना अधिक प्रोत्साहित करेंगे, वे उतनी ही तेजी से हिन्दी भाषा सीखेंगे और अपनी संस्कृति और विरासत से जुड़े रहेंगे।



विल्टन हिंदी पाठशाला

विल्टन से विस्तृत होता हिंदी यू.एस.ए. का परिवार

वर्ष २०१० में कनेक्टिकट राज्य की पहली हिंदी यू.एस.ए. पाठशाला नॉरवॉक/विल्टन में खुली। विल्टन हिंदी यू.एस.ए. पाठशाला कनेक्टिकट में हिंदी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। यह पाठशाला विद्यार्थियों को हिंदी भाषा, संस्कृति और मूल्यों से जोड़ने का कार्य करता है। यहाँ पढ़ाई को रोचक और प्रभावी बनाने के लिए कहानियों, गीतों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का सहारा लिया जाता है।

मेरे मित्र स्वर्गीय विक्रम भंडारी ने हिंदी यू.एस.ए. को कनेक्टिकट में लाने में महत्वपूर्ण और निर्णायक भूमिका निभाई, जिससे इस क्षेत्र में हिंदी शिक्षा को एक सशक्त मंच मिला। वर्ष २०१० में विल्टन पाठशाला में कनिष्ठा-१, कनिष्ठा-२ और प्रथमा-१ स्तरों से कक्षाएँ प्रारम्भ हुईं, जो समय के साथ निरंतर विकसित होती गईं। वर्ष २०१० में विल्टन पाठशाला की बागडोर तनु जी और बलराज जी से होते हुए २०१५ में चेतना जी और अमित जी और अब २०२५ से गरिमा जी और अमित जी के हाथों में हैं।

गरिमा जी के बारे में कहना चाहूँगा कि गरिमा जी विल्टन पाठशाला की संचालिका होने के साथ-साथ, २०१० से अध्यापिका और २०१५ से मध्यमा-२ की स्तर संचालिका भी हैं। वर्ष २०२५ में विल्टन हिंदी यू.एस.ए. पाठशाला ने

१५ वर्ष सफलतापूर्वक पूरे किए और समर्पित स्वयंसेवकों के सहयोग से वर्तमान में यह स्कूल विभिन्न स्तरों पर ५१ विद्यार्थियों को हिंदी शिक्षा प्रदान कर रहा है।

हम हमेशा अभिभावकों को हिंदी यू.एस.ए. से जुड़ने के लिए प्रेरित करते हैं। २०१० के स्थापना वर्ष में अभिभावकों की उत्साहपूर्ण रुचि की देखते हुए कविता और मनीष जी ने स्टैमफोर्ड में कनेक्टिकट की दूसरी पाठशाला की स्थापना की और मुझे यह कहते हुए बहुत खुशी है कि विल्टन से जुड़े हुए और भी कई परिवारों ने आगे चलकर विभिन्न जगहों पर हिंदी यू.एस.ए.

पाठशालाओं की स्थापना की जैसे कि गीतांजलि जी व बसवराज जी (एवॉन, कनेक्टिकट पाठशाला संचालक), रीना जी व रंजन जी (अटलांटा जॉर्जिया पाठशाला संचालक)। शीतल जी (ट्रम्बल, कनेक्टिकट पाठशाला संचालक) भी पहले विल्टन पाठशाला में ही पढ़ाती थीं। विल्टन पाठशाला का उद्देश्य केवल हिंदी भाषा सिखाना ही नहीं, बल्कि बच्चों में भारतीय परंपराओं, त्योहारों और सांस्कृतिक विरासत के प्रति समझ और गर्व विकसित करना भी है। हिंदी यू.एस.ए. प्रवासी भारतीय समुदाय के लिए ऐसा सशक्त केंद्र बन गया है, जहाँ विद्यार्थी अपनी जड़ों से जुड़ कर आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ रहे हैं।



स्टैमफोर्ड हिंदी पाठशाला

परंपराओं और सेवा के १३ स्वर्णिम वर्ष

स्टैमफोर्ड हिंदी स्कूल की स्थापना वर्ष २०१२ में विक्रम भंडारी और कविता राठी की प्रेरणा और प्रयासों से हुई। प्रारम्भिक समय में स्टैमफोर्ड स्कूल सिस्टम के साथ समन्वय करना तथा प्रत्येक शुक्रवार शाम के लिए स्थान प्राप्त करना कठिन और महंगा कार्य था, लेकिन समर्पित टीम और अभिभावकों के सहयोग से यह संभव हो पाया। पहले वर्ष लगभग ६० विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया और उसी से विभिन्न स्तरों की कक्षाओं की नींव पड़ी। विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों को जोड़ने के लिए कविता प्रतियोगिता, दिवाली कार्यक्रम और होली मेला जैसे अनेक आयोजन किए गए। इन सबके बीच एक परंपरा

जिसने बच्चों के दिल में खास जगह बनाई, वह है ग्रेजुएशन के दिन आने वाला आइसक्रीम ट्रक – बच्चे पूरे साल उसका इंतजार करते हैं।

आज हमारा स्कूल १३ वर्ष पूरे कर चुका है। इस आइसक्रीम ट्रक की शुरुआत समन्वयक अजय जैन ने की थी, जो अब हमारी पहचान बन चुकी है।

हमें गर्व है कि स्टैमफोर्ड से जुड़े कई स्वयंसेवक आगे बढ़कर अमेरिका के अन्य शहरों – जैसे ट्रम्बुल, शार्लट और नीधम में भी हिंदी शिक्षण का कार्य आगे बढ़ा रहे हैं। यह हमारे लिए सबसे बड़ी उपलब्धि और प्रेरणा है।



एवॉन हिंदी पाठशाला

पारिवारिक प्रेरणा से सामुदायिक सेवा तक की यात्रा

प्रेरणा और नींव: नमस्ते! मेरा नाम बसवराज गरग है। मैं और मेरी पत्नी गीतांजलि गरग एवन हिंदी पाठशाला के संचालक हैं। हमारी पाठशाला की स्थापना की प्रेरणा हमें अपनी बेटी नितांता से मिली, जिसे बचपन से ही हिंदी पढ़ने का बहुत शौक था। विल्टन पाठशाला हमारे घर से करीब डेढ़ घंटे की दूरी पर थी, जहाँ से नितांता ने स्नातक किया। अपनी बेटी और बेटे नील की प्रेरणा से हमने २०१७ में एवन मिडल स्कूल में इस पाठशाला की नींव रखी। पहले वर्ष हमारे साथ केवल १८ विद्यार्थी और ३ अध्यापक थे।

विकास और विस्तार: शुरुआती दिनों में हमारे पास केवल S-२ और B-१ की कक्षाएँ थीं, लेकिन आज ९ वर्षों की इस यात्रा में सभी ९ स्तरों में कक्षाएँ संचालित हो रही हैं। वर्तमान में हमारे साथ ९५ विद्यार्थी, २० समर्पित अध्यापक-अध्यापिकाएँ और ५ युवा स्वयंसेवक जुड़े हुए हैं। अब तक हमारी पाठशाला से लगभग २० विद्यार्थी स्नातक होकर अपनी भाषा और संस्कृति का मान बढ़ा चुके हैं।

गतिविधियाँ और सामुदायिक जुड़ाव: हम हर वर्ष का प्रारंभ एक 'पहचान सत्र' (Orientation) से करते हैं, ताकि अभिभावक और विद्यार्थी नियमों व शिक्षकों से

परिचित हो सकें। हिंदी शिक्षण के साथ-साथ हम दिवाली उत्सव, सांस्कृतिक कार्यक्रम, नाटक और वार्षिक कविता पाठ प्रतियोगिता का भव्य आयोजन करते हैं। विशेष रूप से, हम हर दिवाली से पहले 'सेवा दिवाली' का आयोजन करते हैं, जिसमें खाद्य सामग्री दान की जाती है। इससे बच्चों में समाज सेवा, नेतृत्व और सामुदायिक भावना का विकास होता है।

विशेष उपलब्धियाँ और गौरव के क्षण: हम

'कनेक्टिकट ऑर्गनाइजेशन ऑफ लैंग्वेज टीचर्स' (COLTS) संस्था से भी जुड़े हैं, जहाँ हमारे विद्यार्थी कविता पाठ, चित्रकला और निबंध लेखन में अपनी प्रतिभा दिखाते हैं। इस वर्ष हमारे लिए गर्व का विषय है कि हमारी युवा स्वयंसेवक महक भार्गव का चयन 'भारत यात्रा' के लिए हुआ है। वर्ष के अंत में आयोजित होने वाली हमारी पिकनिक अध्यापकों, अभिभावकों और विद्यार्थियों के बीच आपसी प्रेम और हँसी-मज़ाक का एक सुंदर अवसर होती है।

हमारा संकल्प: एवॉन हिंदी पाठशाला केवल एक स्कूल नहीं, बल्कि एक ऐसा परिवार है जहाँ हम एक-दूसरे के विचारों का सम्मान करते हैं। हमारा उद्देश्य हर विद्यार्थी को उसकी जड़ों से जोड़े रखना है।



एवॉन हिंदी पाठशाला के शिक्षक और शिक्षिकाएँ

एलिकाँट सिटी हिंदी पाठशाला

एक नई शुरुआत: मैरीलैंड में हिंदी की जड़ें और ११ वर्षों की यात्रा

इस पाठशाला की स्थापना मुरली और संध्या तुलश्यान ने सितम्बर २०१५ में की, यद्यपि यह इनका दूसरा चरण है। पहले चरण में इन्होंने जर्सी सिटी हिंदी पाठशाला की स्थापना सन् २००८ में की थी और उसका संचालन २०१४ तक किया। इनका बड़ा पुत्र वहीं से स्नातक हुआ। उसने और बाकी सभी छात्रों ने जो हिंदी भाषा सीखी, जो मित्रताएँ बनाई और अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जो जुड़ाव अनुभव किया, उसे देखकर इनको अपने छोटे पुत्र के लिए भी एक ऐसी ही पाठशाला फिर से आरम्भ करने की प्रेरणा मिली। विशेषकर जब वे मैरीलैंड आ बसे, तो इन्हें यहाँ इतनी सुव्यवस्थित अन्य हिंदी पाठशाला नहीं मिली और उन्होंने तय किया कि यहाँ की भारतीय प्रवासी समुदाय को एक स्थानीय हिंदी पाठशाला से भारी लाभ होगा।

आरम्भ में इन्हें विद्यार्थियों को जोड़ने, स्वयंसेवी शिक्षकों को खोजने और पाठशाला की जानकारी को जन-जन तक पहुँचाने में बड़ी कठिनाई हुई। इन्होंने मंदिरों, भारतीय किराना दुकानों और विद्यालयों में पर्चे वितरित किए, सामुदायिक सूचना-पट्टों पर विज्ञापन लगाए और मुँह-जबानी प्रचार किया। इसके अतिरिक्त, कुछ पुस्तकालयों और मंदिरों में अनौपचारिक हिंदी कक्षाएँ पहले से चल रही थीं, इसलिए अपनी पाठशाला की संरचित, कक्षा-आधारित शिक्षण पद्धति को अलग रूप से प्रस्तुत करना भी एक चुनौती थी।

पहला वर्ष २८ विद्यार्थियों और तीन स्तरों से शुरू हुआ। आज, ११ वर्षों की अथक यात्रा के पश्चात्, इस पाठशाला में हिंदी यू.एस.ए. के सभी नौ स्तर संचालित होते हैं और १२० से अधिक विद्यार्थी हिंदी का ज्ञानार्जन कर रहे हैं। अब तक ३५ से भी अधिक छात्र स्नातक हो चुके हैं उनमें से अधिकांश छात्र युवा स्वयंसेवक बन कर

पाठशाला से जुड़े रहे हैं। इनके छोटे पुत्र ने सन् २०२२ में हिंदी पाठशाला से स्नातक किया और द्विसाक्षरता की मुहर भी प्राप्त की। इनका मानना है कि यह पाठशाला इनकी सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक है।

इन्होंने प्रतिवर्ष कविता प्रतियोगिता एवं वार्षिकोत्सव (Annual Function) का आयोजन किया, जो न केवल विद्यार्थियों की प्रतिभा प्रदर्शन का मंच बना, बल्कि हिंदी भाषा और सम्पूर्ण परिवार के लिए भारतीय संस्कृति के उत्सव का एक अवसर भी। नए विद्यार्थियों के लिए अभिविन्यास (orientation) कार्यक्रम और अभिभावक-मिलन रातें (back-to-school nights) आयोजित की गईं, जिनसे पारदर्शिता बढ़ी और समुदाय का जुड़ाव भी गहरा हुआ।

इस पाठशाला की सबसे बड़ी शक्ति इनके अभिभावक और स्वयंसेवक हैं। वे सभी खाना लाने से लेकर फोटोग्राफी, दान देने, और कार्यक्रम आयोजन में सहयोग देने तक — हर कदम पर साथ खड़े रहते हैं। विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि अनेक स्वयंसेवक शिक्षक अपने बच्चों के स्नातक हो जाने के वर्षों बाद भी इस पाठशाला से जुड़े हुए हैं और निःस्वार्थ भाव से अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। यह समर्पण ही हमारी पाठशाला की असली पहचान है। यह केवल एक विद्यालय नहीं, बल्कि एक परिवार है।

इस पाठशाला की विशेष उपलब्धि यह भी है कि इनके प्रयास के कारण हॉवर्ड काउंटी ने हिंदी भाषा को मान्यता दी है और अब यह द्विसाक्षरता मुहर (Seal of Biliteracy) के लिए अधिकृत है। यह मुहर उन हाई स्कूल विद्यार्थियों को प्रदान की जाती है जो हिंदी पाठशाला से उत्तीर्ण होने के साथ-साथ एक निर्धारित परीक्षा में उच्च अंक प्राप्त करके अपनी भाषा में दक्षता

का प्रमाण देते हैं। अब तक इस पाठशाला के दो विद्यार्थी इस कठिन परीक्षा में उत्तीर्ण हो कर यह प्रतिष्ठित मुहर प्राप्त कर चुके हैं, और इस पाठशाला से जुड़े सभी

स्वयंसेवक निरंतर प्रयासरत हैं कि भविष्य में सभी स्नातक विद्यार्थी इस अवसर का लाभ उठा सकें।



मेरा हिन्दी अनुभव



नमस्ते, मेरा नाम प्रिआंका निहलानी है। मैं एवॉन हिंदी पाठशाला में मध्यमा-३ की छात्रा हूँ और मैं पिछले ७ वर्षों से हिंदी सीखने के अपने अनुभव बताना चाहती हूँ। हिन्दी पाठशाला में मैं हिंदी पढ़ना, लिखना और बोलना सीखती हूँ। हिन्दी पाठशाला में मुझे कविता प्रतियोगिता अच्छी

लगती है और मुझे हमारे दीवाली कार्यक्रम और पिकनिक में भाग लेना बहुत पसंद है। मेरी मनपसंद कविता "चाँद का कुर्ता" है। जब मैं भारत जाती हूँ तब मैं अपनी नाना-नानी, दादू, और दादी से मिलती हूँ और उनके साथ मैं हिन्दी बात करती हूँ। इतने वर्षों में मैंने कुछ अच्छे दोस्त बनाए हैं। मुझे हिन्दी सीखना पसंद है। मुझे खुशी है कि मैं हिंदी सीख रही हूँ और मुझे मेरे शिक्षक बहुत पसंद हैं।

ट्रम्बल हिंदी पाठशाला छोटा परिवार, गहरा जुड़ाव

प्रेरणा और स्थापना: हमारी ट्रम्बल हिंदी पाठशाला की नींव वर्ष २०१७ में स्टैम्फर्ड पाठशाला के मनीष जी की प्रेरणा से रखी गई थी। शुरुआती दौर में हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौती ट्रम्बल शहर में पब्लिक स्कूलों का अत्यधिक किराया और विद्यार्थियों की सीमित संख्या थी। इन कठिनाइयों के बावजूद, हमने पहले वर्ष में १० विद्यार्थियों और ४ स्तरों के साथ अपनी यात्रा शुरू की। आज ९ वर्षों के सफल सफर के बाद, हमारे पास १६ विद्यार्थी और ६ समर्पित शिक्षक हैं जो पूरी निष्ठा से हिंदी सेवा में लगे हुए हैं।

हमारी गतिविधियाँ और सामुदायिक जुड़ाव: हमारी पाठशाला में कविता पाठ प्रतियोगिता, दिवाली उत्सव और रिपोर्ट कार्ड वितरण समारोह मुख्य आकर्षण रहते हैं। हम होली और लोहड़ी जैसे त्योहारों को कला और शिल्प (Art & Craft) के माध्यम से मनाते हैं, जिससे बच्चे खेल-खेल में अपनी संस्कृति को समझते हैं। हमारी सभी शिक्षिकाएँ पेशेवर कामकाजी महिलाएँ हैं, लेकिन हिंदी सिखाने के प्रति उनका उत्साह और ऊर्जा हम सभी को

प्रेरित करती है। अभिभावकों का सहयोग और उनकी अपनी जड़ों से जुड़े रहने की प्रबल इच्छा ही इस स्कूल को निरंतर चलाए रखने की सबसे बड़ी शक्ति है। एक अविस्मरणीय याद वर्ष २०२५ की होली हमारे लिए अत्यंत विशेष और सफल रही। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य हिंदी में वार्तालाप को बढ़ावा देना था। इसमें छोटे स्तर (S1, S2) के बच्चों ने पोस्टर प्रस्तुति दी, प्रथमा-१ के विद्यार्थियों ने 'क्वील ऑफ फॉर्च्यून' गेम खिलाया, तो मध्यमा के बच्चों ने 'कहुत' (Kahoot) के जरिए सबका मनोरंजन किया। वहीं उच्च स्तर के विद्यार्थियों ने एक प्रभावी वाद-विवाद (Debate) प्रतियोगिता में भाग लिया। शिक्षकों और अभिभावकों की सक्रिय भागीदारी ने इस कार्यक्रम को यादगार बना दिया।

हमारा विश्वास: ट्रम्बल हिंदी पाठशाला भले ही आकार में छोटी हो, पर हमारा संकल्प बहुत बड़ा है। यहाँ का हर परिवार अपनी भाषा और संस्कारों के प्रति समर्पित है, और यही एकजुटता हमारी असली पहचान है।



कमिंग/अटलांटा (जॉर्जिया) हिंदी पाठशाला

रंजन पठानिया — संचालक

हिंदी यू.एस.ए. कमिंग/अटलांटा की स्थापना २०१८ में ३० विद्यार्थियों के साथ हुई थी। पिछले ७ वर्षों में यह केंद्र बढ़कर १७० से अधिक विद्यार्थियों तक पहुँच गया है। २२ समर्पित शिक्षकों, २ छात्र स्वयंसेवकों और अनेक अभिभावक स्वयंसेवकों के सहयोग से हम हिंदी यू.एस.ए. के सभी स्तरों की कक्षाओं का सफल संचालन कर रहे हैं।

अभिभावक हमारे सुसंगठित पाठ्यक्रम और नियमित कक्षा जैसी संरचना की विशेष सराहना करते हैं, जिससे विद्यार्थी इसे केवल एक गतिविधि नहीं बल्कि एक औपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के रूप में सम्मान और गंभीरता से लेते हैं।



ऑनलाइन हिंदी पाठशाला

हिंदी भाषा को घर-घर पहुँचाने का सशक्त माध्यम



राजीव श्रीवास्तव



इंदु श्रीवास्तव

यू.एस.ए. के माध्यम से हिंदी भाषा और संस्कृति को उत्तरी अमेरिका में ही नहीं अपितु विश्व के हर कोने में रहने वाले कोटि-कोटि बच्चों और युवाओं तक पहुँचा सकें। अमेरिका के हर नगर में हिंदी पाठशाला खोलने के स्वप्न की शुरुआत सन् २००१ से हो गई थी, और २०१९ आते-आते २० पाठशालाएँ खुल भी गयीं थीं। २०२० में जब कोविड का संकट आया तो ऐसा लगा मानो यह अश्वमेध अब रुक जाएगा, परन्तु सारी पाठशालाओं में उस वर्ष ऑनलाइन कक्षाएँ चलीं, और न्यू जर्सी ही नहीं वरन् अमेरिका के अन्य कई प्रदेशों से बच्चे जुड़ गए। कोविड के बाद जब फिर से इन-पर्सन पाठशालाएँ खुलीं तो समस्या यह थी कि उन शहरों के बच्चे अब किधर और कैसे पढ़ेंगे जहाँ पाठशालाएँ नहीं थीं। संस्थापकों ने उन बच्चों की हिंदी शिक्षा की निरंतरता बनाये रखने के लिए ऑनलाइन पाठशाला खोलने का

निर्णय लिया। यूँ कहिये कि माँ भारती की सेवा को गति देने के लिए हमें एक नया माध्यम मिल गया। कब ऑनलाइन पाठशाला में विद्यार्थियों की संख्या १०० से ३८१ हो गई, कब हिंदी यू.एस.ए. की सेवाएँ न्यूजर्सी-ईस्ट कोस्ट को पार कर पूरे अमेरिका के विभिन्न २० प्रदेशों में उपलब्ध हो गयीं, पता ही नहीं चला। आज ऑनलाइन पाठशाला को स्थापित हुए पाँच वर्ष हो गये हैं। इस पाठशाला को प्रारंभ करने एवं संचालन करने में हिंदी यू.एस.ए. के संस्थापकों, पाठशाला संचालकों, स्तर संचालकों, और स्वयंसेवकों का अभूतपूर्व योगदान रहा है। वर्तमान और भविष्य में ऑनलाइन पाठशाला के संचालन में बहुत से कर्मठ स्वयंसेवकों की आवश्यकता होगी। इस लेख के माध्यम से हम ऑनलाइन पाठशाला के संचालकों का आप सभी से आह्वान है कि अधिक से अधिक सुयोग्य और प्रतिबद्ध लोगों को स्वयंसेवक के रूप में जुड़ने के लिए प्रेरित करें जिससे माँ भारती के इस अश्वमेध को हमारी भावी पीढ़ियों तक पहुँचाया जा सके।



टेमेकुला हिंदी पाठशाला दैवीय प्रेरणा से सामुदायिक सेवा तक

स्थापना और दिव्य प्रेरणा: नमस्ते! टेमेकुला हिंदी पाठशाला का प्रारम्भ १४ अगस्त २०२५ को हुआ, जो मेरे लिए किसी दिव्य लीला से कम नहीं था। जब मैं अपने बच्चे के लिए हिंदी शिक्षक की तलाश कर रहा था, तब मुझे हिंदी यू.एस.ए. के बारे में पता चला और लगभग उसी समय एक स्वयंसेवक ने भी मुझसे संपर्क किया। इन घटनाओं की सुंदर श्रृंखला ने मुझे स्पष्ट संकेत दिया कि हमारे समुदाय में एक हिंदी पाठशाला की आवश्यकता है। मेरी पत्नी की प्रेरणा और निरंतर सहयोग ने मुझे इस मार्ग पर आगे बढ़ने का साहस दिया।

हमारी टीम और पहले वर्ष का उत्साह: ईश्वर की कृपा से हमें छह समर्पित शिक्षकों का साथ मिला, जिन्होंने स्वयंसेवक के रूप में अपना बहुमूल्य समय देने का

संकल्प लिया। पहले ही वर्ष में २८ विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया और हमने तीन अलग-अलग स्तरों के साथ एक मजबूत शैक्षणिक आधार स्थापित किया। अब तक की हमारी यह यात्रा अत्यंत सुखद रही है, जहाँ बिना किसी बड़ी चुनौती के हमने मिलकर दीपावली का उत्सव मनाया और अपनी पहली 'कविता पाठ प्रतियोगिता' का सफल आयोजन किया।

हमारी शक्ति और भविष्य: अभिभावकों और शिक्षकों का अटूट सहयोग हमारी सबसे बड़ी शक्ति है। उनका उत्साह और टीम वर्क कठिन से कठिन कार्य को भी सरल बना देता है। मैं उन सभी के प्रति हृदय से कृतज्ञ हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी हम इसी प्रकार एकजुट होकर अपनी भाषा और संस्कृति को आगे बढ़ाते रहेंगे।

- वेद प्रकाश भार्गव



चैस्टरफील्ड पाठशाला

मधु राजपाल - संचालिका

२००६ में हम भारत से दूर एक नए शहर (बॉर्डनटाउन, न्यू जर्सी) में बसे, जहाँ भारतीय संस्कृति और भाषा को जीवित रखना एक चुनौती लग रही थी। तभी हमें हिंदी यू.एस.ए. के बारे में पता चला — एक ऐसी अद्भुत संस्था जो न्यू जर्सी के स्थानीय समुदायों में हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति को सँजोने और फैलाने का अतुलनीय कार्य कर रही है। यह संस्था न केवल भाषा सिखाती है, बल्कि पीढ़ियों को अपनी जड़ों से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य करती है।

२०१० में हमें सौभाग्य मिला कि हम हिंदी यू.एस.ए., चैस्टरफील्ड से जुड़ सकें। यहाँ की कक्षाओं में जो समर्पण, अनुशासन और सांस्कृतिक चेतना दिखी, वह अत्यंत प्रेरणादायक थी। इस विद्यालय के शिक्षक अत्यंत उत्कृष्ट, समर्पित और प्रतिबद्ध रहे हैं। इस विद्यालय के शिक्षक बहुत ही अद्भुत और अत्यंत निष्ठावान रहे हैं,

जिनके योगदान से चैस्टरफील्ड हिंदी स्कूल की सफलता में अत्यंत महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है।

हिंदी यू.एस.ए. का योगदान अमूल्य है। इस संस्था ने अनगिनत बच्चों को हिंदी भाषा का ज्ञान देकर उन्हें भारतीय संस्कृति, परंपरा और पहचान से जोड़े रखा है। हमें हृदय से गर्व है कि हमारी दोनों बेटियों ने हिंदी यू.एस.ए. से स्नातक किया। इससे बड़ी खुशी और क्या हो सकती है! और यह गर्व तब और भी बढ़ जाता है जब हम देखते हैं कि वे स्नातक के पश्चात भी हिंदी यू.एस.ए. के साथ स्वयंसेवक के रूप में जुड़ी हुई हैं — क्योंकि यह संस्था केवल एक पाठशाला नहीं, एक संस्कार है जो जीवन भर साथ रहता है।

हम हिंदी यू.एस.ए. परिवार का हिस्सा होकर स्वयं को धन्य समझते हैं।



Guru ARCHANA JOGLEKAR
The IVY LEAGUE KATHAK DANCE ACADEMY
Archana Arts (established 1963)

TEACH YOUR CHILD THE RIGHT & THE BEST KATHAK
 Offering structured KATHAK curriculum up to Masters Level

For Enrollment: Visit Us : 4 Railroad Ave, Somerset, NJ 08873

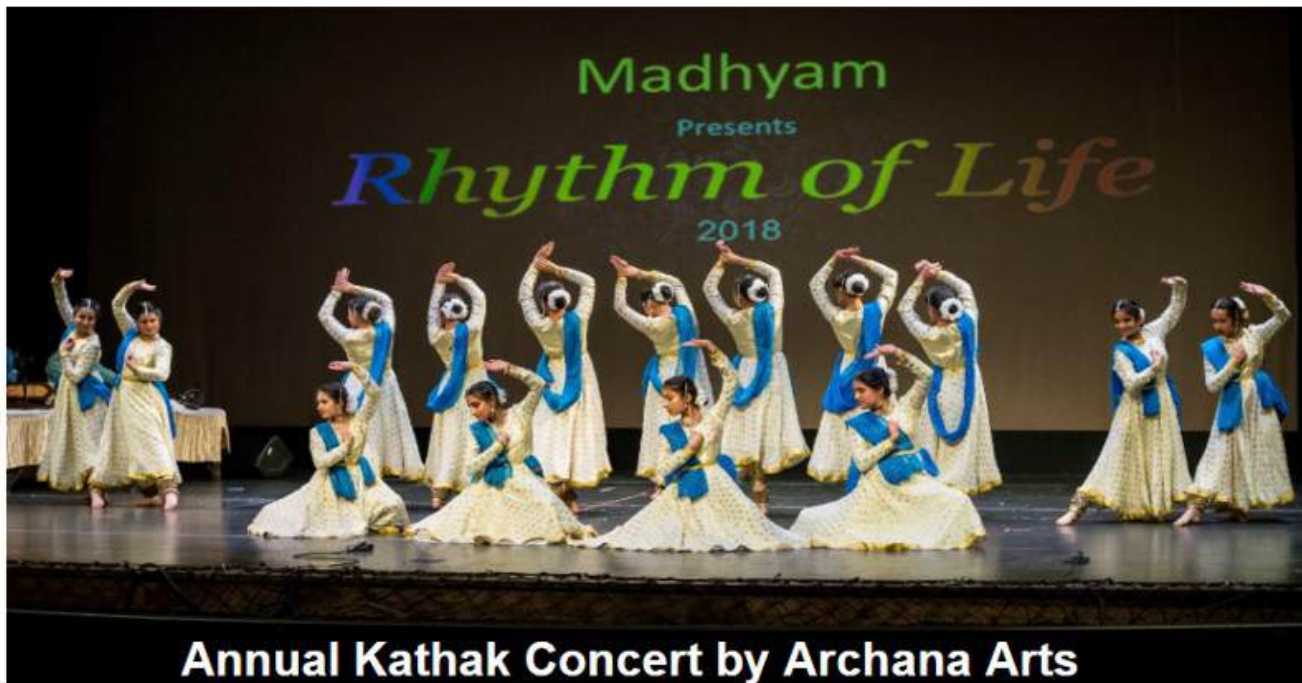
Email Us : kathaknj@aol.com

Call Us : 609 309 3288

Good News!!

Archana Arts Kathak Dance Academy is now coming closer to you,
 with new branches in:

Edison • Plainsboro • Parsippany



The academy has a strong reputation for grooming students into accomplished Kathak dancers and confident, graceful individuals. It provides deep insight into Indian culture and a solid foundation in both theory and practice, including lay-taal and bhav, while also developing clear diction as an integral part of the curriculum.

युवा स्वयंसेवक अभिनंदन समारोह - २०२६

२२ मार्च २०२६ को एडिसन स्थित स्पाइस कल्चर भोजशाला में हिंदी यू.एस.ए. द्वारा युवा स्वयंसेवक सम्मान समारोह का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में ५० से अधिक युवा स्वयंसेवकों और २० से अधिक पाठशाला संचालकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन माणक काबरा और सरिता नेमानी द्वारा किया गया, जबकि सुनील दुबे ने ऑडियो और फोटोग्राफी की उत्कृष्ट व्यवस्था संभाली।

कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन से हुई, जो श्री राज मित्तल जी द्वारा किया गया। चूँकि यह समय नवरात्रि का था, सभी उपस्थित जनों ने मिलकर भक्ति भाव से राम स्तुति गाई, जिससे वातावरण अत्यंत आध्यात्मिक और प्रेरणादायक बन गया।

इस वर्ष हिंदी यू.एस.ए. के युवा स्वयंसेवकों की संख्या बढ़कर २५० हो गई है, जो पिछले वर्ष के २०६ की तुलना में उल्लेखनीय वृद्धि को दर्शाती है। इसके बाद स्वयंसेवकों के सम्मान का क्रम शुरू हुआ, जिसमें प्रत्येक स्कूल के संचालकों ने अपने-अपने स्वयंसेवकों का परिचय कराया और उनके द्वारा किए गए विशेष कार्यों को सभी के साथ साझा किया।

कार्यक्रम के अंत में एक विशेष उपलब्धि के रूप में हिंदी यू.एस.ए. के युवाओं द्वारा विकसित मोबाइल ऐप का उल्लेख किया गया। इस महत्वपूर्ण योगदान के लिए उन्हें विशेष उपलब्धि प्रमाणपत्र प्रदान किया गया। इंदु जी और राजीव जी ने इस ऐप के विकास, विशेषताओं, तकनीकी सहयोग और भविष्य की योजनाओं पर प्रकाश डाला और इसके पीछे किए गए प्रयासों के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

युवा स्वयंसेवक पढ़ने से साथ-साथ भारतीय संस्कृति से भी परिचित हैं ये उनके सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी झलका जब उन्होंने गाने और नृत्य से समा बाँधा। कार्यक्रम का समापन एक आनंदमय और बेहद लोकप्रिय गतिविधि के साथ हुआ — पुराने हिंदी फिल्मी गीतों की अंताक्षरी, जिसमें सभी ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और शाम को यादगार बना दिया।

यह समारोह न केवल युवाओं के समर्पण और योगदान का सम्मान था, बल्कि आने वाली पीढ़ी को प्रेरित करने का एक सुंदर प्रयास भी रहा जो गर्व और आत्मीयता के साथ हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति को आगे बढ़ा रही है। प्रस्तुत है एक छोटी से कविता हमारे युवा स्वयंसेवकों के लिए:

हर शुक्रवार स्कूल में, तुम जो समय बिताते हो,
नन्हे-नन्हे बच्चों के मन में, भाषा के बीज लगाते हो।
कभी अक्षर, कभी शब्द, कभी कहानी बन जाती है,
तुम्हारी मुस्कान से बच्चों की कक्षा खिल जाती है।
कविता पाठ, महोत्सव में, जब तुम आगे बढ़ते हो,
परदे के पीछे रहकर भी, कार्यक्रम सफल बनाते हो।
चलते रहो इस पथ पर, रोशनी तुमसे ही फैलेगी,
हिंदी की ज्योति तुमसे—अगली पीढ़ी तक जाएगी।



समारोह के कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ





२० वर्षों का भावनात्मक रिश्ता

मायनो मुर्मू

संचालिका, ईस्ट ब्रुंस्विक

अमेरिका में मेरी नई ज़िंदगी की शुरुआत एक बहुत ही भावुक अनुभव के साथ हुई - 'हिंदी यू.एस.ए.' के साथ जुड़ाव। आज, २०२६ में जब 'हिंदी यू.एस.ए.' अपनी २५वीं वर्षगांठ मना रहा है, तब पीछे मुड़कर देखने पर लगता है कि ये २० साल कैसे बीत गए, इसका एहसास ही नहीं हुआ। यह सफर सिर्फ समय का नहीं, बल्कि भावनाओं, सीख और संबंधों का सफर रहा है। जब हम ईस्ट ब्रुंस्विक आए, तो मेरी सबसे बड़ी चिंता यही थी कि मेरे बच्चे अपनी भाषा और संस्कृति से जुड़े रहें। हर माँ की तरह मैं चाहती थी कि वे अपनी जड़ों को न भूलें। मुझे लगता था कि भाषा ही वह माध्यम है जो उन्हें अपने परिवार और परंपराओं से जोड़ सकती है। इसी खोज में मुझे हिंदी स्कूल के बारे में पता चला। मैंने बिना देर किए अपने बच्चों का नामांकन कराया और स्वयं भी एक अभिभावक व शिक्षिका के रूप में जुड़ गई।

नई जिम्मेदारी

एक दिन मीटिंग के अंत में रचिता जी ने मुझे ईस्ट ब्रुंस्विक स्कूल की संचालिका की जिम्मेदारी सौंप दी। उस क्षण मुझे ऐसा लगा जैसे किसी गुरु ने आशीर्वाद के साथ एक बड़ी जिम्मेदारी दी हो। कुछ लोगों को संदेह था कि मैं यह भूमिका निभा पाऊँगी, लेकिन मुझे विश्वास था कि टीम के साथ मिलकर हर चुनौती पार की जा सकती है। २००५ में जब मैंने यह जिम्मेदारी संभाली, तब स्कूल में केवल १७ बच्चे थे। धीरे-धीरे यह संख्या बढ़ती गई और एक समय ऐसा आया जब छात्रों की संख्या ९० से अधिक हो गई। उस समय संसाधनों की कमी, कागजी काम और शिक्षकों की कमी जैसी चुनौतियाँ थीं, लेकिन टीम

के सहयोग और रचिता जी के मार्गदर्शन से सब संभव होता गया। मेरे पति का भी मुझे हमेशा समर्थन मिला, जिससे मैं निश्चित होकर इस कार्य में समर्पित रह सकी।

परिवार जैसा माहौल

मुझे आज भी वे शुरुआती दिन याद हैं जब मित्तल जी और सुमन जी के घर बैठकों का आयोजन होता था। वहाँ का वातावरण बिल्कुल भारत जैसा लगता था— अपनापन, सहयोग और एक परिवार की भावना। मेरे बच्चे भी इस माहौल से इतने जुड़े कि वे खुद मुझे मीटिंग में जाने की याद दिलाते थे।

ग्रीन कार्ड के लिए १८ साल का लंबा इंतजार मेरे जीवन का कठिन दौर था। उस समय जब मैं कानूनी कारणों से काम नहीं कर सकती थी, तब 'हिंदी यू.एस.ए.' मेरे लिए एक सहारा बना। इस मंच ने मुझे पहचान, उद्देश्य और आत्मबल दिया। अपने परिवार से दूर होने का दुख तो था, लेकिन यहाँ के शिक्षकों और उनके परिवारों ने मुझे इतना प्यार दिया कि वह कमी कभी महसूस नहीं हुई। डॉ. सुनीता गुलाटी जी का मार्गदर्शन मेरे लिए हमेशा संबल रहा। वहीं, नेहा जी, सारिका जी और सेजल जी ने मुझे रोज़ आने-जाने में मदद की। जब मैं भारत जाती थी, तब आरती जी, सविता नायक जी, स्वागता जी, श्वेता जी, पूजा जी, मीनाक्षी जी और अन्य साथियों ने मेरे बच्चों का ध्यान अपने बच्चों की तरह रखा। मेरे बच्चों ने इस स्कूल को अपना दूसरा घर माना। मेरी बेटी संधायनी और बेटे अभिसार ने यहीं से अपनी शिक्षा पूरी की। संधायनी का 'कर्मभूमि' पत्रिका के कवर पर आना और छोटे बच्चों के लिए कोरियोग्राफी करना गर्व के

क्षण रहे, वहीं अभिसार का 'भारत यात्रा' टीम में शामिल होना हमारे लिए विशेष उपलब्धि थी।

यादगार पल

हमारी टीम की सफलता में कई शिक्षकों का विशेष योगदान रहा है, जिन्हें 'बेस्ट टीचर' जैसे सम्मानों से नवाजा गया। नाटक, नृत्य और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से हमने बच्चों को न केवल भाषा सिखाई, बल्कि आत्मविश्वास और अभिव्यक्ति की कला भी सिखाई। मेरी शादी की २५वीं सालगिरह पर 'हिंदी यू.एस.ए.' परिवार द्वारा दिया गया सरप्राइज मेरे जीवन के सबसे भावुक पलों में से एक है। मुझे 'Lifetime Service Award' और 'समर्पित स्वयंसेविका' के रूप में सम्मानित किया जाना मेरे लिए गर्व की बात रही। जब मुझे टेक्सास जाना पड़ा, तब जो विदाई मिली, वह दिल को छू लेने वाली थी। ऐसा लगा जैसे मैं अपने परिवार से विदा ले रही हूँ। बाद में जब मैं वापस आई, तो

'वेलकम बैक' कार्यक्रम ने फिर वही अपनापन महसूस कराया। स्वागता जी ने इस दौरान जिस तरह जिम्मेदारी निभाई, वह प्रशंसनीय है।

परंपरा आज भी जीवित है

आज भी हमारी टीम - श्रुति जी, शिल्पा जी, रितु जी, टीना जी, सुभ्रता जी, शशि जी, सरिता जी, रश्मि जी, नीतू जी, और युवा स्वयंसेवक उसी समर्पण के साथ स्कूल को आगे बढ़ा रहे हैं।

आभार और शुभकामनाएँ

मैं दिल से उन सभी का धन्यवाद करती हूँ जिन्होंने इस सफर को इतना सुंदर बनाया। देवेंद्र जी, रचिता जी और 'हिंदी यू.एस.ए.' के हर सदस्य का सहयोग इस सफलता की नींव है। मैं ईश्वर और अपनी स्वर्गीय माँ के आशीर्वाद के लिए कृतज्ञ हूँ।

आशा है कि आने वाले वर्षों में भी हमारी भाषा, संस्कृति और यह परिवार इसी तरह फलता-फूलता रहेगा।

एक ऐतिहासिक मिलन: राष्ट्रपति भवन में गौरवशाली क्षण



एक गरिमामय क्षण, जहाँ हमारी संस्था की स्वयंसेविका मायनो मुर्मू को राष्ट्रपति भवन में महामहिम से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

जन-जन की भाषा हिंदी



विश्वजीत वुडब्रिज हिन्दी पाठशाला में उच्चस्तर-१ के अध्यापक हैं। इन्होंने गणित में विद्यावाचस्पति (PhD) की उपाधि प्राप्त की है। इन्हें हिन्दी से विशेष लगाव है। ये भारत में बरेली से हैं तथा अमेरिका में एडिसन, न्यूजर्सी में रहते हैं।

सुन्दर सरल प्रवाही उत्तम
जन-मन की अभिव्यक्ति हिंदी
उच्च व्याकरण शब्द समागम
अर्थपूर्ण मृदुभाषी हिंदी।
सत्य सनातन मोहक भोली
अनुपम भावुक भाषा हिंदी
शिष्टाचार से भरी है बोली
सज्जनता की भाषा हिंदी।
अंग्रेजी हो, या हो सिंधी
भाषाओं की मित्र है हिंदी
भारत की मिट्टी से निकली
एक सुगन्धित इत्र है हिंदी।
सागर में मिलती नदियों सी
सबको एक बनाती हिंदी
बोल, नाद और लिपि एक सी
अनुपम शान दिखाती हिंदी।
गंगा, यमुना जैसा संगम
हिंदी अविरल धारा है
हिन्दी की एक डुबकी में
अंतर्मन उजियारा है।
तुलसी, सूर, कबीर की भाषा
प्रेम चंद की शान है हिंदी
आज़ादी के दीवानों की
तरकश, तीर, कमान है हिंदी।

है लाखों चेहरों की मुस्कान
दुनियाभर की आशा हिंदी
ऊंच-नीच का भेद मिटाती
जन-जन की अभिलाषा हिंदी।
माँ के आँचल की छाया में
सीखी मीठी बोली है
गर्व मुझे अपनी भाषा पर
यह मेरी चंदन रोली है।
सब कुछ छूट जाये जीवन में,
पर यह नाता न टूटेगा
हिंदी मेरी माँ की ममता
भला कौन इससे रूठेगा।
तन-मन से वंदन है मेरा
जन मानस की भाषा को
अभिनंदन हिन्दी विदियों का
भावी प्रकरित आशा को।
हिंदी भाषा में तोता भी
राम-राम जब गाता है
तब-तब मेरे रोम-रोम में
अमृत सा बह जाता है।
जन-जन की साँसों में शामिल
भाषा एक महान है हिंदी
सबकी आश-किरण है हिंदी
भारत की मुस्कान है हिंदी।

हिन्दी यू.एस.ए. - २५ वर्षों से भाषा और संस्कृति की साधना



मेरा नाम संपदा शहा है। मैं पिछले ११ वर्षों से हिंदी यू.एस.ए. से जुड़ी हुई हूँ और पिछले ३ वर्षों से ऑनलाइन पाठशाला में मध्यमा-३ की कक्षा में हिंदी की अध्यापिका के रूप में कार्यरत हूँ। मैंने विज्ञान (इलेक्ट्रॉनिक्स) में स्नातक किया है और इसके बाद फाइनेंशियल एडमिनिस्ट्रेशन में एम.बी.ए. किया है। हिंदी अध्यापिका बनने से पहले मैंने ५ वर्षों तक कंप्यूटर साइंस की अध्यापिका के रूप में कार्य किया। इसके अतिरिक्त मैं पिछले २१ वर्षों से आई टी क्षेत्र में डेटा, आर्किटेक्चर और ए. आई. से जुड़े कार्य कर रही हूँ। मुझे हिंदी भाषा और संस्कृति से जुड़ा काम करना और पेंटिंग करना बहुत पसंद है।

भाषा केवल बोलने या लिखने का माध्यम नहीं होती। यह हमारी संस्कृति, भावनाओं और पहचान की अभिव्यक्ति होती है। हिंदी भाषा ने पीढ़ियों को जोड़े रखा है और हमारे ग्रंथों के ज्ञान को आगे बढ़ाया है। ग्रंथ केवल धार्मिक अध्ययन तक सीमित नहीं हैं, वे मानवीय संवेदनाओं और मूल्यों को सहज रूप में प्रस्तुत करते हैं। वे हमें सही और गलत का भी बोध कराते हैं और जीवन को समझने की दृष्टि देते हैं। आधुनिक काल में ग्रंथों के साथ कई और माध्यमों से हिंदी साहित्य हमें ज्ञान देने के लिए उपलब्ध है। इन सब माध्यमों का उपयोग ज्ञान प्राप्ति के लिए किया जा सकता है। पर यह सब समझने के लिए आज की पीढ़ी को हिंदी सिखाना बहुत आवश्यक है।

भारत से बाहर, विशेषकर अमेरिका और कुछ अन्य देशों में रहने वाले बच्चों के लिए हिंदी सीखने के नियमित और संगठित अवसर पहले बहुत सीमित थे। अभिभावक अपने स्तर पर बच्चों को भाषा और संस्कृति से जोड़ने का प्रयास करते रहे, पर एक व्यवस्थित मंच की कमी महसूस होती थी। ऐसे समय में हिन्दी यू.एस.ए. ने अभिभावकों और विद्यार्थियों दोनों के लिए यह प्रक्रिया सरल बनाई। हिंदी सिखाकर इस संस्था ने बच्चों को ग्रंथ पढ़ने और समझने का अवसर दिया, जिससे उनके सामने

एक विशाल खजाना खुल गया।

एक हिंदी शिक्षिका के रूप में मैंने अनुभव किया है कि हिंदी पढ़ाना केवल व्याकरण सिखाने तक सीमित नहीं होता। यह विद्यार्थियों को उनकी जड़ों से जोड़ने और जीवन मूल्यों से परिचित कराने की प्रक्रिया है। मैं इस संस्था से ग्यारह वर्षों से एक अभिभावक के रूप में जुड़ी हूँ और अब शिक्षिका के रूप में समाज को कुछ लौटाने का अवसर पा रही हूँ।

आज के तकनीकी और वैश्वीकरण के दौर में हिंदी को बच्चों के लिए रुचिकर बनाए रखना आसान नहीं है। ऐसे समय में हिन्दी यू.एस.ए. एक सेतु के रूप में कार्य करता रहा है। एक घर से प्रारम्भ हुई यह पहल आज हर वर्ष कई देशों में चार-पाँच हजार विद्यार्थियों तक पहुँच रही है। सैकड़ों स्वयंसेवकों के समर्पण और सेवा भाव से यह कार्य निरंतर आगे बढ़ रहा है।

इन २५ वर्षों की यह यात्रा केवल समय की गिनती नहीं, बल्कि हिंदी भाषा, हिंदू ग्रंथों और सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति निरंतर समर्पण की कहानी है। इस रजत जयंती के अवसर पर मैं हिन्दी यू.एस.ए. को हृदय से बधाई देती हूँ और कामना करती हूँ कि यह संस्था आने वाले वर्षों में भी भावी पीढ़ियों को भाषा, संस्कृति और मूल्यों से जोड़ती रहे।

हिंदी यू.एस.ए. के २५ वर्ष

प्रवासी पीढ़ियों को जड़ों से जोड़ती एक सशक्त पहल



मेरा नाम मंजू अग्निहोत्री है और मैं हिंदी यू.एस.ए. की वुडब्रिज पाठशाला में प्रथमा-२ की शिक्षिका हूँ। मुझे खाली समय में चित्रकला, लेखन, संगीत सुनना, खेलकूद की गतिविधियों में भाग लेना, नई-नई चीजें सीखना एवं यात्रा करना पसंद है।

अमेरिका में रहते हुए हर भारतीय अभिभावक के मन में एक प्रश्न अवश्य उठता है—क्या हमारे बच्चे अपनी जड़ों से जुड़े रह पाएँगे? आधुनिक शिक्षा, व्यस्त जीवन और बहुसांस्कृतिक वातावरण के बीच अपनी भाषा और संस्कारों को सहेज कर रखना आसान नहीं। ऐसे में हिंदी यू.एस.ए. के २५ वर्षों की यात्रा मेरे जैसे हजारों अभिभावकों के लिए आशा, विश्वास और गर्व की कहानी है। जब मैंने अपने बच्चे का नाम हिंदी यू.एस.ए. की कक्षा में लिखवाया, तब यह केवल एक भाषा कक्षा का चयन नहीं था—यह अपनी विरासत को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने का संकल्प था।

हिंदी कक्षाओं का मेरे बच्चे पर असर

शुरुआत में मेरा बच्चा हिंदी बोलने में झिझकता था। घर में हम हिंदी बोलते थे, पर जवाब अक्सर अंग्रेजी में मिलता था। हिंदी यू.एस.ए. की व्यवस्थित कक्षाओं—जहाँ सुनना, पढ़ना, लिखना और बोलना चारों कौशलों पर समान ध्यान दिया जाता है, इसने धीरे-धीरे उसमें आत्मविश्वास जगाया। आज वही बच्चा पूरे आत्मविश्वास से हिंदी में कविता पढ़ता है, छोटे-छोटे निबंध लिखता है और दादा-दादी से सहज संवाद करता है। उसके उच्चारण में स्पष्टता आई है, शब्दावली समृद्ध हुई है और सबसे बड़ी बात—उसे अपनी भाषा पर गर्व होने लगा है। मैंने यह भी देखा है कि भारतीय त्योहारों, इतिहास और परंपराओं के बारे में उसकी जिज्ञासा बढ़ी है। अब वह

केवल होली या दीवाली मनाता नहीं, बल्कि उनके पीछे की कथा और संदेश भी समझता है। यह परिवर्तन किसी भी अभिभावक के लिए अमूल्य है।

एक अभिभावक के रूप में मेरा सबसे यादगार महोत्सव

हर वर्ष आयोजित होने वाला हिंदी महोत्सव मेरे लिए भावनाओं का सागर लेकर आता है। मुझे आज भी वह दिन याद है जब मेरा बच्चा पहली बार पारंपरिक वेशभूषा में मंच पर खड़ा हुआ था। उसकी निर्भीक प्रस्तुति को देखकर मेरी आँखें नम हो गईं। उस क्षण मुझे अहसास हुआ कि यह मंच बच्चों की प्रतिभा निखारने के साथ-साथ हमारी सांस्कृतिक पहचान की भी सशक्त अभिव्यक्ति है।

भारत के नैतिक मूल्य और मेरा परिवार

हिंदी यू.एस.ए. की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ केवल भाषा नहीं, बल्कि संस्कार भी सिखाए जाते हैं। पाठ्यक्रम में शामिल कहानियाँ सत्य, अहिंसा, करुणा, सम्मान और पारिवारिक एकता जैसे उच्च नैतिक मूल्यों को सहज रूप में बच्चों तक पहुँचाती हैं। इन कहानियों का प्रभाव हमारे घर में स्पष्ट दिखाई देता है। अब हम परिवार के साथ बैठकर नैतिक प्रसंगों पर चर्चा करते हैं। मेरा बच्चा जब किसी कहानी से प्रेरित होकर कहता है—“हमें हमेशा सच बोलना चाहिए” या “बड़ों का सम्मान करना चाहिए”—तो मुझे लगता है कि शिक्षा सही दिशा

में जा रही है। त्योहारों को अब हम केवल परंपरा के रूप में नहीं, बल्कि उनके मूल संदेश के साथ मनाते हैं। हिंदी हमारे घर में संवाद का माध्यम ही नहीं, बल्कि भावनात्मक जुड़ाव का सूत्र बन गई है।

एक संतुष्ट अभिभावक का गर्व

हिंदी यू.एस.ए. के २५ वर्ष केवल एक संस्था की उपलब्धि नहीं, बल्कि हम सभी प्रवासी भारतीयों की सामूहिक सफलता है। यह संगठन स्वयंसेवा, समर्पण और सांस्कृतिक चेतना का जीवंत उदाहरण है।

एक अभिभावक के रूप में मैं निश्चित हूँ कि मेरा बच्चा दो संस्कृतियों के बीच संतुलन बनाते हुए आगे बढ़ेगा, अमेरिका में आत्मविश्वास से खड़ा और भारत की जड़ों से गहराई से जुड़ा रहेगा। मेरे लिए हिंदी यू.एस.ए. केवल एक विद्यालय नहीं, बल्कि हमारी परंपरा, हमारी पहचान और हमारे भविष्य की सशक्त नींव है। २५ वर्षों की यह यात्रा आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का दीपक बनकर यूँ ही प्रकाश फैलाती रहे—यही मेरी हार्दिक कामना है।



सफलता के २५ वर्ष

राखी वैश्य, सोशल मीडिया समन्वयक, हिन्दी यू.एस.ए.

हिन्दी यू.एस.ए. ने रच दिया
एक नया इतिहास
अमेरिका जैसे देश में
अब हिंदी का
नहीं होता परिहास।

लोग शान से कविता पढ़ते
तथा भारतीय त्योहार भी मनाते हैं
नवरात्रि, दिवाली और होली पर
भारत के सतरंगी
रंगों में रंग जाते हैं।

हमारे बच्चे त्योहारों पर
भारतीय परिधान पहन कर
खूब इतराते हैं
अपने दादा-दादी और नाना-नानी से
अब हिन्दी में गप्पें लगाते हैं।

कविता पाठ में वीर रस की कविताएँ
बड़े जोश से गाते हैं
उनके जोश और उत्साह को
देखकर राखी के
रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

देशाटन के लिए हमारे
बच्चे भारत जाते हैं
भारत में हिन्दी यू.एस.ए. का मान बढ़ाते हैं
और वहाँ से अपने संग में
भारत की यादें लाते हैं।

हिंदी महोत्सव पर कार्यक्रमों में
भारत की झाँकियाँ सजाते हैं
अमेरिका में रहकर भी भारत को दिल में बसाते हैं
हिन्दी यू.एस.ए. की छत्र छाया में
भारत का सम्मान बढ़ाते हैं।



परदेश में अपनी माटी की गूँज

हिंदी यू.एस.ए. के २५ वर्ष

विभा सक्सेना — उच्चस्तर शिक्षिका

भाषा का अभियान नहीं
यह जीवन का अभिनन्दन है
वर्णों शब्दों का ज्ञान नहीं
यह निज माटी स्पंदन है

मन स्वप्न धरे उड़ना चाहे
परदेस में जीवन नींव धरे
चमचम करती इस दुनिया में
आसानी से अपनी राह मुड़े

हिंदी बनकर तब सेतु फिर
मन गांव डगर ले जाती है
यह वर्णों की मीठी छाया
घर लौट पाने की आस जगाती है

पच्चीस वर्षों की इस यात्रा में
हिंदी यू.एस.ए. ने रिश्ते जोड़े
भाषा के मधुरिम माध्यम से
दादी नानी से दिल के तार जोड़े

संस्कारों की माला बुनी
राहों में थाम कर हाथ चले
मिलकर सब परदेसी भारतीयों ने
नवपीढ़ी की आरती में अर्थ भरे

हुई दीपावली और रोशन
होली का रंग चटक चमका
खुशियों से महका हर आँगन
जब पर्वों का अर्थ समझा

आशीषों का भाव समझाया
समझाया पीढ़ियों का प्यार
दादी नानी की कहानियों का
नव पीढ़ी को समझाया सार

सदियों के अधरों पर
मुस्कान धरी प्यारी-प्यारी
देवनागरी किए मीठे बीजों से
सजी हर घर प्रेम की क्यारी

हिंदी यू.एस.ए. संगठन का नाम नहीं
यह रिश्तों की परिभाषा है
जो जड़ें धरे मन को सींचे
यह नवप्रभात की आशा है

Sharad & Shashi Agarwal

☎: 718-473-6281



OCI

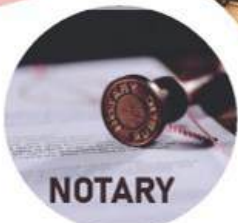


Travel Make Easy

**OCI, VISA,
AIR TICKETS,
& TOURS**

**PASSPORT RENEWAL
SERVICE AT NOMINAL
SERVICE FEE**

VISA



NOTARY



TICKETING



RENEWAL

**US PASSPORT RENEWAL ALSO
FOR EMERGENCY PASSPORT**

**290 Benjamin Avenue,
Iselin, NJ 08830
(732)283-0566
(718)639-9700**

✉ sharad@sntravel.net

🌐 www.sntravel.net
www.avisanyc.com



**TRAVEL &
TOUR, INC.**

(CELL)

(718) 473-6281

उच्चस्तर-२

हिन्दी का दीप, जीवन की सीख और हमारे अनुभव

हिन्दी यू.एस.ए. और कर्मभूमि

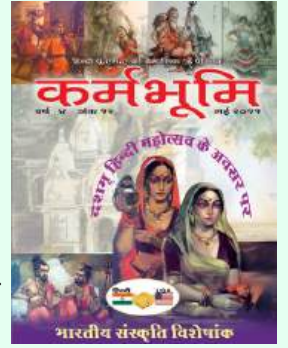


मेरा नाम हैली झवेरी है। मैं अपनी माताजी, पिताजी और बड़ी बहन के साथ वूरहीस, न्यू जर्सी में रहती हूँ। मैं आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ और मुझे पुस्तकें पढ़ना पसंद है। स्कूल के बाहर मुझे टेनिस खेलना, नृत्य करना और अपने दोस्तों के साथ खेलना पसंद है। मुझे यात्रा करने और नई चीजें सीखने में मज़ा आता है। जब मैं बड़ी हो जाऊंगी तो मैं शिक्षिका बनना चाहती हूँ।

हिन्दी यू.एस.ए. एक ऐसा संगठन है जो संयुक्त राज्य अमेरिका में छात्रों को हिन्दी सिखाता है। इस वर्ष हिन्दी यू.एस.ए. अपनी पच्चीसवीं वर्षगांठ मना रहा है।

कर्मभूमि पत्रिका इस उत्सव का एक हिस्सा है। कर्मभूमि शब्द का अर्थ है "कार्यस्थल"। कर्मभूमि छात्रों को अपनी कहानियाँ और विचार साझा करने का अवसर देती है। छात्र हिन्दी सीखने, अपनी कक्षाओं, शिक्षकों और हिन्दी महोत्सव जैसे मनोरंजक आयोजनों के बारे में लिख सकते हैं। वे कहानियाँ, कविताएँ लिख सकते हैं या चित्र बना सकते हैं। लेखन से छात्रों को अपने भाषा कौशल

को बेहतर बनाने और अपनी संस्कृति पर गर्व महसूस करने में मदद मिलती है। हिन्दी यू.एस.ए. केवल एक स्कूल से कहीं अधिक है। यह एक ऐसा समुदाय है जहाँ छात्र, शिक्षक और स्वयंसेवक एक साथ सीखते और विकसित होते हैं। कर्मभूमि यह दर्शाती है कि हिन्दी ने अतीत में छात्रों की मदद कैसे की है और भविष्य में कैसे उनकी मदद करेगी।



अमेरिका में रहने वाले भारतीयों के जीवन में हिन्दी यू.एस.ए. का महत्व



समिक्षा पिस्कैटवे हिन्दी विद्यालय में उच्च स्तर-२ एवं सामान्य विद्यालय में आठवीं कक्षा में पढ़ती है। वह एक प्रतिभाशाली विद्यार्थी है।

प्रत्येक भाषा का अपना इतिहास होता है। हिन्दी का भी अपना इतिहास है। भारत में हिन्दी भाषा आपको हर जगह दिखाई और सुनाई देती है, परंतु अमेरिका में हिन्दी भाषा की कमी दिखती है। हिन्दी का ज्ञान रखने वाले भारतीयों का स्वभाव है कि वे हर स्थान पर हिन्दी को

ढूँढते हैं। लेकिन अमेरिका जैसे देश में हिन्दी को ढूँढ पाना एक कठिन कार्य है। इसी कठिन काम को आसान करने के लिये हिन्दी यू.एस.ए. का जन्म हुआ। हिन्दी यू.एस.ए. पिछले २५ वर्षों से इसी दिशा में प्रयासरत है और अपने इस प्रयास में काफ़ी सफल भी रही है। अमेरिका में रहने वाले विद्यार्थियों को यह अपनी जड़ों से जुड़े रहने में मदद कर रही है। साथ ही यह उनको अपनी संस्कृति और संस्कारों का भी बोध कराती है, जो किसी भी माता पिता के लिए अकेले कर पाना संभव नहीं है।

जब कविता जीवन का मार्गदर्शन बन गई



मेरा नाम आद्या चावला है। मैं उच्च स्तर-२ की छात्रा हूँ। मैं तेरह वर्ष की हूँ और वूरहिस मिडल स्कूल में पढ़ती हूँ। मैं पाँच वर्ष की थी जब मैं हिंदी यू.एस.ए. से जुड़ी। हिंदी यू.एस.ए. मेरे बचपन और मेरे जीवन का अभिन्न अंग रहा है। इससे मेरे सामाजिक और सांस्कृतिक विकास में योगदान हुआ है।

गतवर्ष मैं विशेष रूप से एक कविता से बहुत प्रभावित हुई। इस कविता का शीर्षक “कृष्ण की चेतावनी” है। इसे प्रसिद्ध कवि श्री रामधारी सिंह दिनकर जी ने लिखा है। यह कविता महाभारत के उस अध्याय को दर्शाती है जिसमें स्वयं भगवान श्री कृष्ण शांति प्रस्ताव लेकर हस्तिनापुर जाते हैं। युद्ध टालने के लिए वे दुर्योधन से केवल ५ गाँव पांडवों के लिए माँगते हैं किंतु उनकी बात सुनना तो दूर दुर्योधन उन्हें ही बंदी बनाने की चेष्टा कर बैठता है। इस पर क्रोधित हो भगवान ने उस समय में अपना विराट विश्वरूप धारण कर दुर्योधन को युद्धभूमि में ललकारा। उन्होंने युद्धभूमि के भयानक परिणाम का वर्णन कर अंततः दुर्योधन की मृत्यु की भी भविष्यवाणी की। इस कविता ने मुझे जीवन के कई पहलुओं पर

शिक्षा दी। हमें अपने परिवार वालों से प्रेम और न्यायपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। हमें शांति बनाए रखने के लिए सारे प्रयास

करने चाहिए।
शांति और
अहिंसा के लिए
कोई भी मूल्य
ज़्यादा नहीं है।



लेकिन फिर भी बात दूसरे की समझ में न आए तो ईंट का जवाब पत्थर से देने के लिए तैयार रहना चाहिए। भगवान किसी भी रूप में हमें मिल सकते हैं, इसलिए सभी के साथ आदर और सम्मान से व्यवहार करना चाहिए।

हिन्दी और AI: परिवर्तन की ओर बढ़ता कदम



नमस्ते, मेरा नाम स्वरा मकवाना है। मुझे कहानियाँ लिखना और कल्पना करना बहुत अच्छा लगता है। आज मैं यहाँ अपनी कल्पना से हिन्दी यू.एस.ए. पाठशाला २५ साल बाद कैसी होगी उसका वर्णन करूँगी।

आधुनिकता बढ़ने से हिन्दी भाषा अधिक आसानी से प्रगति करेगी। हमारी पाठशाला की अपनी इमारत होगी, पुस्तक हमारे गृहकार्य की जाँच अपने आप ही कर लेगी, शिक्षिका या शिक्षक कुछ बोलेंगे तो वह अपने आप ही बोर्ड पर लिखा जाएगा इत्यादि...

चलो अब हम AI की बात करते हैं। जैसे तकनीक बढ़ती जा रही है, AI ही हमारे लिए कहानियाँ और कविताएँ

लिखेगा। फिर क्या हम “मेरी कविता के कवि AI है” यह कहेंगे? हिन्दी की कक्षा में AI भाषा के अपभ्रंश को रोक सकता है क्योंकि AI किस पर चलता है? Re-sources. अगर हम कोई Resource डाल दें तो AI हमें शुद्ध हिन्दी सीखने में मदद कर सकता है। हिन्दी महोत्सव में जहाँ हमारे स्वयंसेवक दिन-रात एक करके काम करते हैं, वहाँ AI Robots हमारी मदद कर सकेंगे। अमेरिका की पाठशालाओं में भी हिन्दी भाषा सीखने का विकल्प होगा। जब मैं बड़ी होकर हिन्दी की शिक्षिका बनूँगी, तब मैं तकनीक की मदद से प्रयोग और रचनात्मक तरीके से सिखाना चाहती हूँ, परन्तु बहुत अधिक तकनीक आ जाए तो वह भी अच्छा नहीं है। शिक्षक और विद्यार्थी का सम्बन्ध होना भी आवश्यक है।

हिंदी भाषा का महत्व – मेरी पहचान, मेरी संस्कृति



नमस्ते, मेरा नाम अक्षरा पुल्लखंडम है और मैं उच्चस्तर-२ कक्षा में पढ़ती हूँ। मेरी उम्र १४ वर्ष है और मैं जॉन पी. स्टीवंस हाई स्कूल की नौवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं पिछले छह-सात वर्षों से हिंदी यू.एस.ए. की कक्षाओं में पढ़ रही हूँ।

मेरे लिए हिंदी एक भाषा ही नहीं, बल्कि मेरी जड़ों से जुड़े रहने का माध्यम है। अमेरिका जैसे देश में रहते हुए जहाँ अंग्रेजी दैनिक जीवन का हिस्सा है, हिंदी मुझे अपने देश भारत की याद दिलाती है। हिंदी सीखने से मुझे भारत के साहित्य को पढ़ने का अवसर मिला है। मैंने अनेक कहानियाँ और कविताएँ पढ़ी हैं। हिंदी भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि संस्कृति का भी चिन्ह है। गर्मी की छुट्टियों में मैं अपने परिवार के साथ हैदराबाद, भारत गई थी। एक दिन जब हम इस सुंदर शहर में घूमकर

वापस अपने घर लौट रहे थे, तब देर रात अचानक गाड़ी रुक गई। किसी आदमी ने सही रास्ता पूछने पर हमने हिंदी में उत्तर दिया। मैं तो अमेरिका में हिंदी सीखती हूँ, इस वजह से मैं उनकी मदद कर पाई। उन्होंने हमें धन्यवाद दिया, और हम हँसी-खुशी से सकुशल घर पहुँच गए। मुझे अपने आप पर गर्व हुआ कि मेरी हिंदी भाषा के ज्ञान के कारण मैं अपने परिवार की मदद कर सकी। वास्तव में, हिंदी का ज्ञान होना बहुत महत्वपूर्ण है। मैं उस दिन जान पाई कि यह मेरे लिए एक यादगार दिन था। आज के युग में दो भाषाओं का ज्ञान होना एक गर्व की बात है। हिंदी जानकर मैं अपनी जड़ों का सम्मान करती हूँ और गर्व से कह सकती हूँ कि मैं एक 'ग्लोबल इंडियन' हूँ। अंत में मैं यही कहूँगी कि हिंदी मेरे व्यक्तित्व का एक अभिन्न हिस्सा है, जो मुझे अपनी पहचान बनाए रखने में सहायता करती है।

चिंतन और विश्लेषण



नमस्ते, मेरा नाम हृधन संघवी है और मैं कनिष्ठ-१ से ही हिन्दी यू.एस.ए. में हूँ। मैंने हिंदी यू.एस.ए. में सबसे निचले स्तर से शुरुआत की थी और अब मैं उच्चतम स्तर पर पहुँच गया हूँ। मैं स्टैमफोर्ड चार्टर स्कूल में आठवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे फुटबॉल, चैस और बैडमिंटन खेलना अच्छा लगता है।

हिंदी यू.एस.ए. का पिछला साल सबसे कठिन था। ये दो साल मेरे लिए बहुत ही रोचक रहे हैं। मैंने कई रोमांचक समय अनुभव किए, बहुत कुछ नया सीखा और ढेर सारे प्रोजेक्ट और मौज-मस्ती में हिस्सा लिया। मेरे जीवन में उतार-चढ़ाव आए, लेकिन अंत में मैंने इसे पूरा कर

लिया। हालांकि, हाई स्कूल से स्नातक होने के बाद मैं इस संस्थान को पूरी तरह से नहीं छोड़ूँगा। मैं स्वयंसेवक बनने का प्रयास करूँगा मुझे विद्यार्थियों को पढ़ाने का अनुभव मिलेगा और मैं और अधिक हिंदी सीख पाऊँगा और इसे रोजमर्रा की बातचीत में कैसे प्रयोग करना है, यह भी जान पाऊँगा। इस संगठन का उद्देश्य बच्चों को उनकी क्षमता के अनुसार हिंदी सिखाना है और मुझे लगता है कि उन्होंने इसे हासिल कर लिया है। अब मैं हिंदी बोल सकता हूँ, थोड़ी बहुत गलतियाँ होती हैं, लेकिन मैं उन्हें सुधार लूँगा। भविष्य में हमारी भूमिका यह होगी कि हम स्वयंसेवक बनने के बारे में सोचें और शायद एक दिन हिंदी यू.एस.ए. में मुख्य शिक्षक बनकर सब कुछ सुचारु रूप से चलाना चाहूँगा।

हिंदी का महत्व



नमस्ते, मेरा नाम अन्वी आहूजा है। मैं उच्चस्तर-२ की छात्रा हूँ और मैं सातवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैंने हिंदी के महत्व के बारे में लिखने के लिए चुना है क्योंकि मुझे लगता है हिंदी हमारी पहचान और संस्कृति का एक अहम हिस्सा है। हिंदी सीखने से मुझे रोजमर्रा की ज़िन्दगी में बहुत मदद मिली है। हिंदी सीखने से पहले मैं भारत में अपने दादा-दादी और रिश्तेदारों से अच्छे से बात नहीं कर पाती थी अब मैं बिना किसी परेशानी के अपने रिश्तेदारों से आसानी से बात कर सकती हूँ। जब से मैंने हिंदी सीखना

शुरू किया है, तब से मैं अपनी जड़ों, धर्म, और संस्कृति के बारे में और भी बहुत कुछ जान पाई हूँ। मैंने सीखा है कि हमारे धार्मिक विश्वासों और हर छुट्टी के पीछे की कहानी को जानना कितना मजेदार होता है। मुझे इस बात पर गर्व है कि मैं कहाँ से आई हूँ और यह समझना मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। हिंदी ने मुझे यह हासिल करने में बहुत मदद की है। हिंदी यू.एस.ए. में मैंने कविता प्रतियोगिता, हिंदी व्याकरण प्रतियोगिता जैसे कार्यक्रमों में हिस्सा लिया है और नाटकों में अभिनय भी किया है। इससे मुझे अपनी भाषा ज्यादा असरदार तरीके से सीखने में मदद मिली है।

मेरे हिंदी यू.एस.ए. के अनुभव



मेरा नाम ईशान मलिक है और मैं १२ वर्ष का हूँ। मैं उच्च स्तर-२ का छात्र हूँ। मुझे रोबोटिक्स, शतरंज, संगीत और टेनिस में रुचि है। मैंने हिंदी कनिष्ठ-१ में शुरू की। कनिष्ठ-१ में मुझे बहुत मजा आया, और मुझे अपनी शिक्षिकाएँ बहुत पसंद थीं। कनिष्ठ दो में मैंने हिंदी व्यंजन सीखे। जब मैं प्रथमा-१ गया तब मैंने हिंदी शब्द सीखे और मैं बहुत अच्छी हिंदी बोलने लगा। जब मैं भारत गया तब मैंने दुकान में हिंदी बोलने की कोशिश की। मैंने मध्यमा-१ और २ में मात्राएँ और संयुक्त शब्द सीखे। इससे मुझे राष्ट्रीय गान सीखने

में मदद मिली। उच्च स्तर-१ में मैंने व्याकरण सीखी। महोत्सव में मैंने बहुत सारे पात्र किए। मध्यमा-१ के महोत्सव में मैंने गणित में भारत के योगदान के बारे में बात की। मध्यमा-२ के महोत्सव में मैं मोदी जी बना था और उस महोत्सव में हम भारत के अंतरिक्ष प्रोग्राम के बारे में सब को बता कर रहे थे। उच्च स्तर-१ में मैं हिरण्यकशिपु बना था। हम विष्णु के दस अवतार के बारे में दिखा रहे थे। उच्च स्तर-२ में मैंने निबंध लिखना सीखा। मैंने हिंदी पाठशाला में बहुत कुछ सीखा है जो मुझे आगे भी काम आयेगा। मैं अपने शिक्षक और शिक्षिकाओं का हमेशा आभारी रहूँगा।

मस्तिष्क की कसरत

'कर्मभूमि' पत्रिका के वर्तमान अंक (२०२६) का मुख्य विषय (Theme) क्या है?

(क) हिन्दी: हमारी विरासत और पहचान

(ख) हिन्दी और हिन्दी यू.एस.ए.

(ग) २५ वर्ष: एक स्वर्णिम भाषाई यात्रा

(घ) हिन्दी यू.एस.ए. और हमारी संस्कृति



उत्तर मुख्य पृष्ठ पर देखें

हिंदी भाषा मेरा भविष्य कैसे बदलेगी



मेरा नाम यश पंडाले है। मैं बहुत ऊर्जावान हूँ। मुझे नई चीजें जल्दी सीखना अच्छा लगता है। मुझे फुटबॉल और स्क्वैश खेलना बहुत पसंद है। जब मैं बड़ा होऊँगा, तब मैं एयरोस्पेस इंजीनियर बनना चाहता हूँ। मुझे इतिहास के बारे में जानना भी अच्छा लगता है।

मैं अपने पूरे जीवन में अंग्रेज़ी बोलता आया हूँ। मैंने हिंदी सीखना पाँच साल की उम्र में शुरू किया। शुरू में हिंदी मुझे कठिन लगती थी। लेकिन धीरे-धीरे मैंने सीखना शुरू किया। अब हिंदी सीखने से मेरा

आत्मविश्वास बढ़ गया है। इससे मैं बहुभाषी (Multilingual) बन रहा हूँ। मुझे लगता है कि हिंदी मेरे भविष्य को बेहतर बनाएगी। यह मुझे हर काम में आगे बढ़ने और हार न मानने की सीख देती है। हिंदी यू.एस.ए. की टीम के सहयोग से मैंने हिंदी सीखना कभी नहीं छोड़ा। उन्होंने हमेशा मेरा उत्साह बढ़ाया और मेरा साथ दिया। आज मुझे समझ में आता है कि नई भाषा सीखना सिर्फ पढ़ाई नहीं, बल्कि धैर्य और मेहनत सीखना भी है। हिंदी ने मुझे आत्मविश्वासी, मेहनती और कभी हार न मानने वाला इंसान बनना सिखाया है।

मेरी कर्मभूमि और मेरी मातृभूमि



मेरा नाम मानसी पंडाले है। मैं हिंदी यू.एस.ए. में पढ़ती हूँ। मुझे हिंदी सीखना अच्छा लगता है। मैं अमेरिका में रहती हूँ। मुझे भारतीय संस्कृति पर गर्व है।

भारत मेरी मातृभूमि है। अमेरिका मेरी कर्मभूमि है। अमेरिका मेरी कर्मभूमि है। मातृभूमि वह देश है जहाँ से हमारे माता-पिता आते हैं। भारत में हमारी संस्कृति, भाषा और परंपरा है। मुझे भारत बहुत प्यारा है। मैं अभी तक भारत नहीं गई हूँ। लेकिन मैं हिंदी यू.एस.ए. के माध्यम से भारत को देखती और समझती हूँ। यहाँ मैं हिंदी भाषा, त्योहार और भारतीय संस्कार सीखती हूँ। मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं भारत को हिंदी यू.एस.ए. की आँखों से देख रही हूँ। मैं अमेरिका में रहती हूँ। मैं यहाँ पढ़ाई करती हूँ। मैं यहाँ मेहनत करती हूँ। इसलिए अमेरिका मेरी कर्मभूमि है। कर्म करना हमारा धर्म है। जहाँ हम मेहनत करते हैं, वही हमारी कर्मभूमि होती है। हिंदी यू.एस.ए. में मैं हिंदी सीखती हूँ। यह मुझे भारत से जोड़ता है। मुझे यहाँ के शिक्षक बहुत अच्छे लगते हैं।

भारत मेरी मातृभूमि है। अमेरिका मेरी कर्मभूमि है। दोनों देश मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।

FIT भारत **WELOCITY genetics**

www.mywignet.com
www.velocitygenetics.com
www.fitbharatmission.com

MAINO MURMU
Health Coach & Certified
Genomic Wellness Consultant

Mobile No. : +1 (732) 763-2337
Email ID : mainomurmu@hotmail.com

Insta id - fitlifewithmaino
GENETICS BASED WELLNESS SOLUTIONS

हिंदी यू.एस.ए. का विस्तार



नमस्ते, मेरा नाम त्विषा शर्मा है और मैं उच्चस्तर-२ की छात्रा हूँ। हिंदी यू.एस.ए. के माध्यम से हिंदी सीखते हुए हमने कविताएँ लिखना भी सीखा। हिंदी यू.एस.ए. ने हमें न केवल हमारी मातृभाषा हिंदी से जोड़ा है, बल्कि भारतीय संस्कृति और संस्कारों से भी जोड़ा है। अपना आभार व्यक्त करने के लिए मैंने २५वीं वर्षगांठ के अवसर पर अपनी भावनाओं को एक हृदयस्पर्शी कविता के रूप में प्रस्तुत किया है।

आओ बात करते हैं चौबीस साल पुरानी, 'हिंदी यू.एस.ए.' के निर्माण की कहानी,
मेरी लिखित पंक्तियों से इसके विस्तार पर जुबानी।

माँ का मन विदेश में रहते हुए घबराया जब अपने बच्चों को अपने देश से दूर होता पाया,
मन में बड़ा संकल्प आया; भारत देश की जड़ों से जोड़ने का विचार बनाया।

कुछ भारत प्रेमियों ने मिलकर २००१ में गैर लाभकारी संस्था को बनाया और हिन्दी मातृभाषा का प्रचार बढ़ाया।
हिन्दी भाषा के माध्यम से भारतीय संस्कृति, संस्कार और परम्पराओं को नई पीढ़ी तक पहुँचाने का जिम्मा उठाया।

समय-समय पर समीक्षित परिभाषित पाठ्यक्रम को कनिष्ठा, प्रथमा, मध्यमा और उच्चस्तर तक बनाया।

५ से १६ वर्ष तक रंग-बिरंगी दुनिया, खेल-खेल में हिन्दी से कविता पाठ लिखने तक पहुँचाया।
प्रतिवर्ष प्रतियोगिताओं में भागीदार बनवाया और साथ ही साथ कविता पाठ का आयोजन भी करवाया।
वार्षिक 'हिन्दी महोत्सव' को प्रेरणा का स्तोत्र बनाया। कर्मभूमि पत्रिका का अनुभव हर मन को हर्षाया।

प्रतिवर्ष मौखिक और लिखित परीक्षाओं से विद्यार्थियों का ज्ञान बढ़ाया।

५०० से अधिक विद्यार्थियों को स्नातक तक की सीढ़ी तक पहुँचाने का गौरव पाया।

पुस्तकालयों में हिन्दी पुस्तकों को उपलब्ध करवाया।

योग्य स्वयंसेवियों को 'President Volunteer Award' का हिस्सेदार बनवाया।

हिन्दू-धर्म के रक्षार्थियों को सम्मान भी दिलवाया।

अमेरिका ही नहीं 'हिंदी यू.एस.ए.' की सीमाओं को ऑनलाइन के माध्यम से दूसरे देशों तक भी पहुँचाया।

भारत-यात्रा ने तो और भी चार-चाँद लगाया।

विद्यार्थियों को पुराने और नए भारत को जानने का अनुभव दिलवाया।

पंजीकरण से स्नातक तक का सफ़र मन को बहुत भाया।

मैंने, हम सब की तरफ़ से २५ सालों का विस्तार बताया।

'त्विषा शर्मा' का मन भी कविता लिखते हुए उत्साह से भर आया

जब २०२६ में अमेरिका में 'WASC' से मान्यता प्राप्त का संदेशा पाया।

सदा रहे 'हिंदी यू.एस.ए.' उन्नति पर पच्चीसवीं वर्षगांठ पर, स्वर्ण-जयंती तक

हर सम्भव क़दम उठाने का हम सब ने संकल्प जगाया।

रचिताजी और देवेंद्रजी का उद्देश्य भारत-वर्ष का गुणगान अमेरिका तक भी बढ़ आया।

भविष्य का हिंदी यू.एस.ए.



मेरा नाम आदित्य गुप्ता है। मैं कक्षा ७ में इसलिन मिडिल स्कूल में पढ़ता हूँ। मैं हिंदी यू.एस.ए. में उच्चस्तर-२ में हिंदी सीखता हूँ। मुझे हिंदी पढ़ना और लिखना बहुत पसंद है।

वर्ष २०५० था। आरव अपने कमरे में बैठा होलोग्राम टैबलेट पर हिंदी का गृहकार्य कर रहा था। अचानक उसे अपनी कक्षा की बात याद आई। आज उसकी शिक्षिका ने कहा था — “बच्चों, २०२५ में हिंदी यू.एस.ए. बिल्कुल अलग था।”

(आरव उत्सुकता से उठकर बैठक की ओर दौड़ता है।)

आरव: पापा! पापा! आज शिक्षिका ने बताया कि २०२५ में हिंदी यू.एस.ए. बहुत अलग था। आप तो उस समय छात्र थे ना? सच बताइए, कैसा था?

(पापा मुस्कराते हैं। उनकी आँखों में पुरानी यादें झलकती हैं।)

पापा: हाँ बेटा, बहुत अलग था।

आरव (उत्साह से): क्या आप लोग होलोग्राम कक्षा में पढ़ते थे?

पापा (हल्का हँसते हुए): नहीं। हम असली कक्षा में जाते थे — चार दीवारें, कुर्सियाँ, मेज़ और एक श्वेत-पट्ट।

आरव (आश्चर्य से): मतलब सचमुच वहाँ जाना पड़ता था?

पापा: बिल्कुल। और अंदाज़ा लगाओ, कक्षा कब होती थी?

आरव: सुबह?

पापा: नहीं।

आरव: दोपहर?

पापा: नहीं।

आरव (बेचैनी से): तो फिर कब?

पापा: हर शुक्रवार रात ७ से ८:१५ बजे तक।

(आरव चौंककर पीछे हट जाता है।)

आरव: शुक्रवार रात! वह तो आराम करने का समय होता है!

पापा: हाँ, लेकिन हम फिर भी जाते थे।

आरव: और वह भी पूरे दिन के विद्यालय के बाद?

पापा: हाँ बेटा, पूरे दिन के बाद।

आरव: और गृहकार्य भी करते थे?

पापा: हाँ।

आरव: क्या कोई कृत्रिम बुद्धिमत्ता वाला सहायक मदद करता था?

पापा: नहीं। केवल हमारे शिक्षक।

आरव (आश्चर्य से): मतलब असली शिक्षक समझाते थे?

पापा: हाँ। और हमें कविताएँ याद भी करनी पड़ती थीं।

आरव: सीधे दिमाग में डाउनलोड करने का विकल्प नहीं था?

पापा: बिल्कुल नहीं।

(आरव सोफे पर बैठ जाता है और गहरी साँस लेता है।)

आरव: पापा... आप लोग सचमुच समर्पित थे।

(पापा मुस्कराते हैं।)

पापा: नहीं बेटा। हम बस हिंदी से प्रेम करते थे। हिंदी हमारे लिए केवल एक विषय नहीं थी। वह संस्कृति थी, परिवार था, हमारी पहचान थी।

(आरव कुछ क्षण गंभीर होकर सोचता है।)

आरव: अगर आप लोगों ने इतनी मेहनत नहीं की होती...

तो क्या आज २०५० में हिंदी यू.एस.ए. इतना बड़ा होता?
(पापा गर्व से उसकी ओर देखते हैं।)

पापा: शायद नहीं। उस समय विद्यार्थियों और शिक्षकों ने
मिलकर एक मजबूत नींव रखी। उसी की वजह से आज
हिंदी यू.एस.ए. पूरे देश में फैल चुका है।

(आरव के चेहरे पर गर्व की मुस्कान आ जाती है।)

आरव: तो आप लोग नायक थे!

पापा (हँसते हुए): नहीं बेटा, बस समर्पित विद्यार्थी थे।

(आरव आत्मविश्वास से खड़ा हो जाता है।)

आरव: अब से मैं भी हर शुक्रवार अपनी हिंदी कक्षा में पूरी
मेहनत करूँगा। ताकि जब २०७५ में कोई मुझसे पूछे —

“२०५० में हिंदी यू.एस.ए. कैसा था?” — तो मैं भी गर्व
से कह सकूँ, “हमने भी हिंदी के लिए कुछ किया था।”

(पापा आरव को गले लगाते हैं।)

(उस रात आरव बिना किसी शिकायत के अपना हिंदी

गृहकार्य पूरा करता है।)

कविता: उच्चस्तर-२ की झलकियाँ

वेस्ट विन्डसर-प्लेंसबोरो, उच्च स्तर-२

छात्र: अनिका दाश, अनिका हीरे, हर्षिता मेहता, ईरा केकतपुरे, काशवी नानावटी, निती पीचा, रेयाँश शेठ, संस्कृत
जी, सिद्धांत श्रीकान्त, तनिशी मित्रा, वेन्या प्रशान्त

युवा कार्यकर्ता: तरन सिंह, तत्सत सिंह

अध्यापिकाएँ: मीनाक्षी सिंह, नमिता बंसल

शुक्रवार की शाम को जब अंधेरा छाता
दुनिया का हर बच्चा टी.वी. देखना चाहता
हिन्दी यू.एस.ए. के विद्यार्थी हैं बहुत अलग
हिन्दी पढ़ने जाते मन से, रहते बेहद सजग

कक्षा में हम सब पढ़ते खूब
शब्दों, वाक्यों के अनेक रूप
योजक और व्याकरण हमें डराते हैं
मुहावरे, कविताएँ मन को भाते हैं

प्यारा दोस्त कहानी हमें सिखाती
सच्ची मित्रता साथ निभाती
भूतू लगता हमको प्यारा
बन गया सबका राज दुलारा

जब काल से हम डर जाते
पानी पीने के बहाने बाहर आते
हिन्दी यू.एस.ए. बना हमारा परिवार
हिन्दी में करते हम बातें अपार

रिश्तेदारों को जब पत्र लिखे हमने
प्यार और आनंद भर गया सब के मन में
इस वर्ष हम स्नातक हो जाएँगे
युवा कार्यकर्ता बनकर हिन्दी पढ़ाएँगे

हिंदी - स्वर और संस्कृति का संगम

उच्च स्तर २, जर्सी सिटी हिन्दी पाठशाला



कृषिव हिराय, अपर्णा सिंह, शेरीशा जैन, चेहल जैन, मनस्विनी बोडुपल्ली, प्रथमेश वर्मा, यशस अग्रवाल

उत्पत्ति और जड़ें

सभी जानते हैं कि हिंदी भारत की राजभाषा है, लेकिन क्या हम वास्तव में इस भाषा की उत्पत्ति और जड़ों को जानते हैं? हिन्दी भाषा, हमारे परिवार का अंग है, लेकिन यह भाषा पहले हिन्दी नहीं थी। इसकी पूर्वज संस्कृत है। बहुत सालों के बाद संस्कृत सब जगह अलग-अलग रूप में बदल गई थी। लगभग हजार साल पहले खड़ी बोली की डायलैक्ट दिल्ली के आसपास उदय हुई। यही आज की हिन्दी का आधार है। मुगल काल में फारसी और अरबी भाषा बोली जाती थी, जिससे इसकी शब्दावली में नए शब्द आए। १४ सितंबर, १९४९ को भारत की संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में हिन्दी को आधिकारिक तौर पर देश की राजभाषा घोषित किया,

और इसीलिए इस दिन को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

सौंदर्य

हिन्दी की सभी खूबसूरतियों में से एक उसके स्पष्ट उच्चारण में है, जहाँ हर शब्द ठीक वैसे ही बोला जाता है जैसे वह लिखा होता है। मात्राओं को अक्षरों के 'आभूषण' के रूप में दर्शाया गया है, जो न केवल शब्दों के अर्थ बदलती हैं बल्कि उनमें लय, प्रवाह और मिठास भी भर देती हैं। जैसे कि, एक व्यंजन बहुत सूखा रहता है, लेकिन जब एक मात्रा जोड़ देते हैं, व्यंजन में स्वर की भी आवाज़ आती है। इस प्रकार, हिन्दी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि ध्वनियों का सुंदर संगम भी है।

बोलियों का संगम

हिंदी एक बहुत ही सुंदर भाषा है क्योंकि यह सुनने में बहुत अच्छी लगती है और इसे समझना आसान है। हिंदी भाषा की एक महानता है कि बड़ों को 'जी' और 'आप' जैसे शब्दों का इस्तेमाल करके सम्मान दिया जाता है। इस भाषा को बोलने का तरीका भी अलग-अलग जगहों के हिसाब से बदल जाता है, जिसकी ५ बोलियाँ हैं: खड़ी बोली, भोजपुरी, ब्रजभाषा, मैथिली और अवधी। कुछ जगहों पर यह बहुत मीठी लगती है, तो कुछ जगहों पर मजबूत और प्रभावशाली लगती है। हिंदी की ५ उपभाषाएँ और १७ बोलियाँ हैं। यही अलग-अलग रूप हिंदी भाषा को सुंदर बनाते हैं।

हिंदी सिर्फ एक भाषा ही नहीं, बल्कि ये लोगों को एकजुट करने और विभिन्न संस्कृतियों को जोड़ने का माध्यम है। हिंदी के नौ रस, शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत और शांत, कहानी कहने की कला को सशक्त बनाते हैं और इसके सच्चे काव्य रूप को दर्शाते हैं। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान एकता के साधन के रूप में उपयोग की गई यह भाषा भारत का एक बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह केवल एक भाषा नहीं, बल्कि अपनी जड़ों से जुड़े रहने और अपनी वास्तविक पहचान पाने का एक तरीका है।

कला, सिनेमा और साहित्य में हिंदी की भूमिका

हिंदी दुनिया में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में से एक होने के साथ भारत की संस्कृति, कला, सिनेमा, साहित्य और संगीत में अहम भूमिका निभाती है। बॉलीवुड हिंदी सिनेमा का दिल है, जिसने 'दंगल' जैसी ग्लोबल हिट फ़िल्में बनाई हैं, जिसने \$330 मिलियन से ज्यादा की कमाई की। उदाहरण के लिए, "जय हो" गाना दुनिया भर में हिट हुआ, जिसने ऑस्कर और ग्रैमी जीते। संगीत और कविताओं के साथ, हिंदी पुरानी परंपराओं को ज़िंदा रखने में मदद करती है, जिनमें से एक उदाहरण महाभारत की कहानी है। धर्म और नैतिकता के इर्द-गिर्द घूमने वाली इसकी शिक्षाओं ने भारतीय धर्म और संस्कृति का आधार बनाया है। इस सांस्कृतिक अवसर ने हिंदी को भारतीय संस्कृति का एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचाना जाने वाला हिस्सा बना दिया है। यह सिर्फ बोलने का एक तरीका नहीं है; हिंदी एक मजबूत माध्यम है जो लोगों को एक साझे इतिहास के माध्यम से एक साथ लाती है। भारत के अलावा, फिजी, नेपाल, दक्षिण अफ्रीका और अरब अमीरात जैसे देशों ने भी हिंदी को अपनाया है।

आर्या नरगुंद मध्यमा-३

लोकमान्य
बालगंगाधर ती
ने महाराष्ट्र में
गणेशोत्सव की
शुरुआत क्यों
और कैसे की
— एक सचित्र
और सरल
वर्णन।



मुहावरों और कहावतों का सार, जीवन का आधार

उच्चस्तर-२ की कलम से

एक अनार, सौ बीमार



नमस्ते, मेरा नाम जीवांश अग्रवाल है। मैं बारह वर्ष का हूँ और छठी कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं हिंदी विद्यालय में उच्चस्तर-२ का छात्र हूँ। मुझे फुटबॉल, बास्केटबॉल, और पुस्तकें पढ़ना अच्छा लगता है। मुझे मेरी बहन के साथ भी खेलना अच्छा लगता है।

“करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान”

कहावत हिंदी यू.एस.ए. की २५ वर्षों की प्रेरणादायक यात्रा को सही तरह से दर्शाती है। इस कहावत का अर्थ है कि लगातार अभ्यास करने से साधारण बुद्धि वाला व्यक्ति भी समझदार और ज्ञानवान बन सकता है। हिंदी यू.एस.ए. में छात्रों की नौ वर्षों की यात्रा होती है, जहाँ वे बिल्कुल शुरुआत से सीखना शुरू करते हैं और धीरे-धीरे हिंदी भाषा में निपुण हो जाते हैं। यह संस्था अभ्यास पर आधारित शिक्षा पद्धति में विश्वास करती है, जहाँ लगातार प्रयास से सीखना संभव होता है। शिक्षक भी अपने पाठों का नियमित अभ्यास करते हैं, जिससे उनकी पढ़ाने की क्षमता और बेहतर हो जाती है। इस निरंतर अभ्यास से छात्रों में आत्मविश्वास बढ़ता है और उनकी भाषा-कुशलता भी मजबूत होती है। मेरी प्रिय कहावत “एक अनार, सौ बीमार” है। इस कहावत का उपयोग तब किया जाता है जब चीजें बहुत कम हों और उन्हें चाहने वाले बहुत ज्यादा हों। इसके पीछे एक लोककथा भी

प्रचलित है। एक गाँव में बीमारी फैल जाती है और वैद्य सभी को फल खाने की सलाह देते हैं। अगले दिन गाँव के सभी लोग फल की दुकान पर पहुँचते हैं और केवल अनार माँगते हैं, लेकिन दुकान में सिर्फ एक ही अनार बचा होता है। इससे लोगों में झगड़ा शुरू हो जाता है। यह देखकर दुकानदार दुखी होकर कहता है, “एक अनार और सौ बीमार!”

इस कहावत का अनुभव मुझे एक फुटबॉल मैच में हुआ। मैच बहुत रोमांचक चल रहा था। अचानक हमारी टीम को पेनल्टी किक मिली, जो जीतने का सुनहरा मौका था। सभी खिलाड़ी वही किक लेना चाहते थे, इसलिए आपस में बहस होने लगी। धीरे-धीरे यह बहस अनुशासनहीनता में बदल गई और हमारे कोच बहुत नाराज़ हो गए। उस समय स्थिति बिल्कुल “एक अनार, सौ बीमार” जैसी लग रही थी। पेनल्टी किक वह एक अनार थी और हम सभी खिलाड़ी उसे लेने के लिए आपस में प्रतिस्पर्धा कर रहे थे।



करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान



नमस्ते, मेरा नाम वेदांत रंगटा है। मैं हिंदी यू.एस.ए. की उच्चस्तर-२ कक्षा में हूँ। मैं छह साल से हिंदी पढ़ रहा हूँ। इन छह सालों में मैं धीरे-धीरे हिंदी बोलने, लिखने और समझने में और अच्छा बन गया हूँ। अब मैं अपने

भारतीय रिश्तेदारों से अच्छी तरह बातचीत कर सकता हूँ। यहाँ मैं केवल हिंदी भाषा ही नहीं सीख रहा हूँ, बल्कि मुझे भारतीय त्योहारों और संस्कृति को समझने में भी मदद मिल रही है। यह सब नहीं होता अगर हिंदी यू.एस.ए. की मदद नहीं मिलती।

मेरी प्रिय कहावत, “करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान” है। यह कहावत मेरी हिंदी की पढ़ाई में बहुत काम आई है। इस कहावत का अर्थ है कि बार-बार अभ्यास करने से पत्थर जैसी कठोर बुद्धि वाला व्यक्ति

भी बुद्धिमान बन सकता है। हिन्दी यू.एस.ए. पच्चीस साल से अमेरिका के बच्चों को हिंदी सिखा रहा है। पहले बहुत से छात्र और छात्राएँ जो अमेरिका में रहते थे उन्हें हिंदी सीखने में बहुत मुश्किलें आती थी। उन्हें ठीक से हिंदी समझना, पढ़ना और लिखना नहीं आता था। लेकिन हिन्दी यू.एस.ए. की साप्ताहिक कक्षाओं और अभ्यास की पुस्तकों से बच्चे अच्छी तरह से हिंदी भाषा सीख सकते हैं। इससे प्रतिदिन विद्यार्थी थोड़ा-थोड़ा हिंदी का अभ्यास कर सकते हैं। हिंदी यू.एस.ए. के विद्यार्थियों को कभी भी मुश्किलों से नहीं डरना चाहिए, क्योंकि हिंदी यू.एस.ए. की सहायता से वे हिंदी भाषा में और अधिक निपुण हो सकते हैं। यह बात मेरी कहावत से जुड़ती है, क्योंकि विद्यार्थी लगातार अभ्यास करके हिंदी की कोई भी कठिनाई आसान कर सकते हैं।

नाच न जाने आँगन टेढ़ा



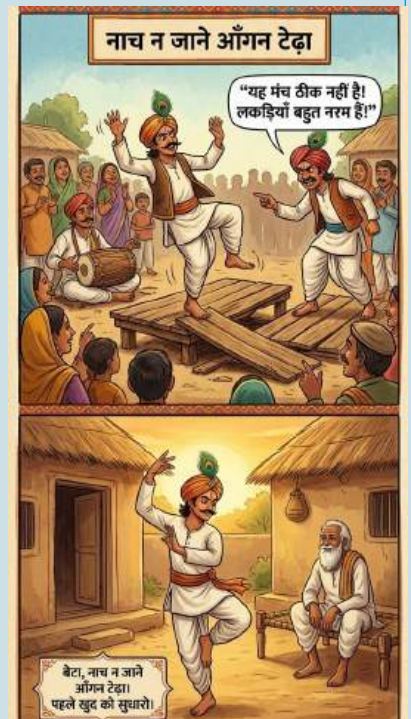
मेरा नाम सोनल रव्वा है। मैं दसवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं पिछले सात वर्षों से हिंदी यू.एस.ए. में हिंदी सीख रही हूँ। मैं उच्चस्तर-२ की छात्रा हूँ। मुझे गाना और संगीत बहुत पसंद है।

नाच न जाने आँगन टेढ़ा

एक छोटे से गाँव में रघु नाम का एक आदमी रहता था। वह हमेशा बड़े-बड़े दावे करता था कि उससे अच्छा कलाकार पूरे राज्य में नहीं है। जब गाँव में मेले का आयोजन हुआ, तो सबने उसे मंच पर नाचने के लिए बुलाया। ढोल-नगाड़े बजने लगे, लोग इकट्ठा हो गए, और रघु आत्मविश्वास से मंच पर चढ़ गया। लेकिन जैसे ही उसने नाचना शुरू किया, उसका संतुलन बिगड़ गया। वह ताल पकड़ ही नहीं पा रहा था। लोग धीरे-धीरे हँसने लगे। अपनी गलती मानने की बजाय रघु बोला, “यह मंच ठीक नहीं है! लकड़ियाँ बहुत नरम हैं, इसलिए मैं ठीक से नाच नहीं पा रहा।” तभी गाँव

के बुजुर्ग मुस्कराकर बोले, “बेटा, नाच न जाने आँगन टेढ़ा। पहले खुद को सुधारो, फिर दूसरों में कमी ढूँढ़ना।” रघु को अपनी गलती समझ में आ गई। उसने बहाने बनाना छोड़ दिया और मेहनत से अभ्यास शुरू किया। कुछ महीनों बाद वह सच में अच्छा नाचने लगा।

सबक: अपनी कमियों को छिपाने के लिए दूसरों को दोष देना आसान है, लेकिन सफलता के लिए अपनी गलतियों को स्वीकार करना महत्वपूर्ण है।



खिचड़ी पकाना



नमस्ते, मेरा नाम सुरभि राहुल है और मैं नवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं हिन्दी यू.एस.ए. में उच्चस्तर-२ की छात्रा हूँ। मैं पंद्रह साल की हूँ। मुझे बैडमिंटन खेलना और बेकिंग करना बहुत अच्छा लगता है।

खिचड़ी पकाना एक मुहावरा है, जिसका अर्थ होता है चुपचाप कोई योजना बनाना या चाल चलना। लेकिन इसका दूसरा अर्थ खिचड़ी नाम का व्यंजन बनाना होता है। इस प्रकार यह मुहावरा हमें दिखाता है कि हिंदी में शब्दों का अर्थ संदर्भ के अनुसार बदल जाता है। निम्नलिखित कहानी इन दोनों अर्थों के अंतर को दर्शाती है।

ज्ञान कॉलेज में वार्षिक महोत्सव आने वाला था और सब

लोग तैयारियों में लगे थे। अचानक अर्जुन को एक शरारत सूझी। उसने अपने दोस्तों से फुसफुसाकर कहा “क्यों ने इस साल हम इनामों की अदला-बदली करें? बहुत मज़ा आएगा!” अगले दिन वे जल्दी कॉलेज चले गए। जब सब शिक्षक खाना खाने गए तो अर्जुन और उसके दोस्त चुपके से कमरे में घुस गए और अपनी खिचड़ी पकायी। सभा में हलचल मच गई। किसी को नहीं समझ आया कि यह कैसे हुआ। खाने की प्रतियोगिता में जीतने वाले को मुँह पर मुक्का मारने वाला खिलौना मिला। पढ़ाई में अव्वल आने वाले छात्र को क्रिकेट की ट्रॉफी मिली और क्रिकेट टीम को किताबें मिली। सभी लोग हँसने लगे। अर्जुन ने अपने दोस्तों से मुसकुराकर कहा “हमारी खिचड़ी पक गई”!



सुयश सिंह

ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है



बूँद-बूँद से सागर भरता है



नमस्ते, मेरा नाम अरिन दत्ता है और मैं नौवीं कक्षा का विद्यार्थी हूँ। मैं फ्रीमोंट कैलिफ़ोर्निया में रहता हूँ। मुझे तैरना और गाना बहुत पसंद है। खाली समय में मैं रूबिक्स क्यूब खेलता हूँ।

छुट्टियों में मुझे भारत जाना बहुत पसंद है और वहाँ मैं अपने दादा, दादी और नानी के घरों में बहुत मस्ती करता हूँ।

हिंदी यू.एस.ए. के सफर को अगर हम देखें तो हमें पता चलता है कि कैसे एक छोटी चाह ने इस कार्यक्रम को एक शहर से दूसरे शहर, एक स्टेट से दूसरे स्टेट, इस विदेशी राष्ट्र में यहाँ रहने वाले भारतीय घरों तक पहुँचाया और हर भारतीय को एक दूसरे से जोड़ा। जो शायद एक छोटी सी चाह से निकली, वही सोच आज २५ सालों में इतने बड़े आकार में घर-घर तक अपनी सभ्यता को स्थापित कर पायी। इन २५ सालों में कितनी भी बाधाएँ आयीं, इस संस्था के कार्यकर्ताओं ने अपना हौसला बुलंद रखा। पूरी लग्न और धैर्य से अपनी कोशिश को जारी रखते हुए हर वह बच्चा जो अपने देश की भाषा और संस्कृति को सीखना चाहता था उसे प्रोत्साहन दिया। जैसे-जैसे सफलता बढ़ी, इस संस्था ने अपनी शाखाएँ खोलीं और यह तय कर लिया कि कुछ भी नामुमकिन नहीं है।

रामायण से लेकर महाभारत की कथाएँ उन्होंने प्रचारित की और हर विद्यार्थी जो उनके साथ जुड़ा रहा, उसे नाटक, कविता और संगीत से अपने आप को अभिव्यक्त करने का अवसर दिया। हर शिक्षक ने अपने आप को इस संस्था के लिए उपलब्ध रखा और विद्यार्थियों को प्रोत्साहन देते रहे। “बूँद-बूँद से

सागर भरता रहा” और हर वह प्रयास आज सफल होता दिखता है जब हर हिंदी यू.एस.ए. का विद्यार्थी अपनी भाषा और संस्कृति का गौरव अपने साथ लेकर चलता हुआ दिखता है। मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ जब मैंने पहली बार एक खेल खेलना शुरू किया।

मैंने जब यह खेल खेलना प्रारम्भ किया, जिसे Rubik's Cube कहते हैं, तब मैं बहुत छोटा था, शायद छह साल का। मेरे पिताजी ने मुझे एक खूबसूरत सा रंग-बिरंगा खिलौना दिया है, यह सोचकर मैंने उससे खेलना शुरू किया। जैसे-जैसे मैं बड़ा होता गया मुझे एहसास हुआ कि यह तो बहुत मुश्किल खेल है लेकिन मैंने हार नहीं मानी। जिस क्यूब को मैं ५ मिनट में सुलझाता था, मेरे निरंतर प्रयास से आज वह १५ सेकंड में सुलझ जाता है। मिडिल स्कूल में जब मुझे इस प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक मिला, तब मुझे खुशी हुई कि अंततः मैंने इस खेल की कला को सीख लिया है। जैसे मैंने ५ मिनट से १५ सेकंड का सफर पूरा किया है, आगे भी मैं इस प्रयास को जारी रखूँगा। शायद जल्द ही मैं १५ सेकंड से ५ सेकंड तक पहुँच जाऊँगा। अभी मंज़िल दूर तो लगती है पर मुझे पता है कि बूँद-बूँद के प्रयास से मेरे इस खेल में राष्ट्रीय स्तर पर स्वर्ण पदक जीतने वाले सपने का सागर भर ही जायेगा।



अंगूर खट्टे हैं



अद्वय द्विवेदी

एक दिन, दस दोस्तों को स्कूल के बाद फुटबॉल खेलना था। पूरे दिन दोस्त उसी के बारे में बात कर रहे थे। जब स्कूल खत्म हुआ, तो सब घर चले गए। उन्हें ३० मिनट बाद फिर से मिलना था। जब एक लड़के राहुल ने अपना गृहकार्य निकाला, तो वह हैरान रह गया; उसके पास बहुत सारा काम था। १०, २०, और ३० मिनट बाद भी उसका गृहकार्य खत्म नहीं हुआ था। उसे इसे खत्म

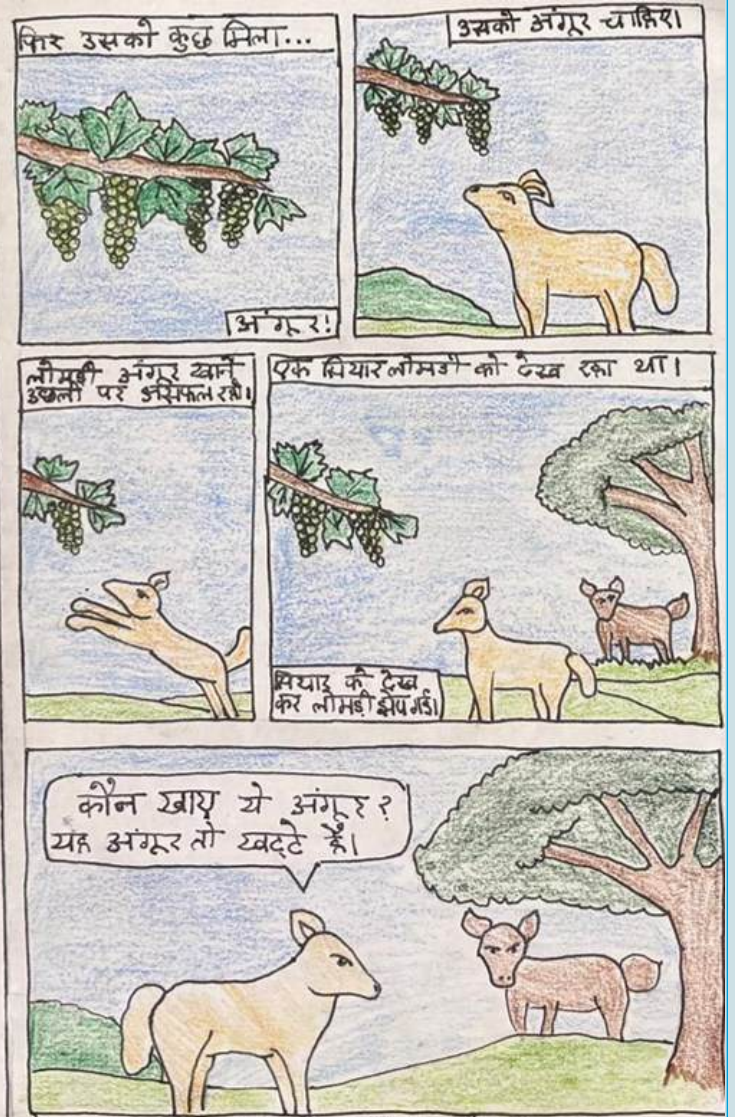
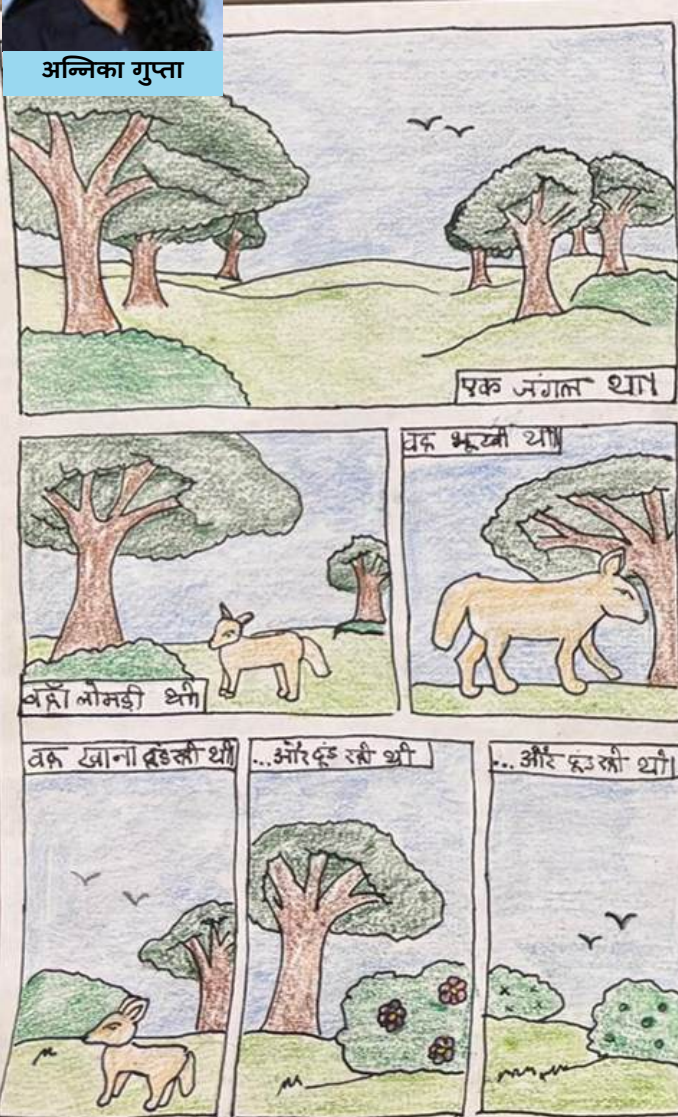
करने में एक घंटा, डेढ़ घंटा, और फिर दो घंटे लग गए। लेकिन जब वह बाहर गया, तो मैदान में कोई नहीं था। जब वह घर गया तो उसकी माँ ने कहा, “मुझे दुख है कि तुम्हारे दोस्त वहाँ नहीं थे।” राहुल ने जवाब दिया, “कोई बात नहीं, फुटबॉल वैसे भी इतना अच्छा खेल नहीं है।” (अंगूर खट्टे हैं।)

भावार्थ: जब आप कुछ चाहते हैं लेकिन आपको वह नहीं मिलता, तो आपको बुरा लगता है।



अन्निका गुप्ता

इस वर्ष हमने बहुत सारे मुहावरे पढ़े। यह मुहावरा मुझे रोचक और मजेदार लगा। मैं उसकी कल्पना आसानी से कर सकी, इसलिए इसका चित्र बनाते समय मुझे बहुत आनंद आया।



अन्निका गुप्ता २०२६ अ२

हिन्दी यू.एस.ए. के साथ मेरी अविस्मरणीय यात्रा

एक दशक का सफर: भाषा, संस्कार और आत्मविश्वास की नई पहचान



मेरा नाम अद्वितीया माहेश्वरी है और मैं हिंदी यू.एस.ए. की स्टैमफोर्ड पाठशाला में एक युवा स्वयंसेवक हूँ। मुझे पढ़ना और लिखना बहुत पसंद है और स्कूल में मैं टेनिस और स्क्वैश खेलती हूँ। मैं कराटे के साथ-साथ भरतनाट्यम और बॉलीवुड कक्षाओं में भी भाग लेती हूँ।

मैं पिछले दस वर्षों से हिंदी यू.एस.ए. से जुड़ी हुई हूँ। जब मैं केवल चार साल की थी, तभी से मैंने यहाँ जुड़ना शुरू किया, और उस समय शायद मुझे यह भी पूरी तरह समझ नहीं थी कि यह यात्रा मेरे जीवन में कितना महत्वपूर्ण स्थान बनाएगी। पिछले साल मैंने स्नातक की पढ़ाई पूरी की और जब पीछे मुड़कर देखती हूँ, तो महसूस होता है कि हिंदी यू.एस.ए. ने मुझे केवल हिंदी भाषा ही नहीं सिखाई, बल्कि मुझे आत्मविश्वास, अनुशासन, नेतृत्व और अपनी संस्कृति से गहरा जुड़ाव भी दिया।

हिंदी यू.एस.ए. के साथ मेरा सफर सीखने और प्रगति का रहा है। बचपन में मैं थोड़ी संकोची थी, लेकिन कक्षा में नियमित अभ्यास, शिक्षकों का मार्गदर्शन और विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने से मेरा आत्मविश्वास धीरे-धीरे बढ़ता गया। यहाँ का वातावरण हमेशा प्रोत्साहित करने वाला और प्रेरक रहा, जहाँ गलतियों को सीखने का अवसर माना जाता था। इसी सकारात्मक माहौल ने मुझे अपनी क्षमताओं को पहचानने और उन्हें निखारने का साहस दिया।

मुझे विशेष रूप से कविता प्रतियोगिता में भाग लेना बहुत पसंद था। हर वर्ष नई कविता चुनना, उसके

भावों और अर्थ को समझना, उच्चारण का अभ्यास करना और फिर मंच पर पूरे आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुत करना मेरे लिए बेहद आनंददायक अनुभव होता था। मंच पर खड़े होकर अपने शब्दों और भावों के माध्यम से श्रोताओं से जुड़ना मेरे लिए गर्व और संतोष का क्षण होता था। इन प्रतियोगिताओं ने मुझे अभिव्यक्ति की कला सिखाई और यह समझाया कि भाषा केवल शब्दों का समूह नहीं, बल्कि भावनाओं और अनुभवों का माध्यम है। इसके अलावा, दीवाली कार्यक्रम मेरे लिए हमेशा साल का सबसे प्रतीक्षित अवसर रहा है। इस आयोजन की तैयारियाँ, सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ, पारंपरिक वेशभूषा और दीपों की उज्ज्वल रोशनी पूरे वातावरण को उल्लास से भर देती थीं। इन कार्यक्रमों में भाग लेकर मैंने न केवल अपनी सांस्कृतिक जड़ों को महसूस किया, बल्कि सहयोग, टीमवर्क और एक समुदाय का हिस्सा होने का महत्व भी सीखा। यह अनुभव हर साल मुझे अपनी परंपराओं पर गर्व करने और उन्हें आगे बढ़ाने की प्रेरणा देता रहा।

आज, जब मैं अपने दस वर्षों के इस सफर को याद करती हूँ, तो मेरा हृदय कृतज्ञता और खुशियों से भर जाता है। हिंदी यू.एस.ए. ने मुझे भाषा का ज्ञान, सांस्कृतिक समझ और आत्मविश्वास का अनमोल उपहार दिया है। एक स्वयंसेविका और छात्रा के रूप में इस संस्था का हिस्सा बनना मेरे लिए गर्व की बात है। मैं जानती हूँ कि इस अनुभव को हमेशा अपने जीवन में संजोकर रखूँगी और जहाँ भी संभव होगा, हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान देती रहूँगी।

गुरु-संवाद: समर्पण, सेवा और हिन्दी के प्रति अनुराग

दो विद्यार्थियों की कलम से, उनकी हिन्दी शिक्षिकाओं के साथ एक विशेष बातचीत



मेरा नाम राजश्री दीवान-व्यास है और मैं स्टैमफोर्ड पाठशाला में उच्चस्तर-२ की छात्रा हूँ। मुझे गाना, नृत्य, और अभिनय बहुत पसंद है।

कृति जी (अध्यापिका) - नमस्ते, राजश्री।

राजश्री (विद्यार्थी) - आज मैं आपका इंटरव्यू कर्मभूमि पत्रिका के लिए करूंगी। आप कब से हिंदी यू.एस.ए. की शिक्षिका हैं?

कृति जी- मैं छह साल से हिंदी यू.एस.ए. की शिक्षिका हूँ।

राजश्री- आप हिंदी यू.एस.ए. की शिक्षिका क्यों बनीं?

कृति जी- मैं शिक्षिका इसलिए बनी क्योंकि मेरे बच्चे हिंदी कक्षा में आते थे। मैं शिक्षिका बनी ताकि मैं अपने बच्चों के साथ समय बिता सकूँ, ताकि मैं उनसे जुड़ सकूँ। जब मेरा बच्चा प्रथमा-१ में था, तब मैं उसके साथ शिक्षिका बन गई। लेकिन जब मैं इसमें शामिल हुई, तो मुझे हिंदी यू.एस.ए. की हर चीज़ बहुत पसंद आई। जैसे नए लोगों से मिलना, नए छात्रों से मिलना। जब मैंने शुरुआत की तो मुझे यह अच्छा लगने लगा। नए विद्यार्थियों से मिलना, उन्हें अपनी भाषा, अपने देश के बारे में बताना। मैं उन्हें अपनी छोटी-छोटी बातें बताती हूँ। उनसे बहुत कुछ सीखती हूँ, क्योंकि सभी विद्यार्थी अलग-अलग होते हैं।

राजश्री- शिक्षिका होने में सबसे अच्छी बात क्या है?

कृति जी- हम बच्चों के साथ बहुत सारे खेल खेल सकते हैं और उन्हें पढ़ा सकते हैं।

राजश्री- शिक्षिका होने में सबसे कठिन बात क्या है?

कृति जी- कभी-कभी मुश्किल होती है, खासकर मेरी कक्षा में, क्योंकि ६ साल से ११-१२ साल तक के विद्यार्थी आते हैं। तो, सभी विद्यार्थी अलग-अलग होते हैं, है ना? अलग-अलग स्वभाव और अलग उम्र। इसलिए, मुझे उन्हें अलग-अलग तरीके से पढ़ाना पड़ता है।

राजश्री- जब से आप हिंदी यू.एस.ए. में हैं, तब से इसमें क्या बदलाव आए हैं? ६ साल में आपने क्या-क्या देखा है जो कुछ बदला हो, पाठ्यक्रम या में या आवश्यकताओं में कुछ बदलाव हो?

कृति जी- मैं पिछले ६ वर्षों से हिंदी यू.एस.ए. में प्रथमा-२ स्तर को हिंदी पढ़ा रही हूँ। बात यह है कि उनका पाठ्यक्रम वैसा ही रहा है। मुझे यह बहुत पसंद आया है कि ज्यादा कुछ नहीं बदला है। अच्छी बात यह है कि अब हमारे पास विद्यार्थियों के पुराने सभी कागजात हैं जिनकी हम समीक्षा करवा सकते हैं। अब हमारे पास एक नया ऐप, “KidsLipi” भी है। इस तरह हम विद्यार्थियों के साथ और भी मज़ेदार नए-नए खेल खेल सकते हैं। इससे हमें यह भी पता चलता है कि उन्हें क्या पसंद है। इस तरह हम अपने शिक्षण के तरीके में बदलाव कर सकते हैं।

राजश्री- दिवाली के कार्यक्रम के बारे में मेरा आपसे एक सवाल है क्योंकि कृति जी आप इसमें बहुत हिस्सा लेती हैं। दिवाली कार्यक्रम के बारे में आपका क्या विचार है?

कृति जी- दिवाली का कार्यक्रम हर साल कुछ नया लेकर आता है क्योंकि हर साल नए विद्यार्थी आते हैं, नए माता-पिता आते हैं, सबके नए विचार होते हैं। इसी के अनुरूप नए कार्यक्रम देखने को मिलते हैं। और जिस तरह से सभी विद्यार्थी और माता-पिता इसके लिए कड़ी

मेहनत करते हैं, इसी वजह से दिवाली का त्योहार हर साल, हर दिन अलग होता है। जैसे पिछले साल, हमने भारत के लोक संगीत का मिश्रण प्रस्तुत किया था। यह एक बहुत अच्छा तरीका था जिससे हम दिवाली समारोह के माध्यम से अपने बच्चों को भारत के विभिन्न राज्यों के बारे में सिखा सकते थे। लोक नृत्यों आदि के संदर्भ में



नमस्ते! मेरा नाम श्रवि छाबड़ा है। मैं स्टैमफोर्ड पाठशाला में उच्चस्तर-२ की छात्रा हूँ। मैं टायक्वोंडो में ब्लैक बेल्ट हूँ और नए बच्चों को टायक्वोंडो की ट्रेनिंग देती हूँ। निम्नलिखित

साक्षात्कार मेरे हिंदी शिक्षिका मोना जी के साथ है।

श्रवि-आप साक्षात्कार पढ़ने वालों को अपने बारे में क्या बताना चाहेंगे?

मोना जी- जो भी मेरा यह साक्षात्कार पढ़ रहे हैं हृदय से मेरा नमस्कार। मैं मोना हूँ अमेरिका के स्टैमफोर्ड शहर की निवासी हूँ। २००१ में मैं भारत से स्टैमफोर्ड आयी थी और यहाँ पर मैंने स्टैमफोर्ड पब्लिक स्कूल में भी पढ़ाया और वर्तमान में वेस्ट हिल हाई स्कूल में विज्ञान की शिक्षिका हूँ। १२ वर्ष पहले मनीष माहेश्वरी और कविता माहेश्वरी के द्वारा मैं हिंदी यू.एस.ए. से जुड़ी। मेरी शिक्षा हिंदी में ही हुई है, इसलिए मुझे हिंदी से बहुत लगाव है और प्रवासी भारतीय बच्चों को हिंदी पढ़ाना मुझे बहुत अच्छा लगता है।

श्रवि -आपको शिक्षिका बनने का विचार कैसे आया?

मोना जी- मेरे घर में मेरी माता जी भी उनकी शादी से पहले शिक्षिका थीं। मेरे पिता इंजीनियर थे पर उनकी अंदरूनी इच्छा एक प्रोफेसर बनने की थी, और मेरी दोनों बहनें भी शिक्षिकाएं थी। तो घर के माहौल से मुझे भी शिक्षिका बनने में बहुत रुचि हुई।

श्रवि - आप अपनी पीढ़ी और आज के विद्यार्थियों की तुलना कैसे करेंगी?

हिंदी के अलावा और भी बहुत कुछ जोड़ा जा सकता है। इसलिए, दिवाली एक ऐसा कार्यक्रम है जिसके माध्यम से आप बच्चों को अपने देश और अपनी संस्कृति के बारे में बहुत कुछ बता सकते हैं। दिवाली एक व्यावहारिक कार्यक्रम है।

राजश्री- धन्यवाद कृति जी।

मोना जी- हमारी पीढ़ी का माहौल बहुत ही अलग था। कोई सेलफोन नहीं था और जब मैं हाई स्कूल में थी तब दूरदर्शन आया था, हमारी पीढ़ी के पास ज्यादा समय होता था, उस समय बच्चों का मिलना जुलना रोज होता था। आज की पीढ़ी तकनीकी रूप से बहुत ही आगे है, परंतु देखती हूँ कि सब बच्चे सेलफोन से काफी प्रभावित हैं और इससे छात्रों में व्याकुलता बढ़ गई है।

श्रवि - आप संघर्षरत विद्यार्थियों की मदद और विकसित विद्यार्थियों को चुनौती कैसे देंगी?

मोना जी- एक अच्छी शिक्षिका होने के लिए यह जानना बहुत जरूरी है कि सभी विद्यार्थी एक ही स्तर पर नहीं होते। सब विद्यार्थियों का स्तर अलग-अलग होता है और जिस भी विद्यार्थी को जिस स्तर पर मदद चाहिए वह करती हूँ। जो संघर्षरत है, उनको वे कहाँ पर संघर्ष कर रहे हैं, यह जानकर उनको मदद देना और जो विकसित बच्चे हैं उनको थोड़ा चुनौतीपूर्ण कार्य देना, जैसे अगर रुचि हो तो हिंदी के नए-नए अनुच्छेद देती हूँ।

श्रवि - आप अंत में विद्यार्थियों को क्या संदेश देना चाहेंगी?

मोना जी-जो यहाँ के विद्यार्थी हैं वे तारीफ के योग्य हैं क्योंकि न केवल वे अंग्रेजी भाषा में सब कुछ सीख रहे हैं और उसके साथ-साथ अपनी जो मातृभाषा है, उसके साथ भी जुड़े हुए हैं तो उनको मैं यही कहना चाहूंगी कि हिंदी से हमेशा जुड़े रहे, क्योंकि हिंदी भाषा ही नहीं है बल्कि वह आपके दादा दादी, आपकी संस्कृति और परंपरा से जोड़कर एक सेतु का कार्य करती है। धन्यवाद मोना जी।

हिन्दी के विविध रंग: विद्यार्थियों की कलम से एक अनूठा संगम

आठ कहानियाँ, एक भाषा: उच्चस्तर-१ के विद्यार्थियों के जीवन में हिन्दी का बढ़ता प्रभाव

हिन्दी यू.एस.ए. के पच्चीस वर्ष



मेरा नाम अवनी पराशर है और मैं आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे चित्रकला, कोडिंग और घूमने जाना पसंद है। मुझे हिंदी पढ़ना और हिंदी में वार्तालाप करना भी अच्छा लगता है। मेरे घर में मेरे माता-पिता और मेरा छोटा भाई सभी हिंदी यू.एस.ए. से जुड़े हुए हैं।

परदेस की धरती पर जब,
हिंदी ने बोया था पहला बीज,
शब्दों ने जोड़ा दिल से दिल,
सपनों ने पाई एक नई मंजिल।

शिक्षकों का समर्पण,
अभिभावकों का विश्वास,
स्वयंसेवकों की सेवा,
सब कर रहे प्रयास।

संस्कृति बनी एक मजबूत धारा,
परंपराओं ने जिसे सँवारा,
समय भी जिसे न रोक पाया,
वह सपना और गहराया।

बच्चों में है अब नई उमंग,
हिंदी यू.एस.ए. ने छोड़ी शिक्षा की तरंग,
पहले हिंदी सीखने से थे घबराते,
अब ज्ञान की राह पर नए मुकाम पाते,
हर वर्ष कुछ बच्चे होते स्नातक,
फिर वे बनते अगली पीढ़ी के मार्गदर्शक।
हिंदी सिर्फ एक भाषा नहीं है,
यह उन सबकी पहचान है,
जिनमें बसता आज भी हिंदुस्तान है।

साल पच्चीस – एक सुनहरी पहचान,
हिंदी यू.एस.ए. को मिली नई उड़ान,
चलो बढ़ो आगे मिलकर,
भाषा का दीप जलाएं,
आने वाले हर साल में हम,
हिंदी का उत्सव मनाएं।

आइए, मिलकर यह संकल्प लें
भाषा का मान बढ़ाएँगे
और आने वाले वर्षों में
हम हिंदी को नई ऊँचाइयों तक ले जाएँगे।

कक्षा से कविता सम्मेलन तक,
कहानी, कविता, गीत, विचार,
अमेरिका की धरती पर,
हिंदी का हुआ बड़ा प्रचार।

अंत में—HindiUSA को मेरा हृदय से आभार,
जिसने मुझे हिंदी शिक्षा का दिया यह सुंदर उपहार।

वह दिन जब मैंने पहली बार हिंदी का प्रयोग कक्षा के बाहर किया...



मेरा नाम आश्रय नीलंकाविल है। मैं बारह वर्ष का हूँ और सातवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। इस वर्ष मैं एडिसन हिंदी पाठशाला की उच्चतर-१ कक्षा में हूँ। मुझे अपने परिवार के साथ नई जगहें देखना और घूमना पसंद है।

२०२४ गर्मियों की छुट्टियों में हमने तमिल नाडु की येलगिरी हिल स्टेशन जाने की योजना बनाई। हमने पेरंबूर से जोलारपेट्टाई तक रेलगाड़ी ली। हमारी रेलगाड़ी का नाम हमसफर एक्सप्रेस था। हमारी रेल यात्रा सिर्फ तीन घंटे ओर पच्चीस मिनट की थी। मेरी नानी ने हमारे लिए दोपहर का भोजन तैयार कर के दिया था। जब हम रेल पर चढ़े और अपनी सीट पर बैठे तब वहाँ एक आदमी पहले से ही बैठा था। जैसे ही रेलगाड़ी चली मैं ऊपर वाली बर्थ में चढ़ गया और कंबल ओढ़ लिया। दोपहर बारह बजे रेलगाड़ी कर्मचारी खाना बेच रहे थे। हमारे सहयात्री ने पनीर बिरयानी खरीदी। हमने भी अपना डिब्बा खोलकर इडली खाई। खाना खाते हुए हमने उनसे बातचीत करना शुरू किया। बातों-बातों में हमें पता चला की वे एक गहरी समुद्र गोताखोर (Deep sea diver) थे। वे भारतीय नौसेना की विशेष मरीन कमांडो (MARCOS) थे। मैंने हिंदी में उनसे बात करने का प्रयत्न किया। मुझे पूरा यकीन है कि वे मेरी टूटी-फूटी हिंदी से ज्यादा मेरी अंग्रेजी बेहतर समझ गए होंगे। हमने

अमेरिका की जिंदगी, खाना, और हिंदी पाठशाला की बारे में बात की। हमें पता चला कि वे और उनका परिवार उत्तराखंड का रहने वाला है। वे काम के लिए कोचीन से बेंगलुरु जा

रहे थे। उन्होंने कहा कि उन्हें एक वर्ष में सिर्फ एक महीने की छुट्टी मिलती है। वे बता रहे थे कि उनको अपने छोटे भाई और पत्नी की याद आती है। वे शायद तीस वर्ष के थे। वे दिखने में बलवान थे। हम मित्र जैसे बातें कर रहे थे और ताश खेल रहे थे। मुझे और मेरे भाई को एक भारतीय सैनिक से मिलकर बहुत प्रसन्नता हुई। हमारे लिए उनके साथ एक आम इंसान की तरह बातचीत करना खास अनुभव था। हमारी रेल यात्रा अद्भुत और यादगार रही। मैंने अपने दादा दादी को बताया कि एक भारतीय सैनिक को सच में मेरी हिंदी समझ में आई।



हिंदी यू.एस.ए. ने मुझे जो दिया: भाषा, मंच और आत्मविश्वास



नमस्ते, मेरा नाम पार्थ सोनी है। मैं उच्च स्तर-१ का छात्र हूँ। इस वर्ष हिंदी यू.एस.ए. ने अपने २५ वर्ष पूरे किए और मुझे गर्व है कि मैं पिछले सात वर्षों से इसका हिस्सा हूँ। मुझे अपनी पहली हिंदी क्लास आज भी याद है। उस दिन हमने फलों और रंगों के नाम सीखे थे। मुझे बहुत-सी चीजें पहले से आती थीं क्योंकि मेरी माँ ने मुझे घर पर

हिंदी सिखाई थी, इसलिए अध्यापिका ने मेरी बहुत तारीफ़ की थी। हिंदी यू.एस.ए. ने मुझे मंच पर कविता प्रस्तुत करने का अवसर भी दिया, जिसे मैं कई वर्षों से करता आ रहा हूँ। इससे मेरा मंच का डर दूर हुआ और मेरा आत्मविश्वास बढ़ा। मेरे लिए हिंदी यू.एस.ए. केवल एक कक्षा नहीं, बल्कि सीखने, बढ़ने और सुंदर यादें बनाने की जगह है। हिंदी यू.एस.ए. ने भाषा के साथ आत्मविश्वास और संस्कारों की नींव भी रखी।

मेरे परिवार में भारतीय त्योहारों के पकवान



मेरा नाम पार्थिवी गुप्ता है। मैं आठवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं एडिसन हिंदी पाठशाला की उच्च स्तर -१ की छात्रा हूँ। मुझे हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत (गायन) और कथक नृत्य में रुचि है। गायन में ५ वर्षों से और कथक में ८ वर्षों से सीख रही हूँ। हिंदी यू.एस.ए. की छात्रा हो कर मैं बहुत गर्व महसूस करती हूँ।

भारत त्योहारों का देश है, और भारत के अलग-अलग क्षेत्रों में त्योहारों को मनाने का तरीका भी अलग-अलग होता है। मैं मध्य भारत, छत्तीसगढ़ से आई हूँ, और मेरे घर में भी विभिन्न त्योहारों में विभिन्न पकवान और मिठाइयाँ बनती हैं।

शुरुआत करते हैं सबसे बड़े त्योहार, **दीपावली** से। दीपावली में घर में पकवान से ज़्यादा मिठाइयाँ और



नाश्ता बनता है। मेरी माँ **मिक्चर** बनती हैं, साथ-साथ में **नमकपारा**, **बेसन का लड्डू** और **गुजिया** भी बनाती हैं। अब **होली** की बात करें तो उमसे बहुत सारी अलग किस्म के मिठाइयाँ बनती हैं। होली के समय मेरी माँ घर पर **देहरोरी** बनाती हैं, जो छत्तीसगढ़ में खास तौर पर बनाई



जाने वाली मिठाई है, साथ में **अनरसा** और **मालपुआ** भी बनाती हैं। एक और बात, **देहरोरी** को छत्तीसगढ़ का गुलाब जामुन भी कहा जाता है।

अगले त्योहार, मकर संक्रांति की बात करते हैं। इस त्योहार के दौरान मेरे घर में हम कई तरह के लड्डू बनाते हैं, जैसे **गोंद के लड्डू** और **तिल के लड्डू**।

एक और बड़ा त्योहार, **नवरात्रि**, को मत भूलना। नवरात्रि में सब व्रत रखते हैं, तो फलाहार ज़्यादा बनता है। मेरे घर में **साबूदाना**, **सिंघाड़ा** और **तिखुर** बनता है। मिठाइयाँ भी बनती हैं, पर ज़्यादा से ज़्यादा फलाहार खाया जाता है।



आखिर में, **गणेश चतुर्थी** की बात करते हैं, क्योंकि हमें फिर से मिठाइयों की बात करनी है! घर पर लड्डू और कई तरह के **मोदक** बनाए जाते हैं।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में त्योहारों को मनाने का तरीका भी अलग-अलग है और यह ही भारत की “अनेकता में एकता” है।

हिंदी ↔ अंग्रेजी



मेरा नाम डिविशा जैन है और मैं ग्यारह वर्ष की हूँ। मैं छठी कक्षा में हूँ और एडिसन हिन्दी पाठशाला के उच्चस्तर-१ में हूँ। मुझे कराटे और चित्रकारी बहुत पसंद है और मुझे हिंदी कविता पाठ में भागीदारी करना भी बहुत अच्छा लगता है। हिंदी और अंग्रेजी दो विपरीत भाषाएँ हैं। दोनों ही मुझे बेहद पसंद हैं। दोनों मिलकर ज्ञान और संस्कृति को बढ़ाती हैं। इन भाषाओं में अलग-अलग विशेषता है। इसके महत्व व एक दूसरे पर प्रभाव का ध्यान रखते हुए हम अपने जीवन को सही दिशा दे सकते हैं। जहाँ एक

हमें भारत की ओर खींचती है, वहीं दूसरी भाषा वैश्विक संपर्क कराती है। दोनों एक-दूसरे के पूरक होते हुए भी अपनी खूबसूरती और उपयोगिता से एक साथ चलती है। हिंदी: देवनागरी लिपि, सरल, भावनात्मक, साहित्य और संस्कारों से भरी हुई है। अंग्रेजी: लैटिन लिपि, प्रसिद्ध, सबसे अधिक बोले जाने वाली भाषा, लचीलापन, शिक्षा, व्यापार, तकनीक से भरी हुई है। मुझे गर्व है कि मुझे दोनों भाषाएँ आती हैं। हमें दोनों भाषाओं का सम्मान करना चाहिए। ये भाषाएँ साथ में मिलकर जादू का काम करती हैं।

मेरा जीवन हिंदी के साथ



मेरा नाम शर्वी कथलकर है और मैं बारह वर्ष की हूँ। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ती हूँ मैं एडिसन हिन्दी पाठशाला के उच्चस्तर-१ में पढ़ती हूँ। मुझे तैरना अच्छा लगता है। मैंने तैरने की प्रतियोगिता में इनाम भी जीता है। मैं पाठशाला की वॉलीबॉल टीम में खेलती हूँ। मुझे संगीत सीखना और सुनना अच्छा लगता है। जब मैं पाँचवीं कक्षा में थी, तब ऑल-स्टेट क्वायर में चुनी गई थी और मंच पर प्रदर्शन भी किया था। मुझे पत्रिका में लिखना भी बहुत अच्छा लगता है। मैं एडिशन में ही पर पैदा हुई थी। बड़े होते समय मैं अंग्रेजी और मराठी बोलती थी। इसलिए जब मैं अपने परिवार के साथ भारत जाती थी तब मैं अपने नाना और नानी के साथ हिंदी नहीं बोल पाती थी। मेरी बड़ी बहन पूर्वी मुझे मदद करती थी क्योंकि वह हिन्दी पाठशाला जाती थी। मैं अपने परिवार से बहुत प्यार करती हूँ। मैं चाहती थी कि मैं उनसे अच्छी तरह से बोल सकूँ। इस प्रकार जब मैं ६ साल की हुई तो मैंने भी हिंदी पाठशाला

जाना शुरू किया। इन पिछले ६ वर्षों में मैंने बहुत कुछ सीखा है। हिन्दी यू.एस.ए. ने मुझे सिर्फ भाषा ही नहीं प्रस्तुति कौशल, साहस और संस्कार भी सिखाया है। अब जब मैं भारत जाती हूँ मैं अपने परिवार के साथ सरलता से बात कर पाती हूँ। मैं अपनी बहनों के साथ मजाक करती हूँ। अपने दादाजी के साथ समाचार पत्र पढ़ती हूँ। अपनी नानी के साथ बाजार जाती हूँ। हिंदी सीखने की वजह से मुझे भारतीय संगीत और मनोरंजन में रुचि आने लगी अब मैं हिंदी गानों का अर्थ समझ सकती हूँ। कपिल शर्मा शो के चुटकुले पर हंस सकती हूँ। नए हिंदी चलचित्र देख सकती हूँ। इस तरह हिन्दी यू.एस.ए. ने मुझे एक नई पहचान दी है और मुझे मेरी संस्कृति के साथ जोड़ा है। मैं हिंदी के बिना अपने जीवन की कल्पना नहीं कर सकती हूँ। धन्यवाद हिन्दी यू.एस.ए.।



पुस्तक चर्चा: ज्ञान और मनोरंजन का संगम



मेरा नाम आशी देशपांडे है। मैं मॉंटगोमरी हिंदी पाठशाला में उच्च स्तर-१ की छात्रा हूँ। मैं छठी कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे पुस्तकें पढ़ना अच्छा लगता है। मुझे स्केटिंग और टेनिस खेलना भी बहुत अच्छा लगता है।

पुस्तक का शीर्षक और लेखक: कालीदास (एक चित्र पुस्तक) - प्रकाशक - अमर-चित्र कथा

कथानक (plot) की समीक्षा: कालीदास की जीवनी
आपको यह पुस्तक क्यों पसंद आई? - मुझे यह पुस्तक इसलिये पसन्द आई क्योंकि इसमें चित्रों द्वारा एक पुरानी कथा तथा लोगों के बारे में सीखने को मिलता है।
मुख्य कलाकारों का वर्णन करें और आपको उनमें

क्या पसंद आया: कालीदास एक महान कवि और नाटककार थे। वह एक ग्वाला था जिसका विवाह एक राजकुमारी से हो गया। विवाह के बाद उन्होंने संस्कृत और शास्त्रार्थ की शिक्षा ग्रहण की। एक दिन उनकी पत्नी से लड़ाई के बाद उन्होंने घर छोड़ने का निर्णय लिया। उस समय उनकी पत्नी ने उन्हें श्राप दे दिया। कुछ समय बाद कालीदास ने राजा भोज के दरबार में काम किया। इस बीच उन्होंने बहुत सारे नाटक और महाकाव्य लिखे। इसके कुछ समय बाद वे श्रीलंका गये जहाँ उनकी मुलाकात एक नारी से हुई जैसा श्राप में था।

आपने पुस्तक से कौन से पाठ, मूल्य या विषय सीखे: इस कहानी से हमने यह पाठ सीखा कि कोई भी कड़ी मेहनत से कुछ भी प्राप्त कर सकता है।



मेरा नाम अंश गोयल है। मैं मॉंटगोमरी हिंदी पाठशाला में उच्च स्तर-१ की छात्रा हूँ। मुझे शतरंज और बास्केट बॉल खेलना पसंद है।

पुस्तक का शीर्षक और लेखक: नहले पे दहला- जो मनोज पब्लिकेशन की एक पुस्तक है। इस पुस्तक में बहुत सारी कहानियाँ हैं परंतु यह कहानी मुझे सबसे ज्यादा पसंद आई।

कथानक (plot) की समीक्षा: नहले पे दहला - यह कहानी "चार चोर" नामक पुस्तक से ली गई है।

मुख्य कलाकारों का वर्णन करें और आपको उनमें क्या पसंद आया:

तीन भाई बहुत झूठ बोलते थे। एक बार वे तीनों एक राजकुमार से मिले। एक भाई ने बोला क्यों न हम लोग एक-एक कहानी सुनाकर शाम बितायें? राजकुमार ने कहा हाँ अवश्य। भाई ने कहा हममें से जो भी व्यक्ति

किसी कहानी पर विश्वास नहीं करेगा वह सुनाने वाले का दास बन जायेगा।

सबसे पहले बड़े भाई ने कहानी सुनाई। उस कहानी में तीनों भाई चोर सिपाही खेल रहे थे। एक भाई ने पेड़ देखा और वो पेड़ पर चढ़ गया। मेरे भाई मुझे ढूँढते रहे। जब वे थक गए तो वे पास के एक गाँव में एक झोपड़ी से रस्सी लाए, फिर उस रस्सी से मैं नीचे आ गया।

दूसरे भाई की कहानी में वह एक शेर से मिला और शेर ने उसे खा लिया, फिर उसने शेर को अंदर से काट लिया और उसके मुँह से निकल आया।

फिर छोटे भाई ने कहानी सुनाई। उसकी कहानी में उसने मछली बनकर मछुआरों की रक्षा की।

तीनों कहानियाँ सुनकर राजकुमार ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, फिर राजकुमार ने अपनी एक कहानी सुनाई। उसने कहा मेरे तीन दास नहीं मिल रहे हैं। वे कहीं भाग गये हैं। मैं उन्हें खोजते-खोजते निराश हो चुका था, पर आज मेरी खोज समाप्त हो गई क्योंकि मेरे खोये हुए दास मिल

गये हैं। तुम जानते हो वे दास कौन हैं, तुम तीनों भाई। राजकुमार की बात सुनकर तीनों भाई अचम्भित रह गये। वे आपने ही बुने जाल में बुरी तरह फंस गये थे। अगर मानते तो भी वे बाजी हार जाते और नहीं मानते तो भी।

आपने पुस्तक से कौन से पाठ, मूल्य या विषय सीखे:
इस कहानी से हमें यह सीखने को मिलता है कि हमें कभी अपनी झूठी कहानियों से लोगों को नहीं फंसाना चाहिये।

मेरे हिन्दी यात्रा



इशीता अग्रवाल

हिन्दी सीखने की मेरी यात्रा सफलताओं और कठिनाइयों का एक मिला-जुला अनुभव रही है। प्रारम्भ में मुझे हिंदी की कक्षा में जाना बिल्कुल पसंद नहीं था। शब्द समझना कठिन लगता था और बोलने में डर लगता था। कई बार गृहकार्य भी कठिन होता था, इसलिए मुझे कक्षा बोझ लगती थी। फिर मुझे थोड़ा-सा समझ आने लगा और मैंने बोलना शुरू किया। किसी भी नई चीज को सीखने की तरह, हिन्दी सीखने में भी कुछ बातें बहुत सरल थीं और कुछ के लिए अधिक

प्रयास की आवश्यकता थी। सबसे अच्छी बात तो यह थी कि मैंने एक नई भाषा के साथ-साथ एक महान संस्कृति को करीब से जाना। आज मुझे गर्व है कि मैं हिन्दी पढ़ और लिख सकती हूँ। मेरे इस यात्रा के कुछ पड़ाव, जैसे व्याकरण सीखना, थोड़े कठिन थे, जिनमें अधिक अभ्यास की जरूरत महसूस होती थी। मेरे लिए यह अनुभव खट्टा-मीठा रहा, लेकिन निरंतर प्रयास और मेहनत से मैंने इन चुनौतियों को पार करना सीखा। इस वर्ष हिन्दी कक्षा में मुझे बहुत सी नई और रोचक जानकारी मिल रही है, जैसे लेख लिखना और कविता बोलना। अब मैं अपनी इस भाषाई यात्रा का पूरा आनंद ले रही हूँ।



मेरा नाम प्रियल पटवारी है। मैं चौथी कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं प्लेसबोरो हिन्दी पाठशाला में मध्यमा-२ की छात्रा हूँ। मुझे हिन्दी सीखना बहुत अच्छा लगता है। मैंने हिन्दी सीखना हिन्दी यू.एस.ए. के माध्यम से शुरू किया। यहाँ मैं हर सप्ताह हिन्दी की कक्षा में जाती हूँ। हमारी कक्षा में हम हिन्दी के अक्षर, नए शब्द, वाक्य, कहानियाँ और कविताएँ सीखते हैं। शुरू में हिन्दी पढ़ना और लिखना थोड़ा कठिन लगा, लेकिन मेरी शिक्षिकाओं ने मुझे बहुत प्यार और धैर्य से सिखाया। धीरे-धीरे मुझे हिन्दी समझ में आने लगी। अब मैं हिन्दी में पढ़ और लिख सकती हूँ और वाक्य भी बना सकती हूँ। मुझे

हिन्दी की कक्षा में कविता, खेल और कहानियाँ बहुत पसंद हैं। मैं अपने मित्रों के साथ मिलकर हिन्दी सीखती हूँ। हिन्दी सीखने से मुझे अपने परिवार के साथ हिन्दी में बात करने की प्रेरणा मिलती है और मुझे बहुत खुशी होती है। मैंने हिन्दी महोत्सव और कविता पाठ प्रतियोगिता में भी भाग लिया है। मंच पर हिन्दी कविता सुनाना मेरे लिए बहुत अच्छा अनुभव रहा है। मुझे गर्व है कि मैं हिन्दी यू.एस.ए. के साथ हिन्दी सीख रही हूँ। मैं आगे भी हिन्दी सीखना चाहती हूँ ताकि मैं अपने परिवार से हिन्दी में बात कर सकूँ और भारतीय संस्कृति को और अच्छी तरह समझ सकूँ। हिन्दी मेरी पहचान और मेरी संस्कृति से जुड़ने का एक सुंदर माध्यम है।

हिंदी भाषा मेरा भविष्य कैसे बदलेगी

चेरी हिल और एडिसन हिंदी पाठशाला— मध्यमा-3



विहान गिरधर

हिंदी भाषा भारत की प्राचीन, समृद्ध और भावनात्मक रूप से जुड़ी हुई भाषा है। यह केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि संस्कृति, साहित्य, परंपरा और मूल्यों की वाहक भी है। दुनिया भर में करोड़ों लोग हिंदी बोलते और समझते हैं, जिससे यह एक वैश्विक भाषा के रूप में भी उभर रही है। हिंदी का ज्ञान व्यक्ति को अपनी जड़ों से जोड़े रखता है और बहुभाषी होने की क्षमता को मजबूत बनाता है, जो आज के वैश्विक समाज में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मैं अमेरिका में रहता हूँ, जहाँ विविध संस्कृतियों और भाषाओं का संगम है। ऐसे वातावरण में हिंदी भाषा का ज्ञान मेरे लिए एक विशेष पहचान बन सकता है। हिंदी सीखने से मैं अपने परिवार, अपनी संस्कृति और अपनी जड़ों से गहराई से जुड़ पाऊँगा। यह भाषा मुझे अपने बुजुर्गों से बेहतर संवाद करने का अवसर देती है और



विराट देवरिया

मेरा नाम विराट देवरिया है। मैं चेरी हिल हिंदी पाठशाला का छात्र हूँ। चित्रकारी, सॉकर और मार्शल आर्ट्स मेरी कुछ रुचियों में से एक है। मुझे हिंदी पाठशाला आना पसंद है क्योंकि यहाँ आकर मुझे हर सप्ताह अपने मित्रों से मिलने का अवसर मिलता है।

भारत आज दुनिया की सबसे तेज़ी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है, इसलिए हिंदी भाषा का ज्ञान

उनकी कहानियों, अनुभवों और मूल्यों को समझने में मदद करती है। हिंदी के माध्यम से मैं साहित्य, कविताओं और परंपराओं को मूल रूप में समझ सकता हूँ, जिससे मेरा सोचने का तरीका और दृष्टिकोण और भी समृद्ध होता है। इससे मेरा आत्मविश्वास बढ़ता है और मैं अपनी पहचान को लेकर अधिक गर्व महसूस करता हूँ। भविष्य के संदर्भ में हिंदी मेरे लिए नए अवसरों के द्वार खोल सकती है। भारत वैश्विक स्तर पर तेज़ी से आगे बढ़ रहा है, और हिंदी जानने से मुझे शिक्षा, व्यापार, तकनीक, मीडिया और अंतरराष्ट्रीय संबंधों जैसे क्षेत्रों में लाभ मिल सकता है। दो या अधिक भाषाएँ जानने से मेरी सोचने-समझने की क्षमता बेहतर होती है और मैं अलग-अलग संस्कृतियों के लोगों से आसानी से जुड़ पाता हूँ। हिंदी मेरे लिए केवल एक भाषा नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा साधन है जो मुझे व्यक्तिगत रूप से आगे बढ़ने में मदद करेगा और मेरे भविष्य को अधिक उज्ज्वल बनाएगा।

होना हमारे लिए बहुत फायदेमंद हो सकता है। अपनी मातृभाषा के रूप में, यह हमारा आत्मविश्वास बढ़ाती है और विभिन्न क्षेत्रों में काम करने के अवसर खोलती है। फोनेटिक भाषा होने के कारण हिंदी सीखने से हमारी स्मरण शक्ति बढ़ती है और दिमाग का सम्पूर्ण विकास होता है। जहाँ हिंदी मेरी भारत यात्रा का अनुभव बेहतर करेगी वहीं गहरे व्यक्तिगत रिश्ते बनाने में भी मदद करेगी। हिंदी मुझे मेरी गहरी सांस्कृतिक विरासत और समृद्ध साहित्य से जोड़ कर रखेगी।



ईशान पुरिणी

मेरा नाम ईशान पुरिणी है। मैं छठी कक्षा का छात्र हूँ। मुझे फुटबॉल खेलना, किताबें पढ़ना और टीवी देखना बहुत पसंद है। मुझे समुद्र और वहाँ रहने वाले जीवों के बारे में जानना अच्छा लगता है। बड़े होकर मैं मरीन बायोलॉजिस्ट बनना चाहता हूँ। हिंदी भाषा मेरा भविष्य कई तरह से बदल सकती है। यह मुझे अपनी संस्कृति और देश से जोड़ती है। हिंदी का

अच्छा ज्ञान होने से मैं अपने विचार स्पष्ट और आत्मविश्वास के साथ व्यक्त कर सकता हूँ। इससे मुझे पढ़ाई में मदद मिलेगी और आगे चलकर अच्छे अवसर भी मिल सकते हैं। हिंदी भाषा के माध्यम से मैं समाज की समस्याओं को समझ सकता हूँ और लोगों तक अपनी बात पहुँचा सकता हूँ। आज के समय में हिंदी का प्रयोग इंटरनेट और मीडिया में भी बढ़ रहा है। इसलिए हिंदी भाषा मेरे व्यक्तित्व और भविष्य को उज्ज्वल बना सकती है।



अर्जुन नालावड़े

नमस्ते मेरा नाम अर्जुन नालावड़े है। हिन्दी यू.एस.ए. का हिस्सा होने पर मुझे बहुत गर्व है। मैं हिन्दी सीख कर हिन्दी चलचित्र और गाने सुन और समझ सकता हूँ। मैं भारत में अपने रिश्तेदारों के साथ हिन्दी में बात कर सकता हूँ। हिन्दी यू.एस.ए. ने मुझे कविता पाठ

प्रतियोगिता और हिन्दी महोत्सव में भाग लेने के अवसर प्रदान किए। प्रतिवर्ष हिन्दी महोत्सव के नाटक प्रतियोगिता में भाग ले कर मेरा मंच का डर चला गया। इससे मेरा आत्मविश्वास बहुत बढ़ गया। इस आत्मविश्वास के कारण अब मैं अपनी पाठशाला की किसी भी प्रतियोगिता में बहुत अच्छी प्रस्तुति दे सकता हूँ।



पार्थ पालखे

नमस्ते, मेरा नाम पार्थ पालखे है और मैं मध्यमा-३ में पढ़ता हूँ। एडिसन, हिंदी पाठशाला में यह मेरा तीसरा वर्ष है। मैंने प्रथमा-२ स्तर से हिंदी सीखने का अपना सफ़र शुरू किया। मुझे गाने गाना, किताबें पढ़ना और अलग-अलग भाषाएँ सीखना पसंद है। मैं अमेरिका में पैदा हुआ और यहीं पला-बढ़ा हूँ, लेकिन हिंदी भाषा ने मुझे हमेशा भारत और अपनी जड़ों से जोड़े रखा है। हिंदी सीखने से मैं अपने परिवार और परंपराओं को बेहतर तरीके से समझ पाता हूँ। हिंदी को अच्छी तरह सीखते रहने से मुझे हिंदी साहित्य, संगीत, सिनेमा और नाटक का आनंद लेने का अवसर मिलेगा, जिससे मेरा अनुभव और भी समृद्ध होगा। हाल ही में मुझे कविता-पाठ प्रतियोगिता में बड़े मंच पर प्रस्तुति देने का अवसर

मिला। उस अनुभव ने मेरा आत्मविश्वास बढ़ाया और मुझे अपनी क्षमताओं पर विश्वास दिलाया। हिंदी मुझे अपनी संस्कृति, इतिहास और भावनाओं से गहराई से जोड़ती है। हिंदी की सहायता से मैं लोगों से आसानी से बात कर पाऊँगा, भारत में नए स्थानों को समझ पाऊँगा और नए मित्र बना पाऊँगा। आज की वैश्विक दुनिया में बहुभाषी होना अत्यंत लाभकारी है। हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाएँ जानने से मैं दुनिया को बेहतर समझ पाऊँगा। मैं आत्मविश्वास के साथ अपनी बात रख सकूँगा और नए अवसरों को पहचान पाऊँगा। जब मैं बड़ा होकर अपना व्यवसाय चुनूँगा, तब हिंदी मेरे लिए एक महत्वपूर्ण शक्ति बनेगी और अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में भी मुझे आगे बढ़ने में मदद करेगी। मुझे विश्वास है कि हिंदी मेरे व्यक्तित्व को मजबूत बनाएगी और मेरा भविष्य उज्ज्वल और सफल बनाएगी।



समर्थ रस्तोगी

हिंदी भाषा मेरा भविष्य कई तरह से बदल सकती है, अपितु बदल रही है। जब से मैं हिंदी यू.एस.ए. से जुड़ा हूँ तब से मेरा मुख्य उद्देश्य हिंदी सीखना रहा है ताकि मैं अपने दादा-दादी से बात कर सकूँ। आमतौर पर जब मैं उनसे बात करता था, तब मैं हिंदी अच्छे से समझ नहीं पाता था और उनसे साफ-साफ बात नहीं कर पाता था।



अनिका जैन

नमस्ते, मेरा नाम अनिका जैन है। मैं मध्यमा-३ में पढ़ती हूँ। मुझे तैरना और पढ़ना पसंद है। अमेरिका में हिंदी भाषा का ज्ञान मेरे भविष्य के लिए कई संभावनाओं के द्वार खोल सकता है। यहाँ की बढ़ती भारतीय आबादी के बीच अपनी जड़ों से जुड़े रहना एक विशेष सांस्कृतिक पहचान देता है। व्यावसायिक क्षेत्र में भारत और अमेरिका के मजबूत आर्थिक संबंधों के कारण हिंदी बोलने वाले पेशेवरों की मांग बढ़ रही है। यदि मैं स्वास्थ्य सेवा, कानून या समाज सेवा जैसे क्षेत्रों में काम करती हूँ तो हिंदी के माध्यम से मैं प्रवासी समुदाय की बेहतर मदद कर पाऊँगी। यह भाषा मुझे न केवल अपने परिवार

अब मैं उनसे और भारत में अपने अन्य रिश्तेदारों के साथ हिंदी में बात करता हूँ और अपने परिवार से और अधिक जुड़ पाया हूँ। जब भाषा का ज्ञान हो तभी आप साहित्य और इतिहास पढ़ कर अपनी संस्कृति से जुड़ पाते हैं। मैं हिंदी सीखूँगा तब ही अपनी आने वाली पीढ़ी को सिखा पाऊँगा। इसलिए हिंदी भाषा सीखना हर भारतवासी के लिए आवश्यक है।

और समुदाय के करीब लाती है, बल्कि मेरी संवाद क्षमता को भी बहुमुखी बनाती है। भविष्य में यदि मुझे भारत में रहने का अवसर मिले तो मेरी द्विभाषी दक्षता मेरे लिये प्लस पॉइंट साबित होगी। हिंदी के माध्यम से मैं भारतीय मनोरंजन, साहित्य और संगीत का सरल आनंद ले सकती हूँ जो मेरे व्यक्तिगत विकास में सहायक है। इसके अतिरिक्त, भाषा सीखने से आपके मस्तिष्क की कार्यक्षमता और याददाश्त में भी सुधार होता है। कुल मिलाकर, अमेरिका में हिंदी जानना मेरे करियर और सामाजिक जीवन दोनों को समृद्ध बना सकता है। भविष्य में यह भाषा कौशल मुझे एक वैश्विक नागरिक के रूप में विशिष्ट पहचान दिलाने में सहायता करेगा।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) - वरदान या अभिशाप



मेरा नाम कुश छेड़ा है और मैं हिन्दी पाठशाला के उच्चस्तर-१ कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे टेनिस खेलना है और स्कीइंग करना बहुत पसंद है। आजकल बच्चों की दुनिया में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) बहुत जल्दी फैल रहा है। यह एक स्मार्ट मशीन जैसा होता है जो हमें मदद करता है। विद्यार्थी इससे पढ़ाई में मदद लेते हैं। कभी-कभी AI हमें अच्छे सुझाव भी देता है। हम नई बातें आसानी से सीख सकते हैं। लेकिन AI के कुछ

नुकसान भी हैं। AI के ज़्यादा इस्तेमाल से हम आलसी हो जाते हैं। हम खुद सोचने की कोशिश कम करते हैं। मोबाइल और लैपटॉप पर बहुत समय चला जाता है। इससे आँखें खराब होती हैं और सिर भी भारी लगता है। हम बाहर खेलना और दोस्तों से मिलना भी कम कर देते हैं। AI बुरा नहीं है लेकिन उसका सही इस्तेमाल जरूरी है। माता-पिता और टीचर हमें रास्ता दिखा सकते हैं। हमें पढ़ाई, खेल और तकनीक में संतुलन रखना चाहिए। तभी AI हमारे लिए अच्छा दोस्त बन सकता है।

हिंदी सीखने के लाभ



नमस्ते! मेरा नाम येशा मेवानी है। मैं १२ वर्ष की हूँ और मैंने पिछले वर्ष हिंदी में स्नातक की उपाधि प्राप्त की है। मैं हिंदी यू.एस.ए. की एक गर्वित स्वयंसेविका हूँ।

हिंदी सीखना मज़ेदार है। इसकी लिपि अलग है और व्याकरण थोड़ा कठिन है, लेकिन इसे सीखने से आपके दिमाग की क्षमता बढ़ती है। नए शब्दकोष को याद करने, वाक्य की रचना को समझने और देवनागरी लिपि में पढ़ना-लिखना सीखने की प्रक्रिया में बहुत ज़्यादा दिमागी मेहनत लगती है। हमारे दिमाग के दो हिस्से होते हैं—बायाँ और दायाँ। हिंदी सीखने और बोलने से दिमाग के दोनों हिस्से सक्रिय और मजबूत होते हैं। इनके अलावा हिंदी सीखने के बहुत सारे फायदे होते हैं। जब विद्यार्थी

हिंदी और अंग्रेजी को साथ में सीख रहे होते हैं, तब उनका दिमाग उन भाषाओं में अंतर करना सीखता है। यह कार्य थोड़ा कठिन है, परंतु इसके अभ्यास करने से उन्हीं विद्यार्थियों को बहुकार्य करने की क्षमता बढ़ जाती है। अगर आप भारत के बहुरंगी साहित्य और वहाँ के त्योहार, परंपराओं का गूढ़ अध्ययन करना चाहते हैं तो हिंदी सीखिए क्योंकि इसके ज़रिये आप भारत के इतिहास और प्राचीन संस्कृति को जान सकते हैं! मैं जब भी भारत जाती हूँ, मैं वहाँ पर किसी से भी बात कर सकती हूँ, पानी-पूरी खाते समय पानी-पूरी वाले को समझा सकती हूँ कि वो मेरे लिए कैसी पानी-पूरी बनाये, मीठी, खट्टी या मिर्ची वाली। और तो और, यात्रा करते समय मैं सब लोगों से उनका परिचय पूछती हूँ और उनके साथ बात करती हूँ। आप भी हिंदी सीखिए और बहुभाषी बनिए।

AGGARWAL Your Family. Financials — Your Peace of Mind.

Trusted Financial Guidance for Today and Tomorrow.



Anubha Aggarwal

732 910 6364

Anubha.0506@gmail.com

Services Offered

- ✓ **Will & Trust Planning** to secure your legacy and protect your family's future
- ✓ **Retirement Income** you can never outlive
- ✓ **Smart, tax-free** retirement strategies
- ✓ **Joint lifetime income** options for you and your spouse
- ✓ **College Funding Planning**
- ✓ **Term life with living benefits** for real-life emergencies
- ✓ **Long-term care** solutions that preserve dignity



Dedicated to securing your legacy and safeguarding your family's future through personalized financial solutions.

हिंदी महोत्सव के अनुभव

महोत्सव २०२४: राम आएँगे



मेरा नाम रीसा वोहरा है। मैं न्यू जर्सी में साउथ ब्रंस्विक पाठशाला की मध्यमा-३ कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे कला और संगीत में बहुत रुचि है। श्री रामचंद्र जी पर आधारित इस रचना ने मुझे गहराई से प्रभावित किया। नृत्य में मेरी रुचि होने के कारण, जब मैंने उनके जीवन पर यह प्रस्तुति दी, तो उससे प्रेरणा लेकर मैंने यह लेख लिखा है।



हिंदी महोत्सव में हमने (साउथ ब्रंस्विक हिंदी यू.एस.ए. ने) भगवान श्री राम जी के अपने भाई लक्ष्मण जी और पत्नी सीता जी के साथ वनवास से अयोध्या लौटने पर आधारित एक सामूहिक नृत्य प्रस्तुत किया था। तब मैं मध्यमा-१ में थी। यह नृत्य बहुत प्रभावशाली था। हमने प्रतियोगिता जीत ली और हमें प्रथम स्थान मिला। यह नृत्य भगवान राम के वापिस आने पर पूरी नगरी को

सजाने, मिठाइयाँ बाँटने और अंत में खुशी मनाने को दर्शाता है। जब लोगों ने हमारा नृत्य देखा तो लोगों की आँखों में आँसू थे। कहानी को अभिनय और नृत्य के साथ बहुत ही सुंदरता से प्रस्तुत किया गया था। इस सुंदर रचना का हिस्सा बनना अब तक का मेरा सबसे प्यारा अनुभव था, जहाँ हमने भगवान श्री राम का १४ वर्ष के वनवास के बाद अयोध्या आगमन का त्योहार मनाया।

खोजें अपना ज्ञान

वर्तमान में, अमेरिका के विभिन्न राज्यों में हिन्दी यू.एस.ए. के समर्पित स्वयंसेवकों द्वारा सीधे तौर पर कितनी पाठशालाएँ संचालित की जा रही हैं?

(क) १० (ख) १५ (ग) २२ (घ) २९



उत्तर पृष्ठ १८, ३३ पर देखें

मंगलयान से नृत्य तक, एक अविस्मरणीय यात्रा



नमस्ते, मेरा नाम हास्या तातिनेनी है और मैं हिंदी यू.एस.ए. में मध्यमा-3 की छात्रा हूँ। मैं हिंदी यू.एस.ए. में तीन वर्षों से पढ़ रही हूँ और मैं आपको अपने हिंदी महोत्सव के अनुभव के बारे में बताऊँगी।

तीन वर्ष पहले मैंने हिंदी महोत्सव में भाग लिया था। उस समय हिंदी यू.एस.ए. में मेरा वह पहला वर्ष था और मैं प्रथमा-2 की छात्रा थी। महोत्सव की तैयारी के लिए हम लोगों ने अपनी हिंदी अध्यापिका के घर पर कई बार अभ्यास किया। हमारी महोत्सव टीम में तीन समूह थे। पहले समूह ने कई प्रकार के योग आसन दिखाए और दूसरे समूह ने प्रार्थना की। मैं वैज्ञानिकों के तीसरे समूह

में थी और हमने मंगलयान रॉकेट का प्रक्षेपण दिखाया। अंत में तीनों समूह के लोगों ने मिलकर हाथों में फूल भरे मटकों को लेकर नृत्य किया। महोत्सव प्रतियोगिता में हमारी टीम दूसरे स्थान पर आई। महोत्सव में भाग लेना बहुत मजेदार था और मैंने अपनी संस्कृति के बारे में



बहुत कुछ सीखा। हिंदी महोत्सव बहुत रोमांचक था और मेरे लिए यह एक अविस्मरणीय स्मृति है।

मंच पर माँ गंगा की महिमा: मेरा महोत्सव अनुभव २०२५



मेरा नाम खेवना सूर्यवंशी है। मैं हिंदी यू.एस.ए. एडिसन, मध्यमा-3 की छात्रा हूँ। मेरा हिंदी पाठशाला में यह पाँचवाँ वर्ष है। मुझे हिंदी सीखने और बोलने में बहुत गर्व महसूस होता है।

पिछले वर्ष २०२५ में मैंने हिंदी महोत्सव में नृत्य नाटिका में भाग लिया था। यह एक सामूहिक प्रतियोगिता थी, हमने “जय गंगे भागीरथी” गाने पर नृत्य किया था। इस प्रतियोगिता में हमारे अलावा कई और भी नृत्य नाटिकाएँ थीं, जो प्रदेश के अलग-अलग नगरों से थीं। सभी लोगों ने रंग बिरंगी कपड़े पहने हुए थे। सबके नृत्य देखने से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला था। एक नृत्य जिसमें भगवान विष्णु के सारे अवतार के बारे में बताया था, वो मुझे बहुत ही अच्छा लगा था। प्रतियोगिता के कुछ हफ्ते पहले हमने तैयारी करना शुरू की थी। जब

तैयारी करना शुरू की थी तब हम विद्यार्थियों को इस नृत्य के बारे में कुछ नहीं आता था। पर शिक्षिका की सहायता और मेहनत से हम सबने अच्छे से सीख लिया। सबसे पहले उन्होंने हमें माँ गंगा की कहानी समझाई, जिससे हमें सीखने में बहुत सहायता मिली।

मैं मन से सभी शिक्षिकाओं को धन्यवाद देना चाहती हूँ जिन्होंने अपना बहुत समय दिया। इसमें भाग लेने से सीखने के अलावा बहुत सारे नए दोस्त भी बनाए हैं।



मध्यमा-३ की कलम से: हमारी हिंदी यात्रा और विविध अनुभव

मध्यमा-३ स्तर के विद्यार्थियों द्वारा रचित लेखों का एक संग्रह, जहाँ भाषा केवल शब्द नहीं बल्कि अनुभवों का दर्पण है।

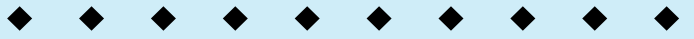
हमारी हिन्दी यात्रा



मेरा नाम आरुणा आनंद है। मैं ८ वर्ष की हूँ। मैं तीसरी कक्षा में पढ़ती हूँ और हिंदी पाठशाला में मध्यमा-३ की छात्रा हूँ। मुझे तैरना और क्रिकेट खेलना पसंद है।

क्या आपको ऐसा लगता है कि हिंदी भाषा हिंदी पाठशाला जाने से ही सीख सकते हैं? नहीं, बिल्कुल नहीं। जैसे मैंने हिंदी घर पर ही सीखी है। मैं जब ३ वर्ष की थी, मैं अपने परिवार के लोगों को हिंदी बोलते सुनती थी और उनकी हिंदी सुनकर मैंने हिंदी समझना शुरू कर दिया। मेरे माता-पिता और दादा-दादी हमेशा हिंदी में बात करते थे इसलिए मैं भी उनसे धीरे-धीरे हिंदी में बात करने लगी। मुझे घर पर ही हिंदी बोलना और समझना आ गया लेकिन मेरे माता-पिता ने सोचा कि मुझे हिंदी पढ़ना और लिखना भी आना चाहिए, इसलिए उन्होंने मेरा नाम हिंदी पाठशाला में लिखवाया। हिंदी पाठशाला में मैंने अक्षर पढ़ना और लिखना सीखा तथा साथ में मुझे हिंदी में गिनती भी सिखाई गई। इसके कारण अब मैं छोटे-छोटे शब्द पढ़ सकती हूँ। फिर मुझे मात्रा के बारे में सिखाया गया इसके कारण अब मैं थोड़े कठिन शब्द भी पढ़ पाती हूँ। व्याकरण के नियमों के बारे में पढ़ रही हूँ। व्याकरण मुझे सही तरीके से हिंदी सीखने में मदद करेगा। जब मैं भारत जाती हूँ तो बोर्ड पर लिखे शब्द पढ़ लेती हूँ और जगहों के नाम भी पढ़ लेती हूँ। अब मैं छोटे-छोटे लेख, कविताएँ तथा कहानियाँ खुद से लिख और पढ़ सकती हूँ। मैं हिंदी में चुटकुले समझ पाती हूँ। हिंदी

चलचित्र देख पाती हूँ और नाटक भी समझ पाती हूँ। मैं आशा करती हूँ कि मैं इसी तरह हिंदी सीखते रहूँ तथा हिंदी का आगे भी रोज की जिंदगी में इस्तेमाल करूँ।



मेरा नाम विहान पटेल है। मैं एडिसन न्यू जर्सी की पाठशाला में मध्यमा-३ का विद्यार्थी हूँ। मैं ११ वर्ष का हूँ और पाँचवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे बेसबॉल खेलना बहुत पसंद है।

मेरी हिन्दी पाठशाला की शुरुआत २०२० में हुई थी। मेरा अनुभव बहुत ही अलग था, क्योंकि, कोविड महामारी की वजह से पूरा वर्ष मैंने ऑनलाइन अभ्यास किया था। कनिष्ठा-२ कक्षा में मैंने स्वर और व्यंजन सीखे। यह मेरे लिए थोड़ा कठिन था। पर हमारी शिक्षिका ने बहुत आसान कर दिया। हमने रंग, फलों के नाम, और जानवरों के नाम सीखे। अगली कक्षा में मैंने नए-नए शब्द, जोड़-क्षर, और व्याकरण का प्रयोग करना सीखा। अगली कक्षा में वाक्य बनाना और पढ़ना सीखा। हिन्दी पाठशाला में हिन्दी अभ्यास के अलावा भी बहुत सारी गतिविधियाँ होती हैं। हिंदी महोत्सव, कविता प्रतियोगिता, २६ जनवरी, और दीवाली उत्सव मनाये जाते हैं। महोत्सव हर वर्ष मई महीने में होता है। इसमें हिंदी पाठशाला के विद्यार्थी, नृत्य, और नाटक से अपनी प्रतिभा दर्शाते हैं। मैंने भी २०२१ में हिस्सा लिया था। पहले हमने घर में अभ्यास किया और फिर सब विद्यार्थी उपवन में मिले और हमारी शिक्षिका ने रिकॉर्ड करके ऑनलाइन महोत्सव में शामिल किया था। हर वर्ष मैं भी हिंदी कविता प्रतियोगिता में हिस्सा लेता हूँ। हास्य, वीर रस

और बहुत प्रकार की कविताएँ सुनने को मिलती हैं। हिंदी पाठशाला में हमें भारतीय त्योहारों के बारे में जानने और मानने का मौका मिलता है। अभी मैं मध्यमा-३ में पढ़ता हूँ। आज मैं हिंदी लिख-पढ़ सकता हूँ। मैं खुश हूँ कि मैं हिंदी पाठशाला में जाता हूँ। यह अनुभाव भविष्य में मेरे लिये बहुत उपयोगी होगा।

हिंदी भाषा से मैं बहुत कुछ सीख रहा हूँ

मेरा नाम नींव सिंह। मैं मध्यमा-३ का छात्र हूँ और छठी कक्षा में पढ़ता हूँ। मुझे पुस्तकें पढ़ना और व्हिओला बजाना बहुत पसंद है। मैंने पाँच वर्ष की उम्र से हिन्दी यू.एस.ए. से हिन्दी सीखना शुरू किया था। उस समय मुझे यह भी नहीं पता था कि हिन्दी सीखने का क्या महत्व है। लेकिन जैसे-जैसे मैं कक्षाओं में आगे बढ़ा, मेरी हिन्दी और भी बेहतर होती गई। पहले मैं बड़े अनुच्छेद नहीं पढ़ पाता था, लेकिन अब मैं आसानी से पढ़ और लिख सकता हूँ।

हिन्दी यू.एस.ए. में मुझे कई शानदार अवसर मिले। मैंने कविता पाठ प्रतियोगिता में भाग लिया और मंच पर बोलना सीखा। महोत्सव के दौरान मैंने अभिनय भी किया। इनसे मेरा आत्मविश्वास बहुत बढ़ा और मुझे नई चीजें सीखने की प्रेरणा मिली। हिन्दी यू.एस.ए. में सभी लोग बहुत दयालु और अच्छे दिल वाले हैं। मैंने वहाँ कुछ अच्छे दोस्त भी बनाए। हर शुक्रवार को जब मैं हिन्दी कक्षा जाता हूँ तो मुझे बहुत अच्छा लगता है। कुल मिलाकर, हिन्दी यू.एस.ए. ने मुझे बहुत ज्ञान दिया और कई महत्वपूर्ण चीजें सिखाईं। आज मुझे हिन्दी बोलने, पढ़ने और लिखने में खुशी होती है। जब मैं भारत गया, तो सभी ने मेरी हिन्दी की बहुत प्रशंसा की। हिन्दी यू.एस.ए. ने मेरे अंदर आत्मविश्वास जगाया और मुझे गर्व महसूस कराया।

बाल-बाल बचे

—वियान पटेल

दो वर्ष पहले मैं भारत गया था, तब हिंदी ने मेरी बहुत मदद की। हम हर वर्ष गर्मी की छुट्टियों में अहमदाबाद, गुजरात जाते हैं। मैं अपनी नानी के घर रुका हुआ था। सुबह नाश्ते में दलिया और दूध खाया और नानी जी से अपनी माँ के लिए पूछा। उन्होंने नाश्ता खत्म होने के



मेरा नाम ईशान मजूमदार। मैं सातवीं कक्षा में पढ़ता हूँ और JAMS स्कूल का छात्र हूँ। अभी मैं हिंदी की कक्षाओं में प्रिया जी और श्वेता जी से सीख रहा हूँ।

मेरी हिंदी यात्रा कनिष्ठा-२ से शुरू हुई जब मैंने हिंदी के अक्षर और छोटे शब्द सीखने शुरू किए। उस समय हिंदी सीखना थोड़ा कठिन लगता था, लेकिन धीरे-धीरे यह आसान हो गया। हर वर्ष नई चीजें सीखते हुए मेरी प्रगति होती गई। हिंदी सीखने से मेरी याददाश्त अच्छी हुई क्योंकि मुझे नए शब्द और मात्राएँ याद करनी पड़ती थीं। मेरे माता और पिता हमेशा मेरी मदद करते रहे और मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते रहे। जब मैंने व्याकरण सीखना शुरू किया तो मुझे सही वाक्य बनाना आया, जिससे मेरी समस्या हल करने की क्षमता बढ़ी। हिन्दी ने मुझे एक साथ कई काम करने की भी क्षमता दी, जैसे सुनना, लिखना और सोचते हुए वाक्य बनाना। कनिष्ठा-२ से प्रथमा स्तर तक मैंने पढ़ना और लिखना सीखा। प्रथमा से मध्यमा स्तर तक मैंने पूरे पैराग्राफ लिखना सीख लिया। भारत यात्रा के समय हिन्दी जानने से मैं अपने रिश्तेदारों और दूसरे लोगों से आसानी से बात कर ली। हिन्दी बोलने से मुझे अपनी संस्कृति के और पास महसूस हुआ। आज मुझे अपनी हिन्दी यात्रा पर गर्व है और मैं आगे भी हिंदी सीखना चाहता हूँ। अब मध्यमा-३ में मैं अपने विचार हिन्दी में साफ तरीके से लिख सकता हूँ।

बाद मुझे नहाने और भारतीय कपड़े पहनने को कहा। मेरे नाना-नानी और मेरे मामा का घर थोड़े अंतर पर है। नाना-नानी एक बंगले में रहते हैं और मेरे मामा-मामी एक अपार्टमेंट में रहते हैं, और उनके अपार्टमेंट का नाम “सौरभ कॉम्प्लेक्स” है। मेरी नानी ने मुझे सौरभ कॉम्प्लेक्स जाने को कहा और बोला, माँ वही मिलेगी। मैंने उनकी बात ठीक से नहीं सुनी और घर से चल पड़ा। रास्ते में एक आश्रम मंदिर पड़ता है जहाँ मेरी नानी हर दिन पूजा करने जाती हैं और हम भी साथ जाते हैं। मैं आश्रम चला गया, क्योंकि हम कल वहाँ प्रार्थना करने गए थे। मैंने पुजारी से अंग्रेजी में पूछा कि क्या आपने मेरे मामा और माँ को देखा है? पुजारी ने कुछ जवाब दिया जो गुजराती में था, मुझे बड़ी उलझन हो गयी। मैं कुछ समझ नहीं पाया और वह से निकल गया। मैं आश्रम के एक छोटे मंदिर की ओर चलने लगा, क्योंकि सड़कों पर बहुत भीड़ थी। मंदिर में प्रवेश करते ही एक बुजुर्ग ने मेरा अभिवादन किया और मैंने जल्दी से देखा कि क्या वे लोग वहाँ हैं? लेकिन वे नहीं थे। इसलिए मैं वापस अपने नाना-नानी के घर चल पड़ा। नानी के घर पहुँचा तब तक नानी बाजार जाने को निकल गई थी। मैं घर के बाहर बैठ गया और सोचने लगा कि अब क्या करूँ। मैं अपने परिवार को बहुत याद कर रहा था और मन ही मन भगवान को प्रार्थना करने लगा। कुछ क्षण में नानी ने जो कहा था वह याद आ गया “सौरभ कॉम्प्लेक्स”। मैंने सड़क के पार खड़े एक ठेलेवाले को अंग्रेजी में कहा कि मुझे “सौरभ कॉम्प्लेक्स” जाना है। वह बोला “No English” फिर मैंने हिंदी में बोला “मुझे सौरभ कॉम्प्लेक्स जाना है” वह तुरंत समझ गया और इशारे से मुझे अपने साथ चलने को बोला। हम आश्रम की ओर चल पड़े, थोड़ी दूरी और चलने पर अपनी माँ और मामा को हाथ हिलाते और मुझे बुलाते हुए देखा। मैं दौड़कर उनके पास गया और उन्हें गले लग गया। आज भी मैं यह किस्सा याद करके गर्व करता हूँ, हिंदी ने कठिन

समय पर बहुत सहायता की।

मैं ओणम कैसे मनाती हूँ



नमस्ते मेरा नाम हर्षिता नायर है। मैं एडिसन हिंदी पाठशाला में मध्यमा-3 कक्षा में पढ़ती हूँ। मुझे कर्नाटक संगीत बहुत पसंद है और मुझे

वॉलीबॉल खेलना भी बहुत पसंद है।

ओणम केरल का त्योहार है। ओणम दस दिन के त्योहार के रूप में मनाया जाता है। पहले दिन अथम से दसवें दिन थिरुवोनम। दसवें दिन ओणम मनाया जाता है। यह अगस्त और सितंबर महीनों के बीच आता है। ओणम राजा महाबली के स्वागत के लिए मनाया जाता है। ओणम के दिन मैं पारंपरिक कपड़े पहनती हूँ और सुबह मंदिर जाती हूँ।

इस वर्ष भी मैंने घर के दरवाजे

पर फर्श को पूकलम से सजाया। यह एक तरह की



रंगोली है जो फूलों पर बनती है। फिर मैंने ओनासाद्या का आनंद लिया, यह एक पारंपरिक शाकाहारी व्यंजन है जिसमें लगभग बीस से तीस पदार्थ होते हैं और जो केले के पत्ते में परोसा जाता है।

थिरुवथिराकली लड़कियों और महिलाओं का एक समूह नृत्य है। मैं अपने दोस्तों और परिवार के साथ मंदिर में परफॉर्म करती हूँ। वल्लम काली एक पारंपरिक स्नेक बोट रेस है, जिसमें पचास से अस्सी लोग एक ही नाव को दौड़ाकर फिनिश लाइन तक पहुँचते हैं। परिवार के लोग ओणम मनाने के लिए एक जगह इकट्ठा होते हैं। ओणम त्योहार मेरे पसंदीदा त्योहारों में से एक है।

हिंदी कैसे मुझे प्रभावित करती है



मेरा नाम अनिका आनंद है। मैं १४ वर्ष की हूँ तथा नौवीं कक्षा में पढ़ती हूँ। मैं मध्यमा-३ की छात्रा हूँ। मुझे वॉलीबॉल खेलना, खाना पकाना और परिवार एवं दोस्तों के साथ समय

गुजारना अच्छा लगता है।

मेरे विचार से हिंदी केवल एक भाषा ही नहीं, एक भावना है। विश्व में ६० करोड़ लोग हिंदी बोलते हैं। ये लोग हिंदी के माध्यम से एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। उनमें से एक मैं भी हूँ। हिंदी मुझे, मेरी जड़ों, संस्कृति और परिवार से जोड़ती है। हिंदी के कारण मैं अपने माता-पिता, भाई-बहन और बाकी रिश्तेदारों से वार्तालाप कर सकती हूँ। हिंदी में बात करने से मैं उनकी कहानी और अनुभव समझ सकती हूँ। उनके अनुभव और कहानी से मैं बहुत चीजें सीख सकती हूँ। इसके अतिरिक्त हिंदी के कारण मैं अपने त्योहारों में ज्यादा शामिल हो सकती हूँ। हिंदी के कारण मैं गीत-संगीत भी सुनकर उनका आनंद ले सकती हूँ। मैं आजकल हिंदी चलचित्र देखकर उसकी कहानी समझ पाती हूँ। कुल मिलाकर कह सकते हैं की हिंदी के कारण मैं अपनी संस्कृति को समझ सकती हूँ और अपने लोगों के साथ जुड़े रह सकती हूँ। भविष्य में भी हिंदी मुझे बहुत तरीकों से प्रभावित करेगी। भारत की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है जिसके कारण हिंदी बोलने वाले लोगों की संख्या भी विश्व भर में बढ़ रही है। हिंदी का ज्ञान होने के कारण मैं इस विशाल समाज से जुड़ पाऊँगी। मैं इन लोगों के साथ आसानी से घुल मिलकर रह सकती हूँ। निष्कर्ष में, हिंदी मेरे भविष्य को प्रभावित करती है क्योंकि यह मुझे एक विशाल समाज का हिस्सा बनाती है। मेरे लिए, हिंदी सिर्फ एक भाषा ही नहीं है, बल्कि यह मेरी पहचान है जो मेरे जीवन को हर तरह से प्रभावित करती है।

हिंदी भाषा कैसे बनी?



मेरा नाम अनय आनंद है। मैं दस वर्ष का हूँ तथा चौथी कक्षा में पढ़ता हूँ। मैं हिंदी यू.एस.ए में मध्यमा-३ का छात्र हूँ। मुझे क्रिकेट तथा फुटबॉल खेलना अच्छा लगता है।

क्या आपने कभी सोचा है कि हिंदी एक भाषा कैसे बनी? अगर आपने नहीं सोचा तो चलिए मैं बताता हूँ। इस लेख में आप जानेंगे कि हिंदी किन भाषाओं के समान है और हिंदी को एक महान भाषा बनाने में किन लोगों का योगदान है। तो फिर तैयार हो जाइए एक जानकारीपूर्ण लेख के लिए।

हिंदी भाषा, एक प्राचीन भाषा संस्कृत पर आधारित है। हिंदी के बहुत सारे शब्द संस्कृत से लिए गए हैं। बहुत सारी भाषाएँ, जैसे कि गुजराती, मराठी, राजस्थानी, हरियाणवी, आदि हिंदी के समान हैं। हिंदी को एक सुंदर और प्रसिद्ध भाषा बनाने में बहुत बड़ा योगदान व्याकरणकर्ता, लेखक, कवि, नाटककार, साहित्यकार और हिंदी विद्यालयों का है। आज हिंदी एक बहुत प्रचलित एवं प्रसिद्ध भाषा है। हिंदी विश्व में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, जिसे लगभग ६० करोड़ लोग बोलते हैं। मुझे आशा है कि हिंदी इसी तरह प्रसिद्ध होती रहे और लोकप्रियता की तरफ अग्रसर रहे।

अच्छा विद्यार्थी



मेरा नाम शिवम चौधरी है, और मैं हिन्दी यू.एस.ए में मध्यमा-३ का छात्र हूँ। मुझे बास्केटबॉल, फुटबॉल खेलना और फिल्में देखना अच्छा लगता है। गणित मेरा पसंदीदा विषय है, और मुझे पुस्तकें पढ़ना भी अच्छा लगता है।

मेरी सबसे यादगार और मजेदार यादें



कनिष्का मनवानी

पाँचवीं कक्षा में जब मैं मध्यमा-१ में पहुँची, वह वर्ष मेरे लिए बहुत खास था। वहाँ मुझे अपनी पाठशाला की दो पुरानी सहेलियाँ फिर से मिलीं। हम तीनों ने मिलकर एक मजबूत तिकड़ी बना ली थी। हम साथ में हँसते थे, एक-दूसरे की मदद करते थे और कक्षा को और भी मजेदार बना देते थे। उसी वर्ष मेरी अध्यापिका ने मुझे और मेरी सबसे अच्छी दोस्त को हिंदी महोत्सव में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। शुरुआत में मैं घबरा रही थी। मुझे नहीं पता था कि मैं अच्छा कर पाऊँगी या नहीं। लेकिन हमने हिम्मत से देर रात तक प्रैक्टिस, बार-बार रिहर्सल और पैरों में दर्द होने तक नृत्य का प्रयास किया। हम थक जाते थे, लेकिन हार नहीं मानते थे। प्रतियोगिता में जब हमने दूसरा स्थान जीता तो मुझे बेहद खुशी हुई। वह सिर्फ एक इनाम नहीं था, बल्कि मेरी मेहनत और आत्मविश्वास की जीत थी।

छठी कक्षा में मैं मध्यमा-२ में गई। उस वर्ष भी मैंने कई नए दोस्त बनाए। हमारी अध्यापिका जब भी हम सही जवाब देते थे तो चॉकलेट या टॉफी देती थीं। इससे हम और ज़्यादा ध्यान देने लगे और कक्षा का माहौल हमेशा उत्साह से भरा रहता था।

अब सातवीं कक्षा में मैं मध्यमा-३ में हूँ। सब कुछ अच्छा चल रहा है। जब मैं अपनी आठ वर्ष की उम्र को याद करती हूँ — भारी किताबें, उलझन भरे अक्षर और थके हुए हाथ — तो मुझे यकीन नहीं होता कि मैं कितनी आगे बढ़ चुकी हूँ।

मैं हिन्दी यू.एस.ए की कक्षा के एक रोचक दिन के बारे में बताना चाहता हूँ। मेरे पिताजी मुझे गाड़ी से हिंदी पाठशाला लेकर जाते हैं। अधिकतर दिन, किसी कारण से हम समय पर नहीं पहुँच पाते थे, लेकिन उस दिन हम समय पर पहुँचे थे। जब मैं अपनी कक्षा में पहुँचा, मेरे सभी सहपाठी आ चुके थे। मैं अपने दोस्तों के पास बैठ गया। उसके बाद हम सब ने ध्यान लगाकर प्रार्थना की। प्रार्थना के बाद हमारी अध्यापिका ने हम सब की उपस्थिति ली और हमारा गृहकार्य जाँचा। फिर हमारी अध्यापिका ने सभी को बोर्ड पर लिखा हुआ कॉपी में लिखने को कहा और हमें अच्छे से समझाया। मेरे कुछ दोस्त कक्षा में बार-बार बहुत बातें कर रहे थे, इसलिए मेरी शिक्षिका ने उनको अलग-अलग जगह पर बैठा दिया। मैं कक्षा में ध्यान लगाकर पढ़ रहा था इसलिए मेरी अध्यापिका ने कहा कि मैं आज कक्षा में सबसे 'अच्छा विद्यार्थी' हूँ, यह सुनकर मुझे बहुत अच्छा लगा। फिर मैंने समय देखा और मुझे पता चला कि कक्षा समाप्त होने वाली है, तब अध्यापिका ने कहा कि आज की कक्षा समाप्त हो गई है और अगली बार से जो भी कक्षा में सबसे अच्छा व्यवहार करेगा, ध्यान लगाकर पढ़ाई करेगा, उसे उस दिन कक्षा का सबसे 'अच्छा विद्यार्थी' घोषित किया जायेगा। सभी विद्यार्थी बहुत खुश हुए और सभी ने एक-दूसरे को शुभ रात्रि कहने के बाद घर के लिए प्रस्थान किया।





Products Offered

- Mutual Funds
- IRA, SEPIRA, SIMPLE IRA, ROTH IRA
- 529 College Savings Plans
- 401k Plans
- Life Insurance
- Long term Care (LTC) Insurance
- Annuities

VIJAY SINGHAL
732-668-6071

Transamerica Financial Advisors, Inc. (TFA), Member FINRA, MSRB, SIPC and federally Registered Investment Advisor, offers securities and Investment Advisory Services. World Financial Group Insurance Agency, LLC (WFGIA), offers insurance products. WFGIA and TFA are affiliated companies. 3553320-0524

बूझो तो जानें?

हिन्दी यू.एस.ए. द्वारा छोटे बच्चों (कनिष्ठा और प्रथमा स्तर) की रचनात्मकता और उनके सरल हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करने के लिए किस पत्रिका का संपादन शुरू किया गया था?

(क) कर्मभूमि (ख) इंद्रधनुष (ग) बाल भारती (घ) बाल जगत



उत्तर पृष्ठ १७ पर देखें

नया कदम, नई पहचान

अपनी रजत जयंती (25th Anniversary) के गौरवशाली वर्ष में, हिन्दी यू.एस.ए. ने शारीरिक विकास और टीम भावना को बढ़ावा देने के लिए पहली बार किस नए कार्यक्रम का सफल आयोजन किया?

(क) योग दिवस (ख) खेल दिवस (ग) बाल मेला (घ) वृक्षारोपण दिवस



उत्तर पृष्ठ १५ पर देखें

हिंदी यू.एस.ए के २५ वर्ष

भाषा, संस्कृति और पहचान का उत्सव



नमस्ते! मेरा नाम प्रशांत बंसल है। मैं मोंटगोमरी हिन्दी पाठशाला में सहायक शिक्षक हूँ। मैं डिजिटल बैंकिंग प्रोडक्ट्स के साथ काम करता हूँ और बैंकों को उनकी डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन यात्रा में मदद करता हूँ। मेरे परिवार में मेरी पत्नी और दो बच्चे हैं। खाली समय में मुझे फिल्मों देखना और अपने बच्चों के साथ खेलना पसंद है। गर्मियों के दौरान मैं दौड़ने और तैराकी करने का आनंद लेता हूँ।

विदेश की धरती पर अपनी मातृभाषा और संस्कृति को जीवित रखना किसी भी समुदाय के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। ऐसे वातावरण में हिंदी यू.एस.ए. संस्था द्वारा अपने २५ वर्ष पूरे करना केवल एक संस्था की उपलब्धि नहीं, बल्कि हिंदी प्रेमियों के सामूहिक संकल्प और अथक प्रयासों का जीवंत प्रमाण है। यह रजत जयंती हमें पीछे मुड़कर देखने का अवसर देती है कि किस प्रकार एक छोटे से विचार ने एक विशाल आंदोलन का रूप ले लिया।

हिंदी यू.एस.ए संस्था की स्थापना केवल एक शैक्षणिक संस्था के रूप में नहीं हुई थी, बल्कि यह अपनी भाषा को बचाने, संवारने और आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने की एक भावनात्मक पहल थी। जब कुछ समर्पित हिंदी प्रेमियों ने अमेरिका में इस संस्था की नींव रखी थी, तब उनके पास संसाधन सीमित थे, पर उनका संकल्प असीम था। उनका विश्वास था कि भाषा केवल संवाद का साधन नहीं होती, वह हमारी पहचान, हमारे संस्कार और हमारी सोच का प्रतिबिंब होती है। इसी विश्वास ने हिंदी यू.एस.ए स्कूल को दिशा और ऊर्जा प्रदान की।

अमेरिका जैसे विविधतापूर्ण देश में, जहाँ दुनिया भर की भाषाएँ और संस्कृतियाँ साथ-साथ फलती-फूलती

हैं, हिंदी यू.एस.ए. पाठशाला ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। यहाँ पढ़ने वाले विद्यार्थी केवल हिंदी व्याकरण या शब्दावली नहीं सीखते, बल्कि वे रामायण, महाभारत, कबीर, तुलसी और आधुनिक हिंदी साहित्य से भी परिचित होते हैं। वे त्योहारों, लोकगीतों, नृत्य और परंपराओं के माध्यम से भारतीय संस्कृति को जीते हैं। इस प्रकार यह स्कूल, पूर्व और पश्चिम के बीच, परंपरा और आधुनिकता के बीच एक सेतु बन गया है।

हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति उसकी समावेशिता है। यह भाषा लोगों को उनके क्षेत्र, जाति, धर्म और सामाजिक पृष्ठभूमि से ऊपर उठकर एक साझा मंच प्रदान करती है। हिंदी यू.एस.ए. संस्था ने इसी भावना को अपने कार्यों का आधार बनाया। यहाँ विभिन्न देशों और संस्कृतियों से आए विद्यार्थी हिंदी के माध्यम से एक-दूसरे से जुड़ते हैं, मित्रता बनाते हैं और आपसी समझ विकसित करते हैं। यह भाषा उन्हें न केवल संवाद करना सिखाती है, बल्कि सह-अस्तित्व और सम्मान के मूल्य भी प्रदान करती है।

पिछले २५ वर्षों में हिंदी यू.एस.ए. संस्था ने हजारों विद्यार्थियों को हिंदी से जोड़ा है। अनेक ऐसे युवा हैं जिन्होंने यहीं से हिंदी की पहली वर्णमाला सीखी और आज वे आत्मविश्वास के साथ हिंदी में पढ़, लिख और

बोल सकते हैं। कई विद्यार्थी आगे चलकर हिंदी शिक्षण, लेखन और सांस्कृतिक गतिविधियों से भी जुड़े, जो इस संस्था के प्रभाव को और व्यापक बनाता है। अभिभावकों के लिए यह विद्यालय एक भरोसेमंद मंच रहा है, जहाँ वे अपने बच्चों को अपनी जड़ों से जुड़े रहने का अवसर दे सकते हैं।

यह रजत जयंती न केवल अतीत की उपलब्धियों का उत्सव है, बल्कि भविष्य के लिए एक मार्गदर्शक भी है। हिंदी यू.एस.ए. संस्था आज उन सभी नए प्रवासियों और हिंदी प्रेमियों के लिए एक प्रेरणा है जो यह सोचते हैं कि विदेश में रहते हुए भी अपनी भाषा और संस्कृति को कैसे जीवित रखा जाए। यह संस्था दिखाती है कि यदि उद्देश्य स्पष्ट हो और प्रयास ईमानदार हो तो कोई भी सपना साकार हो सकता है।

आने वाले वर्षों में हिंदी यू.एस.ए. संस्था से यह अपेक्षा है कि वह तकनीक, नवाचार और नई शिक्षण

पद्धतियों को अपनाते हुए हिंदी को और अधिक व्यापक रूप से फैलाएगा। ऑनलाइन कक्षाएँ, डिजिटल संसाधन और वैश्विक सहयोग इसके प्रभाव को और दूर तक ले जा सकते हैं। इस प्रकार यह संस्था केवल अमेरिका तक सीमित न रहकर, विश्व भर के हिंदी प्रेमियों के लिए एक प्रेरक केंद्र बन सकती है।

अंततः, हिंदी यू.एस.ए. संस्था के २५ वर्ष हमें यह याद दिलाते हैं कि भाषा केवल शब्दों का समूह नहीं, बल्कि एक जीवित विरासत होती है। इसे सहेजना, सिखाना और आगे बढ़ाना हम सभी की साझा जिम्मेदारी है। इस रजत जयंती पर हम हिंदी यू.एस.ए. स्कूल के सभी संस्थापकों, शिक्षकों, विद्यार्थियों और समर्थकों को हार्दिक बधाई देते हैं, जिन्होंने प्रेम, परिश्रम और समर्पण से हिंदी की इस लौ को विदेश की धरती पर भी उज्ज्वल बनाए रखा है।

मेरा प्यारा परिवार



नलिनी सिंह जी, प्रथमा-१ के छात्र आयांश सिंह की माताजी हैं। उन्होंने अपने पुत्र के कोमल मन और परिवार के प्रति उसके भोले अनुभवों को शब्दों में पिरोकर यह सुंदर कविता रची है। यह रचना न केवल उनके परिवार के प्रेम को दर्शाती है, बल्कि नई पीढ़ी में संस्कारों के संचार का एक जीवंत उदाहरण भी प्रस्तुत करती है।

यह मेरा परिवार, यूँ तो है यह पाँच लोगों का,
पर इन्हीं पाँचों के मिलने से बनता है ये प्यारा परिवार।
नित्य प्रातः हम सब ईश्वर के आगे शीश झुकाते हैं,
इसी विनती से दिन भर की दौड़ लगाते हैं।
मम्मी पापा को कह "बाय" हम अपने-
अपने स्कूल को निकल जाते हैं,
इसी खुशी से जब लौटकर वापस आते हैं,
सारे दिन भर का कहा-सुना सब को बताते हैं।
छोटे भाइयों के साथ जब मैं आकर खेलता हूँ,
उनकी किलकारी और गीतों की हंसी से लोट-पोट हो
जाता हूँ।

बहुत खेल कर हम सब जब थक जाते हैं,
अम्मा जी के हाथ का बना खाना खा कर
हम फिर से ताज़ा हो जाते हैं।
अब वक्त है फिर से शीश झुकाने का,
रात्रि में ईश्वर को धन्यवाद कहने का,
ना होते हम सब अगर साथ आज शीश झुकाने को,
कैसे बन पाता यह परिवार एक दूसरे का हर दम साथ
निभाने को।
ऐसा है मेरा यह छोटा सा पाँच लोगों का प्यारा परिवार।।



हिन्दी यू.एस.ए. में स्वयंसेवा क्यों ज़रूरी है?

पीयूष गोपाल अपने परिवार सहित हिन्दी यूएसए से १३ वर्षों से जुड़े हैं। पीयूष जर्सी सिटी पाठशाला में मध्यमा-३ के शिक्षक हैं और उनकी दोनों बेटियाँ हिन्दी स्नातक की उपलब्धि से अलंकृत हो चुकी हैं।

“यहाँ पर भी काम?” लैपटॉप में टिकी निगाहों को उठाकर देखा तो पाया कि एक जानकार मुझे उपहास का पात्र बनाने की चेष्टा कर रहा है! मैंने एक-आधी मुस्कान दी और फिर से लैपटॉप की स्क्रीन पर आँखें गड़ा लीं। लेकिन बात तो मुझे चुभ सी गई। कुछ बदलना ज़रूरी था। ऑफिस का काम ऑफिस तक सीमित रखने की ज़रूरत थी।

आज मुझे यह कहने में अत्यंत गौरव होता है कि मैं हिन्दी यू.एस.ए. में एक दशक से एक स्वयंसेवी शिक्षक के रूप में काम कर रहा हूँ। अगर उस दिन जर्सी सिटी के स्कूल में मेरे जानकार ने मुझ पर वह अट्टहास नहीं किया होता तो मुझे आज मुझे यह सुखद अनुभूति नहीं हुई होती। मेरी बड़ी बेटी उस समय प्रथमा दो में पढ़ती थी और मैं उसे जर्सी सिटी की हिन्दी यू.एस.ए. पाठशाला में ले जाया करता था। जब वह कक्षा में होती तो मैं ऑडिटोरियम में या तो लैपटॉप पर या फ़ोन कॉल पर। मेरे लिये वे ९० मिनट काम निपटाने का ज़रिया थे। पर समय रहते सही विचार आया और अगले सत्र में मैंने हिन्दी पढ़ाने के लिए अपना हाथ उठा दिया। और शुरू हुई एक स्वयंसेवी शिक्षक की अविस्मरणीय यात्रा। इस सुखद अनुभव ने मुझे विश्वास दिला दिया है कि मेरा और मेरे सहयोगियों का योगदान कितना महत्वपूर्ण है:

१. हिन्दी भाषा हमारी सांस्कृतिक धरोहर है। एक क्षेत्र की नहीं, एक देश की नहीं, पूरी भारतीय सभ्यता की पहचान है। अगर हमारी अगली पीढ़ी इससे नहीं सीखेगी तो क्या

वह मात्र बॉलीवुड चलचित्र और गानों के नाम पे अपनी पहचान कायम रखने में सफल रह पाएगी? क्या हमारे बच्चों को अमेरिकन बॉर्न कन्फ्यूज्ड देसी (ए.बी.सी.डी.) का अपमान निरंतर झेलना पड़ेगा? हिन्दी यू.एस.ए. एक समग्र शिक्षण पद्धति का उपयोग करती है जिसमें भाषा के द्वारा संस्कृति से अवगत करने का निरंतर प्रयास रहता है। बच्चे हिन्दी कविता प्रतियोगिता और महोत्सव में भी हिस्सा लेते हैं। इन कार्यक्रमों से उनका आत्म विश्वास बहुत बढ़ता है और जब वे अपनी कॉलेज की यात्रा शुरू करते हैं तो अपना सिक्का जमाने में समय ज़्यादा समय नहीं लगाते। और सबसे अच्छी बात - वे अपनी भारतीयता को बहुत गौरवान्वित होकर पहनते हैं। तो क्या अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की संरचना करने में और हमारी सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण करने में, हम हमारा योगदान नहीं दे सकते?

२. हाँ, हम भारतीय, परिस्थिति के अनुकूल कहीं भी ढल जाते हैं, सबसे हिल मिल जाते हैं। यहाँ परिस्थितियाँ ऐसी हैं कि हमारे इण्डियन अमेरिकन बच्चों को हिन्दी सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने का ज़्यादा अभ्यास नहीं हो पाता है। परंतु वास्तव में, सच यह भी है कि हम अभिभावक भी अंग्रेज़ी में ही वार्तालाप करने लगते हैं और हिन्दी एक पुरानी याद बनकर रह जाती है। और जब बच्चे भारत जाते हैं या उनके दादा-दादी, नाना नानी यू.एस.ए. आते हैं, तो आपस की बातचीत बहुत अप्रभावी हो जाती है। मैंने कितने बड़े-बुजुर्गों कहते सुना है कि

कम्युनिकेशन बैरियर उनके और बच्चों के बीच में एक प्रकार की दूरी बना देती है। इसलिए क्या यह अनिवार्य नहीं है हम बच्चों को हिंदी सिखाने की कमान खुद ही सम्हालें, और अपने ऊपर और नीचे की पीढ़ी को जोड़ने का महत्वपूर्ण कर्तव्य निभायें?

३. इस स्वयंसेवा के कारण मेरा बहुत व्यक्तिगत विकास हुआ है। यह तो सर्वविदित है कि किसी भी विषय को पढ़ाने से केवल खुद का ज्ञान ही नहीं बढ़ता है, पर मस्तिष्क का विकास भी होता है। इससे भी बड़ी बात यह है कि जब पाँच दिन की जबर्दस्त व्यस्तता के बाद ९० मिनट का शिक्षण करना पड़ता है तो आत्म-अनुशासन की कड़ी परीक्षा होती है। लेकिन कक्षा में घुसते ही, सारी थकान दूर हो जाती है; यह ज्ञात हो जाता है कि हम सब एक अत्यंत परिणामी यात्रा की ओर अग्रसर हैं। यह

सोचते ही एक संतुष्टि की भावना होती है और हम अपने परिजनों के लिए एक सकारात्मक उदाहरण के रूप में दिखते हैं। इससे अच्छा आत्म-विकास और समाज सेवा का और क्या अवसर मिल सकता है?

पारुल पंखुड़ी अपनी कविता में कहती हैं - “भाषा है होंठों का दीपक, हिन्दी उसकी बाती है। बने भारतीयता का गौरव हिन्दी, आस यही ये पलती है।”

तो अंततः मैं अपने लेख का समापन इस आह्वान से करना चाहूँगा कि समाज के लिए, परिवार के लिए और खुद के लिए, हिन्दी के प्रचार और प्रसार में जुड़ें और हिन्दी यूएसए के स्वयंसेवी बनें!



a2z signs

NOTHING ACTS FASTER THAN SIGNS

We ♥ our Customers

 CHANNEL LETTERS	 EXTERIOR SIGNAGE	 PLAQUE AWARDS & TROPHIES	 MARKETING STATIONERY
 ILLUMINATED BOX	 AWNING	 CATALOGUES & BOOKLET	 POSTERS
 MONUMENT SIGNS	 INTERIOR SIGNAGE	 WIDE FORMAT PRINTING	 FLYER & BROCHURES

AND MANY MORE....

FOR MORE INFORMATION VISIT US AT

✉ a2zsign@gmail.com

☎ 732-512-9500 / 9700 ☎ 732-543-7526

📍 95 Newfield Avenue, Suite I,
Edison, NJ 08837



दो दशक: हिंदी, स्नेह और संस्कार

मैं विजयश्री राव लगभग २४ वर्षों से हिन्दी से जुड़ी हूँ और हिन्दी यू.एस.ए. में हिन्दी सिखा रही हूँ। यह कविता मेरी प्रिय सहेली और विद्यार्थी की माता अशिता शाह की स्मृति को समर्पित है।

बीस वर्षों का यह सफर, यादों का एक मेला है,
स्वयंसेवक बन खड़ी रही, पर मैं कभी अकेली न थी।
'हिन्दी यू.एस.ए.' की बगिया में, जो बीज हमने बोए थे,
वो आज दरख्त बने खड़े, जिन सपनों में हम खोये थे।
कहीं से आई बंगला की महक, कहीं दक्षिण का स्वाद था,
कोई बोला 'वणक्कम', किसी को 'सत श्री अकाल' याद
था।

मराठी, गुजराती, तेलुगु—सुरों का अद्भुत संगम था,
हर घर की अपनी बोली थी, हर बच्चा एक सरगम था।
कक्षा में जब बैठते थे, नन्हे-मुन्ने 'आर्यन' और 'ईशान',
नामों के अर्थ से अनजान, थे वो अपनी पहचान से हैरान।

'वैष्णवी' को 'वैश-नेवी' और 'चैतन्य' को 'चाई-
तन्या' पुकारते,
अपने ही सुंदर नामों को, वो विदेशी लहजे में सुधारते।
'ध्रुव' को 'डू' बना दिया, 'अनन्या' हुई 'अ-नैन-या',
मैं हँसकर उन्हें थामती, जैसे कोई प्यारी मैया।

वो पूछते, "Teacher, what does my name really
mean?"

मैं समझाती—तुम 'अटल' हो, तुम 'चेतना' हो, तुम
'नव्य' और 'नवीन'।

पर नाता सिर्फ बच्चों से नहीं, परिवारों से भी गहरा था,
हर घर की मुश्किलों और खुशियों पर, मेरा भी पहरा था।
सिर्फ 'टीचर' नहीं रही, मैं उनकी 'दीदी' और 'सखी'
बन गई,

विदेशी धरती पर अपनों की, एक ठंडी सी छाँव बन गई।

अंग्रेजी के साये में, जब हिन्दी को समझाना था,
'एप्पल' और 'सेब' के बीच, एक पुल मुझे बनाना था।
दो दशक बीत गए यूँ ही, संस्कृति की इस सेवा में,
स्नेह भरा जो स्वाद मिला, वो नहीं किसी भी मेवा में।
सिखाया इस कर्मभूमि ने, बस कर्म ही प्रधान है,
'फल की चिंता छोड़' सिखाता, गीता का ज्ञान महान है।
बिना किसी प्रतिफल की चाहत, बस दीप जलाती
जाऊँगी,

शिक्षा के इस पावन पथ पर, धर्म निभाती जाऊँगी।
आज वही बच्चे जब 'नमस्ते' कह गले लगाते हैं,
मेरी बीस साल की मेहनत का, वो फल मुझे दे जाते हैं।
विविध रंग के फूल खिले, पर माला सबकी एक है,
भाषा चाहे जो भी हो, पर भावना बड़ी नेक है।

यादों के झरोखे से

हिन्दी यू.एस.ए. द्वारा विद्यार्थियों को
अपनी जड़ों और गौरवशाली सांस्कृतिक
विरासत से जोड़ने के उद्देश्य से शुरू की
गई 'पहली भारत-यात्रा' किस वर्ष
आयोजित की गई थी?



(क) २००६ (ख) २००८ (ग) २०१० (घ) २०१२

उत्तर पृष्ठ ४७ पर देखें

सीखने का उल्लास: हमारी हिन्दी दुनिया की एक झलक

मध्यमा-१ के विद्यार्थियों द्वारा रचित लेखों का एक संग्रह, जहाँ शिक्षा, अनुभव और प्रेरणा का अद्भुत संगम है।

हिन्दी भाषा का प्रयोग कक्षा के बाहर— एडिसन पाठशाला

हमारी कक्षा के विद्यार्थियों ने हिन्दी भाषा का प्रयोग कक्षा के बाहर भी किया, जो हमारे लिए गर्व की बात है और हमें इस जानकारी से और भी प्रोत्साहन मिलता है। उन्हें इस से हिन्दी भाषा का महत्व समझ में आता है। प्रस्तुत हैं कुछ विद्यार्थियों के अनुभव उन्हीं के शब्दों में।

ध्रुव गणेश कुमार

जब मैं भारत आया, तो मैंने अपने नाना, नानी और रिश्तेदारों से हिन्दी में बात की। मेरे नाना और नानी बहुत खुश हुए और मुझे बहुत गर्व महसूस हुआ। मैं उनके साथ हिन्दी फिल्में देखने भी गया। इसके बाद हमारी बातचीत बहुत आसान हो गई। वे मेरी लेखन शैली से भी बहुत प्रभावित हुए।

रेयांश श्रीवास्तवा

जब मैं माता और पिता से बात करता हूँ तो मैं हिन्दी का प्रयोग करता हूँ। मुझे हिन्दी चलचित्र देखना पसंद हैं। जब बाजार जाता हूँ तब हिन्दी का विज्ञापन पढ़ सकता हूँ। मैं दादा-दादी मौसा-मौसी से हिन्दी में बात कर सकता हूँ। मैं

हिन्दी की पुस्तक धीरे-धीरे पढ़ सकता हूँ।

माधव वार्ष्नेय

हमें भारत जाना अच्छा लगता है। मुझे मम्मी से हिन्दी में बात करना अच्छा लगता है। मुझे गणित पसंद है, इससे हिन्दी सीखने में आसानी होती है।

मायरा श्रीवास्तवा

मैं मम्मी और पापा से हिन्दी में बात करती हूँ। जब मैं हिन्दी की पुस्तक पढ़ती हूँ, मेरा हिन्दी का ज्ञान काम आता है। मैं हिन्दी में लिख भी सकती हूँ। जब मैं भारत के कार्टून देखती हूँ तो मुझे हिन्दी आने के कारण उन्हें पढ़ सकती हूँ। मुझे सभी चीजों के नाम हिन्दी में पता हैं।

अक्षय शर्मा

मुझे याद है वह दिन जब मैंने पहली बार हिन्दी भाषा का प्रयोग कक्षा के बाहर किया। हिन्दी भाषा सीखने के पश्चात मेरे आत्मविश्वास में वृद्धि हुई। हिन्दी भाषा ने मुझे अपनी संस्कृति को समझने में सहायता की है। हिन्दी भाषा सीखने के पश्चात मुझे अपनी मातृभाषा पर गर्व होता है।



हिन्दी और हिंदी यू.एस.ए का साथ — ऑनलाइन पाठशाला

नमस्ते, इस वर्ष हम हिंदी यू.एस.ए. की स्थापना की २५वीं वर्षगांठ मना रहे हैं। मध्यमा-१ स्तर की कक्षाओं को दिए गए विषयों में से एक विषय है “हिन्दी और हिंदी यू.एस.ए का साथ: हमारा अनुभव”। मैं, इंदु श्रीवास्तव, ऑनलाइन हिंदी पाठशाला की सह-संचालिका के तौर पर ऑनलाइन पाठशाला के मध्यमा-१ स्तर से हमारे २ नन्हे विद्यार्थियों के विचार आप सबसे साझा करते हुए बहुत गर्व महसूस कर रही हूँ।

श्रेयसी गुप्ता

(पैनसिल्वेनिया): श्रेयसी लिखती हैं “हिंदी यू.एस.ए. ने मुझे और अधिक हिंदी पढ़ने और लिखने में मदद की है। पहले मुझे स्वरों को सही ढंग से लिखना नहीं आता था, लेकिन अब मैं हिंदी में जो कुछ भी पढ़ती हूँ, उसे पूरी तरह समझ सकती हूँ। धन्यवाद, हिंदी यू.एस.ए.!”

समन अग्रवाल

(कैलिफोर्निया): अपने परिजनों के साथ मिलकर समन ने सुंदर चित्रकारी और लघु कविता के द्वारा अपने विचार भेजे हैं।



हमारी विरासत, हमारा गर्व

सात समंदर पार आए, अपनी दुनिया यहाँ बसाई है,
पर मन के मंदिर में आज भी, वही देसी खुशबू छाई है।
कामयाबी के इस शिखर पर, जड़ों को हम न भूले हैं,
वही संस्कार जो माँ से पाए, आज बच्चों को हमने सौंपे हैं।



महोत्सव की तैयारी - साउथ ब्रंस्विक पाठशाला



हिहान बांदेकर

हिंदी यू.एस.ए. महोत्सव की तैयारी का अनुभव मेरे लिए बहुत खास और यादगार रहा। शुरुआत में हमने नाटक की कहानी को समझा और फिर अपने-अपने पात्रों का अभ्यास किया। हर सप्ताह अभ्यास के दौरान संवाद याद करना, और मंच संचालन करना थोड़ा कठिन लगा, लेकिन धीरे-धीरे सब आसान होता गया। इस पूरी तैयारी में हमारी

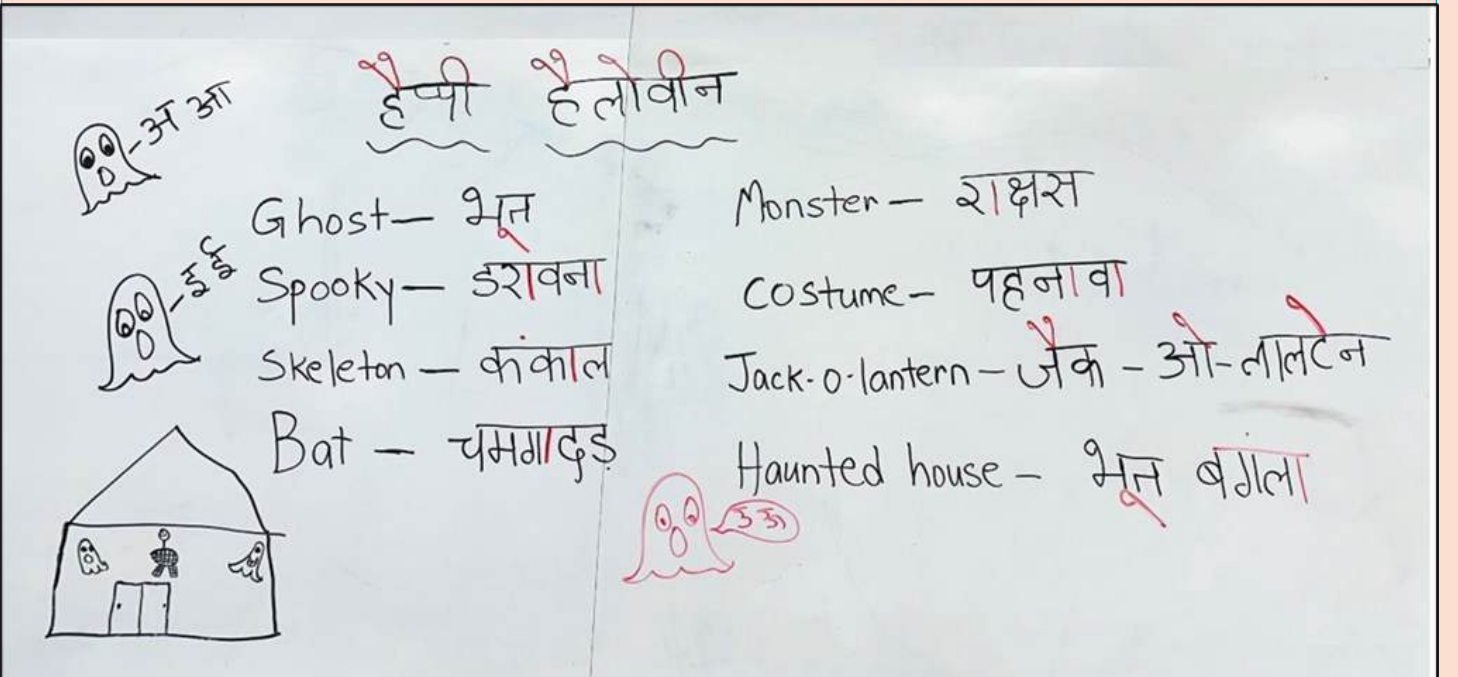
अध्यापिका का बहुत बड़ा योगदान रहा। वे हमें हर कदम पर मार्गदर्शन देती थीं और अभिनय के साथ-साथ अनुशासन, सहयोग और जिम्मेदारी का महत्व भी सिखाती थीं। इस महोत्सव की तैयारी से हमारा आत्मविश्वास बढ़ा और हमें सहयोग का महत्व समझ में आया। सभी कलाकारों ने मिलकर खूब मेहनत की, जिससे हमारा प्रदर्शन बेहतर हुआ। कुल मिलाकर यह अनुभव मेरे लिए सीखों से भरा और अविस्मरणीय रहा।

कक्षा में एक अद्भुत और प्रेरणादायक दिन! - साउथ ब्रंस्विक पाठशाला

इस वर्ष 'हैलोवीन' के दिन शुक्रवार शाम हमारी हिंदी कक्षा भी थी। स्वाभाविक रूप से बच्चों का मन पढ़ाई में लगे और वह भी हिंदी की पढ़ाई में, यह हमें अत्यंत कठिन लग रहा था; तो जो हमने किया वह आप सबसे साझा कर रही हूँ। उस दिन कक्षा में हमने एक बेहद सुखद और समृद्ध प्रयोग किया! छात्रों की ऊर्जा, जिज्ञासा और उत्साह ने पूरे सत्र को वास्तव में यादगार बना दिया। हमारी मात्रा सीखने की यात्रा के दौरान छात्रों को 'हैलोवीन' से जुड़े कई नए हिन्दी शब्दों से परिचित कराया गया — यह नियमित पाठ्यक्रम से परे एक दिलचस्प पाठ था, जिसने न केवल उनकी रुचि बढ़ाई बल्कि भाषा को मनोरंजक और अर्थपूर्ण तरीके से समझने के लिए प्रेरित भी किया। नए शब्दों को सीखने के साथ-साथ विद्यार्थियों ने मात्राओं का अभ्यास भी बहुत

ध्यान से और समझ के साथ किया। जिसने हमें सबसे अधिक प्रभावित किया वह था उनका इन नए शब्दों को अपनी पूर्व जानकारी के साथ सहजता से जोड़कर रचनात्मक, विचारशील और सुंदर वाक्य बनाने का उत्साह। जब उन्होंने सांस्कृतिक विषयों को भाषा सीखने से जोड़ा, तो उनकी कल्पनाशक्ति सचमुच निखरकर सामने आई। उन्हें शब्दों के साथ प्रयोग करते, विचार साझा करते और आत्मविश्वास के साथ खुद को व्यक्त करते हुए देखना बेहद सुखद था। ऐसे क्षण हमें याद दिलाते हैं कि हमारे छात्र/छात्राएँ कितने सक्षम, प्रतिभाशाली और नवाचारी हैं। हमें उनकी प्रगति पर अत्यंत गर्व है और हम उत्साहित हैं, उत्सुक हैं कि वे आगे और क्या नया रचेंगे!

शिक्षिकाएँ: प्रिया मेनन, साक्षी भट्टाचार्य





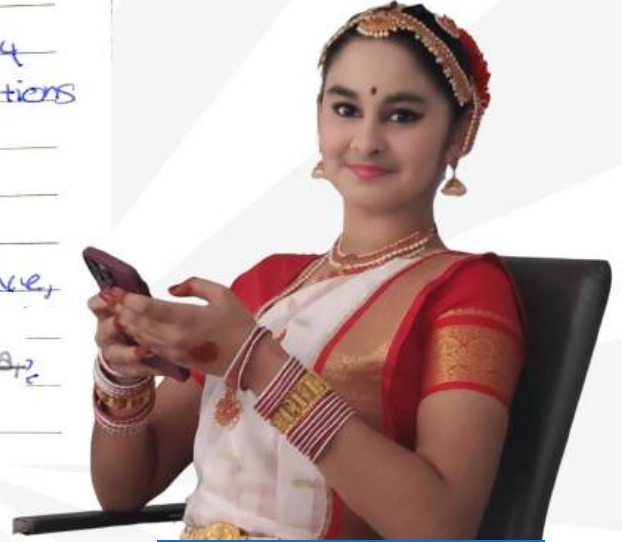
शुभकामनाएँ: उज्ज्वल भविष्य की ओर

Dear Tanjani,

We are so incredibly
proud of you, beta. Congratulations
on graduating from Hindi USA.
Brilliant job & keep it up!



Lots of love,
Pappa, Anjana,
Hoze family



तर्जनी पंडित
ऑनलाइन हिंदी पाठशाला

आर्णव रीलिया
चैरी हिल हिंदी पाठशाला



हमारे प्यारे अर्णव के लिए एक खास मैसेज!
प्रिय अर्णव,
आज हमें तुम पर बहुत गर्व महसूस हो रहा है!
हिंदीयूएसए (HindiUSA) का सफर पूरा करना
सिर्फ एक पढ़ाई नहीं थी, बल्कि अपनी संस्कृति और
जुड़ो को समझने का एक प्यारा तरीका था। तुम्हारी
मेहनत सच में रंग लाई है।
बस ऐसे ही हमेशा मुस्कुराते रहो, नई चीजें सीखते
रहो और आगे बढ़ते रहो। तुम्हारा भविष्य बहुत
सुनहरा है!
देर सारा प्यार और बधाई! 🎓 ✨
सप्रेम,
छवि, नितिन और अनन्या रीलिया

आरव गुप्ता ऑनलाइन हिंदी पाठशाला

यह हमारे लिए अत्यंत गर्व और हर्ष का क्षण है कि हमारे पुत्र आरव गुप्ता ने हिंदी यू.एस.ए. के ऑनलाइन विद्यालय में हिंदी भाषा की अपनी शैक्षिक यात्रा सफलतापूर्वक पूर्ण कर इस वर्ष स्नातक किया है। हमें उसके प्रयासों और उन सभी मूल्यों, भाषा-ज्ञान, भारत यात्रा तथा सांस्कृतिक समझ पर गर्व है जो उसने यहाँ से प्राप्त किए। हमें विश्वास है कि आरव आगे भी अपने सेवाभाव और स्वयंसेवा के माध्यम से समाज और विद्यालय से अपना जुड़ाव बनाए रखेगा।

- पल्लवी, नीरज

एवं समस्त गुप्ता परिवार!

“उठो, जागो और तब तक न रुको,
जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए।”
स्वामी विवेकानंद



प्रिय अनिषा, तुम्हारी ऑनलाइन हिंदी पाठशाला से इस सुंदर स्नातकीय उपलब्धि के सम्मान में हम, तुम्हारे माता-पिता, यह भावपूर्ण कविता समर्पण करना चाहते हैं।

लंबी यात्रा की साधना का आज हुआ सम्मान,
आपकी लगन से उज्ज्वल हुआ हर एक ज्ञान।
इस साधना ने सिखाया आपको अनुशासन का मूल्य महान,
नियमित प्रयासों से ही मिलता है सफलता का वरदान।
कठिनाइयों के क्षण भी आए, राहें हुईं दुरूह,
पर आपके धैर्य और अनुशासन ने हर बाधा को किया दूर।
इस शिक्षण के प्रति हम हृदय से आभारी हैं,
जिसने आपके व्यक्तित्व को और भी निखारा है।
आज हृदय से हम सबको है आप पर गर्व अपार,
आपकी इस उपलब्धि से हुआ सबका मन प्रसन्न और साकार।
ईश्वर से यही प्रार्थना, आप सदा प्रगति के पथ पर रहें,
ज्ञान और अनुशासन से जीवन में उजाला भरें।
इस उपलब्धि पर हार्दिक बधाई स्वीकार करें,
आपका भविष्य सदा उज्ज्वल और मंगलमय बने।

- अखिलेश, हर्षाली एवं समस्त मालवीय परिवार!



अनिषा मालवीय
ऑनलाइन हिंदी पाठशाला

गर्व की अनुभूति, सात साल की साधना, आज कामयाबी की कहानी कह रही है। आज हमारा हृदय गर्व और कृतज्ञता से भरा है। आशीता ने सात वर्षों की निरंतर मेहनत और समर्पण के साथ हिंदी स्कूल में अध्ययन किया और इस वर्ष वह स्नातक हो रही हैं। इस सुंदर यात्रा के लिए हम आदरणीय शिक्षकों और पूरे हिंदी यू.एस.ए. समुदाय का दिल से धन्यवाद करते हैं। आपने आशीता को न केवल भाषा सिखाई, बल्कि उसे हमारी समृद्ध संस्कृति, परंपराओं और मूल्यों से जोड़े रखा। यहाँ से मिली प्रेरणा ने ही आशीता को अपने अंतिम वर्ष की प्रतियोगिता के लिए स्वलिखित हिंदी कविता रचने के लिए प्रेरित किया। आशीता की दादी, नाना-नानी को उस पर बहुत गर्व हैं। आप सभी के मार्गदर्शन, धैर्य और प्रेम के बिना यह संभव नहीं था। हिंदी यू.एस.ए. की मेहनत, आने वाली पीढ़ियों को उनकी जड़ों से जोड़ने का एक अमूल्य कार्य कर रही है। हम हिंदी यू.एस.ए. के हमेशा आभारी रहेंगे।

आशीता नलावड़े
चैरी हिल हिंदी पाठशाला



हिंदी यू.एस.ए. साउथ ब्रुंसविक पाठशाला के
सत्र २०२५-२६ के स्नातकों को हार्दिक शुभकामनाएँ!



प्रथम पंक्ति (बाएँ से दाएँ) - अनवेषा त्रिवेदी, मानुषी नाकराणी, अवनि शर्मा, स्तुति वर्मा

द्वितीय पंक्ति (बाएँ से दाएँ) - कविश गुप्ता, ईथन पेरेरा, अथर्व इटगि

अध्यापिकाएँ - जुही चतुर्वेदी, सुचेता नायक पाठशाला संचालक - उमेश एवं शिल्पा महाजन

प्यारी त्विशा,

आज यह लिखते हुए आँखें नम हैं और दिल गर्व से भरा हुआ है। यह सफर कितना लंबा था — वो पहला दिन जब तुमने हिंदी की पहली कक्षा में कदम रखा था, और आज तुम ९ स्तरों की इस शानदार यात्रा को पूरा करके यहाँ खड़ी हो। हर पाठ, हर परीक्षा, हर चुनौती — तुमने सब कुछ अपनी मेहनत और लगन से पार लिया। हमें विशेष रूप से गर्व है कि तुमने हिंदी कविता प्रतियोगिता में जीत हासिल की! तुम्हारे शब्दों में जो भावना थी, जो लय थी, जो गहराई थी — उसने सबका दिल जीत लिया। यह जीत सिर्फ एक ट्रॉफी नहीं, बल्कि तुम्हारी हिंदी के प्रति सच्ची लगन का प्रमाण है। दिसंबर २०२५ में तुमने अपनी HindiUSA टीम के साथ भारत की धरती पर कदम रखा - पौराणिक स्थलों को निहारा, भारतीय संस्कृति को करीब से जिया और महसूस किया। वह यात्रा कितनी यादगार रही होगी! आगे की राह और भी उज्ज्वल हो, और हिंदी की यह रोशनी तुम्हारे जीवन में हमेशा जगमगाती रहे। तुम्हारी यह उपलब्धि सिर्फ तुम्हारी नहीं— यह पूरे परिवार की खुशी है, पूरी HindiUSA टीम की खुशी है!



त्विशा शर्मा
ऑनलाइन हिंदी पाठशाला

बहुत सारा प्यार और ढेर सारी शुभकामनाएँ! - माँ और पापा (प्रीति एवं नवीन शर्मा)



हेली रचना झवेरी
चैरी हिल हिंदी पाठशाला

देखते ही देखते नन्हे कदम बड़े हो गए। हमारी प्यारी हेली को ग्रेजुएशन की बधाई! तुम्हारी इस शानदार उपलब्धि पर हमें बहुत गर्व है! हम चैरी हिल हिंदी स्कूल के शिक्षकों और स्वयंसेवकों के बहुत आभारी हैं हमारे बच्चों को हिंदी भाषा और संस्कृति से जोड़ने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। आपके अमूल्य मार्गदर्शन और कीमती समय के लिए हम हमेशा आभारी रहेंगे।



महेक, रचना, नेहल और झवेरी परिवार

ज़रा सोचिए तो!

'कर्मभूमि' पत्रिका का वह कौन सा विशेष लेख है, जिसमें प्रत्येक पाठशाला के जन्म, उनके विकास की कहानी, चुनौतियों और उनकी सफलताओं को विस्तार से साझा किया गया है?

(क) हिन्दी यू.एस.ए. का गौरवशाली इतिहास

(ख) नींव से शिखर तक

(ग) हमारी पाठशाला, हमारा अभिमान

(घ) सफलता की सीढ़ियाँ



उत्तर पृष्ठ ६० पर देखें

Shilpa Nanavati

REALTOR®

Every home has a story—and every move is a new chapter.

With **extensive** experience in Central Jersey, I make the process smooth, strategic, and successful.



LOCAL EXPERTISE
Deep knowledge of the Central Jersey market



EXPERT NEGOTIATION
Getting you the best possible deal



STRATEGIC MARKETING
Maximum exposure for your home



PERSONALIZED SERVICE
Dedicated to your goals every step of the way



Cell: **908-309-8870**



Work: **732-297-1100**



Web: **ShilpaSellsNJ.com**



Email: **ShilpaSellsNJ@gmail.com**



RE/MAX
DIAMOND, REALTORS®

GUIDING CENTRAL JERSEY

Home—One Family at a Time



SCAN THE CODE
TO LEARN MORE ABOUT
ACT AND MATH
TUTORING SERVICES

SUNITA MEHROTRA

FOUNDER/LEAD TUTOR

Sunita Learning Center

BUILDING CONFIDENCE, ONE EQUATION AT A TIME

- * Sunita Mehrotra learning center is available for ONLINE Mathematics
- * Teaches Pre-Algebra, Algebra, Trigonometry, Calculus, AP Calculus
- * Does strategies training for ACT/SAT and teach ELA and Science

Email: smartsteptutoring@gmail.com OR sunitalearning.c@gmail.com

Call: [412-722-6871](tel:412-722-6871)

Visit: <https://www.sunitalearningcenter.com/>



25 वर्षों की सफलता पर बधाई! Years of Excellence!

Your dedication, growth & contribution to the community are truly inspiring. Wishing you continued success & many more milestones ahead!

More Than Accounting We Power Your Growth

Led by

Ajay Kumar

CPA, CVA, MBA—Series
7 & 66 licensed

Why Choose Us ?

Trusted Expertise
Personalized Solutions
Accurate & Timely Service
Dedicated to Your Success

Get Started Today!

Smart Finances.
Stronger Business.
Better Future.



CALL US
(908) 888-8901

www.saicpaservices.com

OFFICE LOCATION

1 AUER CT. EAST BRUNSWICK, NJ 08816 | 5 VILLA FARMS CIR. MONROE TWP, NJ 08831

✉ support@saicpaservices.com

OUR SERVICES

Financial Statements,
Forecasts & Projections

Income Tax
(Individual & Business)

Business Valuation

Tax Compliance &
Year-End Planning

Sales & Payroll Tax

Business Model
Development
& Implementation

Payroll Services

Virtual CFO Services

IRS Representation
& Problem Resolution

Business Start-up & Setup

Accounting & Bookkeeping

Non-Profit Taxes &
501(c)(3) Approval

Internal Audit





501(c)(3) Non-Profit Organization
Tax ID : 22-3129398

95 Newfield Ave. Suite I
Edison, NJ 08837

908-296-5844 : (P)

732-283-2070 : (F)

www.ibausa.org : (W)



**INDIAN BUSINESS
ASSOCIATION INC.**

Congratulates

on its



**PLEASE JOIN
INDIA DAY PARADE
9th August, 2026**

on OAK TREE ROAD, EDISON

ibausa.org

FOR MORE INFO. PLEASE CONTACT

DHIREN AMIN
President

CHANDRAKANT PATEL
Chairman

Dr. RAJ PANDYA
Advisory Board Chair

MAHESH SHAH
Vice Chairman

HARSHAD PATEL
Exe. Vice President

DILIP PATEL
Vice President

TP SRINIVASA RAO
Vice President

BHAGVAT PARMAR
Vice President

NIRAV VORA
Vice President

PRAFUL PATEL
General Secretary

SHARAD AGRAWAL
Secretary